

मुक्ति-बोध

प्रकाशक

पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली

ਜੈਨੇਰ ਕੁਮਾਰ

ਸ਼ਿਕਾਰ

© वैनेश्र कुमार

प्रकाशक : पूर्वोदय प्रकाशन
८ मैदानी सुभाष मार्ग, रिस्ती-६

प्रथम संस्करण : १९६२

मूल्य : आठ रुपये पचास पैसे

मुद्रक : राष्ट्र भारतीय प्रेस, रिस्ती-६

अवती को

यह एक आकाशवाणी के निमित्त से बनी
 है। एक विवाद एक परिच्छेद लिखा जाता तो
 सोचना को प्रसारित दिया जाता। यह एक एक
 हफ्ते चला। इस एक ओर उस माध्यम की मर्यादा
 का प्रभाव कृति पर एक बंध होते तो विस्मय की
 बात नहीं है। नाल्पालिक राजनीति का लक्ष्य
 करने प्रतीत होनेवाले प्रसंगे माशक्य या नाकच्छा
 एक भा का बंद जाने दिग्ग गण्य से। पर मुद्रण में
 मूल लक्ष्य ही अभिगता जा रहा है। करने से भाव-
 -पूषकता नहीं कि नाल्पालीन राजकारण के सिद्ध
 का कोई मातृय लोचन अभिगता कृति का उद्देश्य
 नहीं है।

- जेनेउरुगा
 १७/११/६५

यह एक आकाशवाणी के निमित्त से नहीं
 है। एक रिवाद एक परिच्छेद लिखा जाता और
 सोचना को प्रसारित किया जाता। यह एक इस
 हफ्ते चला। इस कम और उस आकाशवाणी मन्दि
 का प्रभाव करते हैं। यह एक ही सिद्धे तो विस्मय की
 बात नहीं है। आकाशवाणी राजनीति का एक
 नए प्रतीक होनेवाले प्रसंग, माशय्य या मातृव्य
 एक या का कर जाने दिनें गए थे। यह मुद्रा में
 मूल रूप ही मन्दिमा जा रहा है। नए ही आव-
 श्यता नहीं कि आकाशवाणी के सिद्धे
 का कोई मातृव्य मोक्ष मन्दि हफ्ते का एक
 नहीं है।

- जे. उ. गुणा
 १९६९

एक

इधर कुछ दिनों से ठीक नींद नहीं आती है। रात तीसरे पहर टूट जाती है और मन मटकने लगता है। सहसा कोई निश्वास नहीं करेगा। कारण मेरे नाम के साथ बुबिया की संगति कोई जोड़ नहीं पाता है। पर इस सम्बन्ध बरस की बच में स्वीकार करना चाहिए कि मुझमें बुबिया लग रही है। मेरे जैसे के लिए सोचना और मिचलना बकरी हुमा जा रहा है !

रोज की तरह मैं चुपचाप उठा और बाहर आ गया। चाँप इस किनारे आने लगा था। चाँदनी की और हल्की सुहावनी सर्द। पन्द्रह-बीस मिनिट छत पर धूमता रहा हुमा। पर मन एकत्र हो पाया हो सो नहीं। रोज तो लौटकर फिर बिस्तर में हो जाया करता था लेकिन आज यहाँ बराबर के कमरे में मेज़ पर आ बैठा हूँ और सिपना आहूँता हूँ। यानी पकड़ लेना चाहता हूँ कि बात है तो क्या है।

आरत नहीं है सिपने की या सोचने की। कर डालने वाला आन्वी समझ पाता हूँ। सचमुच मानता भी रहा हूँ कि सोचना बचना है। बाहर चुनौती है, बचकर अन्दर रमना भरमना ही सोच में घिरना है। इस तरह यद्यपि स्टडी कम मेरे यहाँ भी है और यहाँ किताबों की अस आरिया भी मिल जायेंगी लेकिन स्टडी नहीं मेरा काम एडमिनिस्ट्रेशन रहा है। सगता रहा है कि समस्या अन्दर की नहीं है सदा वह बाहर है। कभी वह सोचने की नहीं हमेंता करने की है। और बिचार

एक

इसपर कुछ दिनों से ठीक नींद नहीं आती है। उठ तीसरे पहर टूट जाती है और मन घटकने लगता है। सहसा कोई विस्वास नहीं करेगा। कारखाने, मेरे नाम के साथ बुविधा की संगति कोई जोड़ नहीं पाता है। पर इस सम्बन्ध बरस की वय में स्वीकार करना चाहिए कि मुझमें बुविधा उभर रही है। मेरे जैसे के लिए सोचना और सिखना जरूरी हुआ जा रहा है।

रोज की तरह मैं चुपचाप जठर धीरे बाहर आ गया। बाद इस किनारे आने सया था। आखिरी की और हल्की मुहावनी सर्दी। पन्द्रह बीस मिनट छत पर घूमता रहा हुआ। पर मन एकत्र हो पाया हो सो नहीं। रोज तो सौटकर फिर विस्तर में हो जाया करता था लेकिन आज यहाँ बरबर के कमरे में मेज़ पर आ बैठा हूँ और लिखना चाहता हूँ। यानी पकड़ लेना चाहता हूँ कि बात है तो क्या है।

घाबरत नहीं है सिखने की या सोचने की। कर डालने वाला घाबरती सम्भ्रम आता हूँ। सम्भ्रम मानता भी रहा हूँ कि सोचना बचना है। बाहर चुनौती है, बचकर अन्दर रमना भरमना ही सोच में चिरना है। इन तरह यद्यपि स्टडी कम मेरे यहाँ भी है और वहाँ किताबों की कम मारियाँ भी मिल जायेंगी लेकिन स्टडी नहीं मेरा काम एडमिनिस्ट्रेशन रहा है। समता रहा है कि समस्या अन्दर की नहीं है सवा बह बाहर है। कभी बह सोचने की नहीं हमरा करने की है। और विचार

से बास्ता खाली घाबरी का होता है। घबरी घाबरी बाहर इंसान से भिपटता है।

घबरी मुनो—मुनते हो ?

मुनने में कुछ डेर हुई होगी। कुर्सी पीछे की घोर मोड़ी तो वहाँ भीमती थीं। कुछ व्यव घोर भिगित। मैंने ऐसे देखा कि नहीं। वह बोली— 'क्यों थी यह क्या है। —क्या बात है ?'

मुझे उस मुन पर की बिस्ता एकदम दुरी नहीं लगी। सचमुच इधर पत्नीत्व की संस्था में मुझे अर्थ प्रतीत होने लगा है। पत्नी बच्चों की माता हो सकती है पर जमर घाने पर उसकी महती बल्लसता पति का ही प्राप्त होती है। अर्थात् विवाह का सार बय की नवीनता में नहीं मिलता अब अविद्यता में मिल रहा है। यह भिन्न ही हुआ, पर फिर भी जाने क्यों मुझ में रोप हो गया।

कहा 'क्यों कुछ तो नहीं।'

'कहते हो बात कुछ नहीं है। समझते होने कि रात अचाने जो बाहर छत पर जाकर तुम चार रोज से डेर-डेर तक झूमते रहा करते हो सो उसका मुझे कुछ पता नहीं रहता है। रोज और बिस्तर में घापी जाते थे। घात्र यह बत्ती बलाकर यहाँ घापी बैठे हो। अमी साइडे तीन भी नहीं बचा होगा। मैं कहती हूँ कि अब सड़के के बारे में सोच करते थे क्या होगा। उसका भी तो कुछ अपना भाग्य है, भोगेगा। हम जब उस बारे में कुछ कर नहीं सकते तो नहीं कर सकते। तुम उसको लेकर अब तक हलकान हुए आओगे। मैंने पाम क्या माँ का हिस्सा नहीं है। पर स्पेस जाने से तो कुछ नहीं बनता है।

'बहु सब नहीं है मई—तुम जाओ छोड़ो।

धीर तुम ?

मैं कुछ सिगूँगा।'

'इत साइडे तीन बजे उठकर निघने को ऐसा क्या हो गया है यही तो मैं पूछती हूँ। इधर तुम मुझ से बाहर हुए जा रहे हो।'

मैं कुछ कहने की सोचूँ कि वह बढ़कर पास धाई, मेरे कंधे पर हाथ रखा फिर मोप में से उठा कर मेरा एक हाथ अपने दोनों हाथों में दाब लिया पूछा—

“सच बताओ क्या बात है ?

मैं उस समय कुछ भी कर सकता था। बसका बैकर उस पूछने वाली को बाहर निकाल सकता था। उचित खायब वही होता। लेकिन मैं उस समय कुर्सी से उठा अपने बाहिने हाथ को मुक्त किया और उससे पत्नी के बाएं गाल पर बीमे-बीमे टहोके बैठे हुए कहा—

“कुछ नहीं तुम आकर सोचो—कैसी अच्छी हो।

पत्नी ने तुमक कर कहा—“कैसी बेकार हूँ—यही न कहना चाहते हो। अच्छी बात है तो मैं बत्ती जालूँ ?

“हां मैं जरा खुश अपने से सुमझना चाहता था।

पत्नी उत्तर में मनबुझ सी लड़ी रह गई। उस समय समा कि मैं एकदम इस विनारे हूँ बीच में त्रिपट रिक्तता है और कोई कुछ नहीं कर सकता है। यह बीच का घसगसन उठाए न उठ रहा था। सभी पत्नी ने प्रयासपूर्वक कहा—“तुमो पहले तुम मुझसे पूछ लिया करते थे। अब तुमने मिनिस्ट्री का इंकार किया तो कहा तक नहीं।

“तुम्हें किसने कहा ?

“बात झूठ है ?

“हां भूँ ही समझो। स्वीकार हो सके उसी का इंकार मनसब रखता है। मरा मन तुम जानती हो उमड़ गया है। मिनिस्ट्री क्या किसी कुछ के लिए वहां जबह नहीं है। तुम उसमें क्या करती ?

“यही तुमसे पूछने धाई हू कि मैं अब तुम्हारे लिए किसी तरह का कुछ भी करने मायक नहीं रह गई हूँ न। ठीक है—तो मैं जाती हूँ।

कहकर वह टहरी नहीं बत्ती गई और मानूम हुआ कि मैंने ही उन्हें हटा दिया है।

होपा छोड़िये और मैं फिर निश्चित कुर्सी पर हो बैठा। पर नहीं

मुम्मे नहीं बन सका। कुछ लिखा ही नहीं गया। एकदम समझ में नहीं आता है कि मेरे साथ यह क्या बीत रहा है। यह जो कामकाज ने किया ठीक ही था। ऊँचे सोप राज-मह पर आकर बैठें तो बिल पर बाने क्यों न नीचे समझे जाने लगेंगे। इसलिये मुनासिब था कि कुछ ऊँचे नेठा बाहर बनता के बीच आएँ और मामूली बन जाएँ। कांग्रेस ने इसे माना और आशा की कि ऐसे उलकी साथ और शक्ति बढ़ेंगी। क्या मैंने भी कांग्रेस की आशा में सोचा था साथ और शक्ति बढ़ाने की आशा में? यह भी बहुरी दुविधा मेरे मन में है और मैं मानना चाहता हूँ कि ऐसा नहीं है। पर सहारा नहीं मिल रहा है और जहाँ से प्रेरणा आती है प्राणों के उस स्तर पर सब गड़बड़ हो गया समझ में है। मैं कुछ लिख नहीं सका। कुर्सी को मोड़कर बिड़की के बाहर चुपचाप आँसू कोने बैठ रहा। जैसे उस घुम्पता में से सरय बुलैया। धमर तो कोसाहल है कुछ तुन नहीं मिलता। पर समय बीतता रहा प्रमात छिड़ने को या क्या और मैं अनुपलब्ध बना रहा। तभी मामूम हुआ कि मैं बापस बिस्तर में पहुँच सकता हूँ और पूरी लाँचकर निकट हो सकता हूँ। जना बही उपलब्धि होगी।

बिस्तर पर पहुँचकर कहा—

“तुमो सो गई?”

‘नहीं तो—

“भई तुम तो नापक हो गई।

‘क्या कर लूमी मैं नापक होके किसी का?

“देगो फिर बही। अच्छा अब मुझे आवा बंग आराम से सुना हो।

सुनती हो पीछे फिर नापक हो सेना।”

असहाय शिगु छे जै पति से अधिक पत्नी को और क्या चाहिये? और ऐसे क्षण पति मानों पत्नी के लिए सर्वस्व हो पड़ता है।

मेरे कार्य का जम एकदम मंग हो चुका है। कार्य खिलना था पर निर्भर था। देश के लिए, समाज के लिए, दूमरों के लिए यह करना था

बहू करता था। लेकिन जब वह भापा मन में से मिटती जा रही है। कागसु बाधक्य हो सकता है या जो भी कहो। इसलिये एकाएक मैं अपने में पीता-बीता सा बनने लगा हूँ। मंत्रित्व एक काम था जो धार्मिक बन गया था। जब सोचने की भी होता है कि क्या वह काम भी था। लेकिन फुरसत बिल्कुल नहीं छोड़ता था। यद्यपि मन में निश्चय बढ़ता जा रहा है कि मंत्रित्व काम नहीं होता है तो भी उसके बिना तो इधर मैं घोर भी अपने को बेकार साग रहा हूँ। तब व्यर्थ ही सही एक व्यस्तता तो थी। जब सार्वकता की तलाश में एकदम शून्य हुआ बैठा हूँ।

घर में बेटी आई हुई है प्रभु। जमाई भी साथ हैं। वह ऊँचे कारो-बार में रहा करते हैं। स्वयं तो वे नहीं यजमि धाकर बोसी—

‘बाबूजी यह क्या बात है। भाप हमारे लिये कुछ कर नहीं सकते तो बापा तो न बनिए।’

इस तरह की कठोर बात अपनी बेटी से सुनकर मैं उसकी तरह बैसता रह गया। कहा, “भंजी यह क्या कह रही है तु !”

‘भापने मिनिस्ट्री से इन्कार क्यों किया?’

‘यह कौन इस तरह की बातें बकता फिरता है?’

‘माँ कह रही थीं।’

‘उसे तो रबाब धामा करते हैं। घोर हिन्दुस्तान में जातीत करोड़ सब मिनिस्ट्री के सहारे रहिये क्यों?’

प्रभु की हिम्मत बैलिये कि बोसी—

‘भाप तो भी करजा जा कर चुके। हमारी सारी उमर पड़ी है। बसका रास्ता क्यों रोक्ते हैं। भापका मन भर चुका होगा, पर हमें तो अभी सब कुछ जाना है। भाप क्या सिर्फ अपने लिए रहिये कि कुछ धाये तो चाहें न चाहें फेंक दें। हमारी भी उस सब में राय है कि नहीं? बहू मत की बात बाहर ही नहीं घर में भी बसनी चाहिए। भापने माँ से पूछा? बेटी से पूछा? सबसे पूछा?’

शोक की बात ही थी। मैंने कहा—‘बकी मत प्रभु, घोर अपना काय

देखो । आइरा ऐसी फिजूल की बकबात न हो मेरे साथ समझी ?

लेकिन प्रभु प्रसन्न न हुई, बोली—“नहीं बाबूजी आप अब तक अपनी बसावट रहे । मैं पिछली रहीं धीर हम को बन सकते थे नहीं बन सके । सिर्फ इसलिए कि आपने अपने को माना हमको साथ नहीं माना ।

‘बात की हब होती है प्रभु ।’ मैंने ठेक होकर कहा ‘धीर तुम अगर नहीं जाती हो तो मैं ही बसा जाता हूँ धीर मैं यह बरवास्त नहीं करूँगा ।

ठीक में सभी सीधे धाकर पत्नी से कहा “तुम मुझ इस पर मैं रहने बोली कि नहीं ठीक बगामो ।

पत्नी अदर सीने की मधीम सामने लिए बैठी थी । बड़े समाहित भाव से बोली—

“क्या बात है ? पहले बैठी तो —”

उतक इस व्यवस्थित भाव पर मैं धीर मर्म हो आया बोला—

‘यह मंत्री बंधी की बात धारे में उड़ा रली है धीर बटी-जमाई को लेकर घेराबरी करना चाहती हो । धरम धानी चाहिए तुम्हें ।

पत्नी मुनकर मुस्कराई, बोली ‘धरम की क्या बात है । धारे मुनके को साथ चलना है कि नहीं । सबको बुबाना हो तो बैसा कहो । नहीं तो ।’

‘धरे यह मुनबा है कि बने का भार बना दिया है । ऐसे बहम सब छिर से उठार बी । पुराने दिन भूष पर कि कँधी हासत थी । मेरी तरफ से तय समझो कि फिर हमें सीटकर जन्ही दिनों पर पहुंचना है ।’

‘क्या !’

‘यह सब जो है—धरना नहीं या धपना नहीं है । बेटे-बेटी बुनिया में धपनी तरह से जियेगे । जमाई लोग अपने बूत बड़ेंगे । मैं सीड़ी नहीं हूँ कि धीर रगकर मुझ पर बड़ा जाय । कुछ तो सोचो । जीवन बरस की उमर ही गई है क्या अब भी मुझे भगवान का सुमरन नहीं करने बोली ?

“भगवान ! तुम भगवान को मानते हो ?”

“नहीं नहीं मानता या नहीं मानता हूँ । लेकिन इस बुनिया की ही

कब तक माने जाऊँगा ? नहीं राजी वह मानने जायक नहीं है। उसी के नाते हम एक-दूसरे से प्यार बाँच लेते हैं। एक दूसरे को कान्ते लग जाते हैं। प्यार गया तो हमारे पास कुछ नहीं रह जायेगा राजी। बाकी सब घोषा है, बिरबा है, बाल है। इस उमर में भाकर हम-तुम यह नहीं समझेंगे। माया की ममता में पड़े रहेंगे तो सोचो हमारी क्या गति होगी !

राजी देखती की देखती रह गई। मैं भी नहीं समझ सका कि एकाएक ये शब्द मेरे मुँह में कहां से आ पाये। मेरी प्रकृति के ये तनिक अनुभूत न थे। मेरे सारे इतिहास के बिच्छू थे। इसी से राजी, अविद्वस्त पर प्रसन्न मेरी धीरे बिस्मित ही देखती रह गई।

बिस्मय से उबर कर बोली— 'क्या सच कहते हो ?

'क्या मतलब तुम्हारा कि सच कहता हूँ ?

उमने फिर मुझे देखा। ऐसे कि मानो माप रही हो। बोली, "सच कहते हो कि तुम में हार नहीं आई है जब-बकान नहीं आ रही है ? यह सब बिराग तुममें निराशा में से पैदा नहीं हुआ है ? मैं तुम्हें हारता हुआ किसी तरह नहीं देख सकती हूँ। दुनियाँ बेकार है, लेकिन उससे हारना कैसे हो सकता है ?

यह मैं क्या मुन रहा था ? मैंने कहा— तुम मुझे इतना ही जानती हो राजी ?"

राजी ने मुझे देखा। वह निराह मुझे मानो भीतर तक टटोस गई। बोली— "बही तो कहती हूँ कि मैंने जब तक तुम्हारे मुँह से पीछे हटने की बात नहीं सुनी थी। फिर उन बातों का बिस्वास मैं कब भी तो करूँ। तुम तो जीतने के लिए बने हो। मैंने बेघा है और तुम भी ऐसा ही कहते आये हो। तब त्याग-बिराग की बातें हम-दोनों बीसी मुझे न सपनीं तो क्या सपनीं। तुम्हारे जायक तो वह नहीं है न।

मैंने पत्नी की तरह देखा। उसने जीवन भर साथ दिया था और निरी अनुभवा समझ कर मैंने कभी उसे ध्यान में नहीं लिया था। एकाएक मुझे लगा कि जाने मैं किस बेमानता में रहता आया था। मैंका

मायुक होने पर केसि-बिनोद में जरा उसको बहुमानर दिया करता था, नहीं तो घर-गिरस्ती के सामान-असबाब से ज्यादा किसी तरह नहीं मानता था। मेरा वह मान टूटा और मुझे जाने कौसी एक कृतार्थता का अनुभव हुआ। कहा— 'अब तुम उस बात को सच मान सकती हो रही।'

तुम कहोये तो सच क्यों न होयी। मेरे साथ तुम्हें झूठ की तो कमी बकरत नहीं हुई। पति प्रेम में कामर हो जामा करते हैं और पत्नी से खोरी रहते हैं। तुम की कमी उस तक की बकरत नहीं हुई है। उस पर मैं मन में कितनी भी किमखी होऊँ, तुम्हारी बहादुरी का सच मुझे अभिमान रहा है। तो कहते हो तुम—वह सच है ?

“हाँ सच है।

राजी ने उत्तर में मुझे कुछ नहीं कहा। मुझे देना तक नहीं। दोनों बाहें उठाकर उसने आकाश की दिशा में हाथ जोड़े और पद्मक भाव से बोली “हे जगवान पंत में तुमने मेरी प्रार्थना सुन ली।” वे हाथ फिर उसके अपने मुख पर धाये बोड़ी और उनसे वह अपना मुँह छिपाये रही। फिर उसको असमंजस नहीं रह गया और साड़ी के छोर से मुस कर धाँकों के धाई बन्धता के धामू उसने पंखि और कहा “तुमने मुझ को कभी गिनती में नहीं लिया है। तो मत समझना कि ठीक नहीं किया है या तो धिक्करबास में किमा है। विश्वास रखना राजी तुम्हारी है और धरम पत्नी कभी धनग से गिनती के लिए नहीं हुआ करती है। उसका सच धरम पति के साथ होता है।

यह सब क्या हो रहा था। मेरे लिये वह धनीला अनुभव था। मैं व्यक्तिब चाहता हूँ, प्रत्येक में अपना व्यक्तिब। कोई सम्बन्ध नहीं जिसमें व्यक्तिब की हानि का समर्पण हो सके। लेकिन वह सब तब दर्शन जाने मेरे भीतर जहाँ सिमटा रह गया था। मुझे विश्वास हुआ अब देना कि मेरा मन भय था रहा है। हर भावुकता को मैं कमजोरी समझता हूँ। बयभोगी वह खरिज की है व्यक्तिब की है। विधान

निर्मम होता है बिपाता भी निर्मम होता है । उनके तसे हम सबको भी समताहीन धीर दूढ़ होकर बनना है । व्यक्तित्व को किसी हाकत में सीमल में नहीं बिना जा सकता । सेकिल यह साय ठर्कनिष्ठ भाव किसी तरह भी मेरे भीतर सिर नहीं उठर सका । धीर में सबसम्भ रह गया यह अनुभव करके कि पत्नी ने स्वयं में निस्सब बन कर मेरे स्व को ऐसा राबित कर दिया है कि मैं इन्तजता में भीम जटा हू ।

इस मद्भव भाव को सेकिल मैं किसी पर प्रकट तो नहीं कर सकता ।। इसलिए खुपचाप उस अपस्थिति से बाहर एकान्त में मैं अपनी गराम कुर्सी पर आ रहा । पहली बार अनुभूति मिली कि दुबिधा कट जी है धीर धनावास एक समाधान-सा भीतर से घाटा जा रहा है ।

पर मैं लंका उठाना चाहता हूँ । अपनी पराजय को घासीकार करके : लिए जानबूझ कर प्रश्न जठरना चाहता हूँ । नहीं यह नहीं होमा कि र्जवान पुरुष की कृतार्थता सम्य में प्रकर्म में मानी जाय ।

नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए ।

दो

काशी जिनगी में बस आया हूँ। क्या चाहता था मैं कि जब वह जिनगी खुली ? यूनिवर्सिटी से निकला और देश के काम में पड़ गया। देश को आजाद होना था लेकिन जब यह था अब देखता हूँ कि मुझे आजाद होना था। वर गिरिस्ती की जिनगी बची जैसी होती है। आजादी के आन्दोलन में पड़कर जया कि मैं क्या नहीं हूँ लौट रहा हूँ और लुप्त रहा हूँ। वहाँ से क्या-कैसे मोड़ काटा हुआ मेरा जीवन अब यहाँ तक आया है इसकी बात आगे हो चकेगी। लेकिन क्या अब भी अनुभव हो सका है मुझे उसका कि जिसे मुझि कहते हैं ? मैं जानता चाहता हूँ कि मुझि का वह बोध क्या है ? वह पारिस्विक है ? या नहीं आत्मिक है ? या ?

सबसे ठाकुर साहब का मने। ठाकुर महादेवसिंह, जो अपने हलाके के हैं और असेम्बली के सदस्य हैं। उन्हें शिकायत थी कि ऐसे नहीं बसेगा मरान छोड़ना नहीं होना। अभी तो घनी के दिन हैं। कुछ का कुछ हो सकता है। वेत का मन्ना तो अभी है।

ठाकुर साहब का मैं ज्ञायस हूँ। मङ्गे-मिते विशेष नहीं हैं, रसलिये बर्बाद हैं। यस्ति से अलग कोई संस्थापि होती है, इन मूल में वह नहीं र चकते। बोले— "ऐसे नहीं बसेगा उहाय। भाभी की बुनबापो त देखता हूँ वह भीमे राजी होती है। हमने तुम्हें नेता माना तुम्हारे बर्बाद हलाय बिसर आया।

‘बिस्तर कर नहीं नहीं जायेगा घापका या किसी का बस ठाकुर साहब !’ मैंने हंसकर कहा ‘सिर्फ बड़े समाज में बुल-मिस जायगा । फिर और हर्म क्या चाहिए ? जो बुझाठा हूँ भामी को उनसे निपट लीजिएगा ।’

‘क्यों तुम कहीं जले ?’

‘जो के बीच तीसरा भड़कन हो जाता है न । तुम्हें यह भी कहने को नहीं रहेगा कि मेरा सिद्धांत रहा पीछे अपना भरपूर घर तुम डाल सकते ।’

बात यह थी कि इस कमरे के टेलीफोन पर भीमी घटी घा गई थी । मुझे अनुमान था और ठाकुर साहब के सामने फोन पर मैं यह बात नहीं करना चाहता था । अन्तर आकर राजधी को भेज दिया और मैंने टेलीफोन लिया । अनुमान मेरा ठीक निकला भानुप्रताप बात रहे थे, ‘सहाय ! घरे क्या कर रहे थे ? मैं तीन मिनट से फोन बात पर सिप बैठा हूँ । मुनो पांच बजे शाम पर भा सकते हो ?—काम है ।’

‘बताओ काम—भा क्यों नहीं सकता !’

‘भार, तुम्हारा कुछ ठिकाना नहीं है । हम सबको जमीन पर छोड़ कर तुम उड़ने की जो तैयारी कर रहे हो । काम जमीन का है । भाओगे, तब कहेंगे ।’

‘क्यों फोन कोई मुनने लबा है क्या ? कह डालो जो काम है ।’

‘बात यह है कि वहाँ जमना है—यह याद कर रहे थे ।’

‘यही बात है तो जाने दो । बुनियाद ही नहीं रखने वाली है तो ऊपर चिनाई की बात क्या सोचना है । मैं पालियामेंट से इस्तीफा दे रहा हूँ ।’

‘घरे यह बैबकूफी न करना ! ‘तो ठहरो मैं ही तुम्हारी तरफ घा रहा हूँ ।’

‘बकर भाओ, लेकिन दो-शार्ड घंटे निकाल कर । भामी ठाकुर साहब बैठे हैं । उनसे निपट जाने दो ।’

“वहीं बाहर बैठे हैं क्या तुम्हारे ? तुम ”

‘नहीं मैं बाहर हूँ । बेफिकर रहो ।

‘तो देखना मुझसे मिलने से पहले कुछ मड़बड़ न करना । क्या हो गया है तुम्हें ? खैर आकर समझेंगे । घब्ररा—।

फोन बन्द किया घीर माने को हाथों में ले लिया । स्वतन्त्रता क्या सचमुच कोई चीज होती है ? जब तक अपने से इतर अपनेको ‘पर’ मौजूद हैं तब तक ‘स्व’ का कोई अपना तब धायद बल नहीं सकता है । सबसे मानुस होता है कि एक अनेक से किस तरह बंधा है !

फोन पर बटी धाई घीर उठाया तो मानुस हुआ कि राजी काहल कम में बुला रही है । मैंने कहा ‘क्यों ठाकुर साहब को तुमने मिठाया कि नहीं ?

‘वहीं तो तुम्हें बुला रहे हैं । मुझे तुमने बना बीध में क्यों डाक दिया है । मैं तो कह रही हूँ इन्हें कि मैं कुछ नहीं जानती । उम्हीं से पूछो कि करते हैं सो क्यों करते हैं । ठाकुर साहब कहते हैं कि मैं तुम्हें समझाऊँ । आधो तो इनके सामने तुम्हें समझा के भी देख लेती हूँ ।’

ठाकुर सच ही मुझ बड़े विस्वसनीय रहे हैं । हर तरह मेरी मदद की है । मेरे दोष को मेरे पल में संभाल रखने का ध्येय उम्हीं को है । मेरे लक्ष्ये हितैषी हैं घीर जानता हूँ कि मेरे लिए हर बन्त तैयार हैं । इसीलिये मैं उनके सामने से डरता हूँ । उनका मन न रख सकूँ तो मुझे कष्ट होगा ।

वहाँ पहुंचा तो राजभी ने कहा लीजिए ठाकुर साहब ! घबरा मुक्तिधन या मये मुझे सब छुट्टी बीजिए ।

“जी नहीं जानी थी ! धाय नहीं या पार्येयी । इय देहाठी लीय है बाउ लइबीब से नहीं कर सकते तो इसका मतलब यह नहीं कि हमारी बाउ कच्ची हो जाए । आपको हवायी मदद करनी होगी । इय या तो लड़ना जानते हैं या हलुन बजाना जानते हैं । बहु बिचम मिर उठा रहा है । ऐमे में बसाइये इय बहाय बाउ को बँसे भूल सकते हैं ! नहीं

तो आपसे ठहरने की विनती न करता। 'हाँ बटाइये सहाय बाबू, आप हमें मंझवार में क्यों छोड़ रहे हैं ?

'कौन कहता है ? मैं तो उल्टे आपके बीच बसने की सोच रहा हूँ।

'महीं आप मोहरे पर रूकर यहाँ विस्ती से हमारय जितना भसा कर सकते हैं खुद नहीं रूकर उठना नहीं कर सकते। आप हमारय भलाई सोचते हैं या—हमारय भलाई इसमें है कि आप मोहवा रसें। कहिये, मामीजी कहिये न ?

'ठाकुर साहब ठीक तो कहते हैं। हमारय ध्यान सेवा पर हो तो अपने मन की छोड़कर हमें जनता के मन की करनी चाहिए। है कि नहीं ?'

'यही मैं कहता हूँ मामीजी ठाकुर बोले कि सिद्धांत पहले है या हम आदमी लोग पहले हैं ? सिद्धांत रखना या तो सेवा-करम में क्यों पड़ना था। मुक्ती-बैराग में दुनिया से दूर बसे जाते और आत्मध्यान में मगन रहते। सेवा की राह पकड़ी है तो वह तो कठिन मारग है और अपने साथियों को उसमें छोड़ा नहीं जाता है। क्यों मामीजी ?

मैं चुप था और मुन रहा था।

राजी ने कहा 'मुन क्या रहे हो कहो जो तुम्हें कहना हो।

मैंने कहा "राजी तुम यह चाहती हो ?

राजमी ने बात बचाई, कहा "ठाकुर साहब को कहो न जो कहना हो। मुझसे क्या पूछते हो ?"

'तुम्हीं से पूछता हूँ। चाहती हो तुम कि मैं मोहवा सू ?

'मेरे चाहने न चाहने की बात कहाँ है। जिनकी सेवा का ब्रत लिया है उनसे सीधे क्यों नहीं पूछते ?

मैं कठोर हुआ। बोला 'हाँ पहले तुम्हें ही पूछता हूँ। तुम चाहती हो ?'

बीच में ठाकुर साहब बोले, 'आप धम्याय करते हैं, सहाय बाबू। जो कहेंगी समझ जायगा वह अपने लिए कहती है। हमने हर शाम

में धापका साथ दिया है। आपने सारे बुनाब हमारे इलाके से सड़े हैं। आपकी अपने क्षेत्र में एक मिन्ट नहीं लगाता पड़ा है और हमने आपकी मौजा दिया है कि आप सारी ताकत बिस्वी में समाएं। उस बल पर आप उंचे चढ़े हैं और मानना चाहिए कि उसकी ताकत वापस हमको भी मिली है। सीरे की बात नहीं कहता हूँ लेकिन त्रिन्वपी सैन-वेन पर बसती है। साफ कहिये कि क्या इस मौके पर आकर आप उस सब ताकत को बिखर जाने देंगे जो इन बारह वर्षों में हमने कन-कन करके जोड़ी है और जिसके बल पर हमारे सारे इलाके में कुछ बिरता आई है। आपके मन में कुछ मूढ है और आप उसे पुरा करना चाहते हैं। ठीक है, आप अपने को धाबाह मान सकते हैं। लेकिन सोच सीजिए। इसमें माभी भी जो परेधान करने की बहुरत नहीं है। क्या सचमुच इसी तरह आप बिरस्ती बताते हैं कि घर पर बेजा रोब डालें ?

मैंने ठाकुर से जान-बूझकर ध्यान हटाकर बीच में कहा, "राजी, फिर तुमसे पूछना हूँ। तुम चाहती हो ?

धनुमच कर रहा था कि मेरा बल बेजा है। पर जाने क्या भीतर से सन्त बनता हुआ मुझमें उठा कि मैं मानो अपने बाबजूह राजधी पर अपने सवाल का जबाब बहाता ही जाता गया। राजधी बोली "मैं आप लोगों के बीच से जा सकती हूँ ?

"नहीं !" मैंने कहा "पहले जबाब देकर जाओ।

राजधी अपनी जगह लड़ी हो गई। तेज होकर बोली "जबाब ? मैं पूछती हूँ तुमने सेवा का बल लिया है कि नहीं ?

"नहीं लिया है !"

'तो मतवाहा तुम कर सकते हो !

कहकर राजधी जाती गई और मैं अपनी जगह पर ठिठका-सा रह गया। कुछ देर मुझमें कुछ नहीं बोला गया। जैसे ठाकुर साहब के सामने मुझे लगित्त दिया गया हो। ठाकुर मुझे स्लाप धाब से देसते रहे। मैंने भी उनकी धांतों में देगा। सचमुच वही निचित जय का भाव दिनाई

दिया। मुझे यह धक्का नहीं लगा। जैसे राजाजी उनके पक्ष का बल बढ़ा गई हो। कुछ क्षण ऐसे ही निकल गये। फिर मैंने कहा “सुन लिया आपने ठाकुर साहब ? मैंने सेवा का प्रथ नहीं लिया है।”

‘तो यह सारे पन्द्रह बर्ष आपने क्या किया है ?

‘भोखा दिया है ?

“नहीं तो क्या किया है ?

‘तो मान लीजिये भोखा किया है।

‘भोखा कहकर आप आसानी से नहीं बच सकते हैं, सहाय बाबू ! यह खेल भी बात नहीं है। बिज्जम की भी कुछ पहूँच है। आपके जरिये हम वहाँ तक पहुँच सकते थे घायब उतनी अंधी पहूँच न हो लेकिन है। आपके बिना हम मुक़ाबले में कमजोर रह जाते हैं बिज्जम ऊपर आ जाता है। ऐसे पन्द्रह बरस से ईंट-ईंट जोड़ी गई इमारत बह जाती है। आप दिस्ती में बैठ कर उसे मज्जाक समझ सकते हैं लेकिन वहाँ देहात के घसल मेदान में भुमरता हमको पड़ता है। आपके अपने मन की घोर धकेसे की बात होती तो मुझे यहाँ आने और झगड़ने की जरूरत न थी। आप का हमारा साथ रहा है लेकिन समता है आप से ज्यादा एहसास और हमदर्दी हमारे लिए भाभीजी में है। आपमें प्रसूत उठ धाया विलता है जिसने आपको स्रष्ट बना दिया है। कहिये आप क्या कहते हैं। भाभीजी आपकी हैं फिर भी आपसे बाहर जाने की हिम्मत दिखा सकी है। उस माराजी को मेहरबानी करके हम पर न उतारियेया।”

कहते हुए ठाकुर साहब मुस्कुराये। उस मुस्कराहट पर मेरा भी तनाव सहसा ही बिघर गया और मैं भी इस धाया।

ठाकुर बोले पर की माराजी घाई-मई होती है। उसमें देखिये कैसला समत न कर डालियेया।

मैंने कहा, “ठाकुर साहब ! यह सब है कि जहाँ मैं पहुँचा और घब भी बैठा हूँ वह सब आपकी बदौलत है। लेकिन यह क्या बात है कि हमने नीचे से कम-कम करके ठाकुर बनाई है और ईंट-ईंट करके इमारत

बढ़ी की है—लेकिन यह सब कुछ ठिका है ऊपर की मेहर के सहारे । क्या इससे यही न साबित होता है कि बुनियाद कच्ची रह गई है और किस्मत को हमने अपने हाथों में नहीं लिया है, बल्कि ऊपर किसी के सहारे घटका दिया है । ऐसे ठाकुर साहब, हम कमी उर से नहीं छूट सकते कि बिजम हमें पछाड़ न दे ! आप और हम क्या यह नहीं चाहें कि यह अन्धेरा हमें घा के लिए खरम हो जाए ? और बिजम बठारे की अपह कुब मरब बन जाए ?

आप क्या कहते हैं यह सहाय बाबू बिजम आपका ठिकाने है ?”

“क्यों ऐसा क्या हो नहीं सकता ?

“कमी नहीं हो सकता ।

हो सकता है । “मान बीजिए मैं अपह पाली करता हूँ और हम दोनों कोविष करते हैं कि बिजम मेरी अपह कुब जाय

“आपको सम्य तो नहीं हो क्या ?

“किसी कबर घायब हो तो क्या है ।

‘हां, हो क्या है । बिजम और पासियामेंट में ?

कहकर ठाकुर हसे ।

“घरे भाई पासियामेंट से क्या होता है बस दो-चार बरस उसल
 ✓ बुर करलै का मीका मिल जाता है । बाहर के लोग देखते रहते हैं कि हमार घाबमी क्या कर रहा है । इस तरह मनेल तो बाहर हम लोगों । हाथ ही रहती है । नहीं तो जनतग्न के माने कुछ नहीं रह जाते हैं । ताक सरकार के हाथों में हो और बाहर सब कोई असहाय हो जाए, तो ब जनतग्न नहीं रह जाता है कोय तमाया बन जाता है । बिजम की ताक से घासका हमें रहती है तो इतीमिए कि यह-मोहरे का उसे सहाय ना है । लोगों क बीच से उसे ताकत खींचनी होती है । एक बर सरकार सहारे उसे तटया तो तो वह अयर में रह जायेगा । और हम जमीन न बरबूती से खड़े हो जाएं देखीं ठाकुर साहब । सम्य मं घाटा है ।

“नी नहीं । सम्य में यह घाटा है कि अब आपक बिना बिजमों

सि हलको मुलायम बना होगा। लेकिन कहे देता हूँ महाय ब्राह्म कि हम बिदे तो घाप किसी तरह उठे हुए नहीं रह सकते हैं।”

“लेकिन मैं उठा हुआ इसीलिए नहीं रहना चाहता हूँ ठाकुर साहब।” मैंने कहा कि घापको या हमको फिर कभी न गिरना पड़े।”

“तो घापका यही फेंवना है ?

“नहीं घाप का समी नहीं रहे हैं। सा-री के पाइयेगा। और फिर घाप को हमें बातचीत करनी है।”

“क्या है, मुझे कुछ काम है। और बात के लिए सब क्या रह गया है ?”

“जी नहीं बहुत कुछ रह गया है। समी कुछ रह गया है। वह बताएंगे कि घापका तो बड़ा इलाका है कहीं किसी गांव में खूने-बछने का बन्दोबास्त मेरे लिए नहीं कर बीजियेगा ?

ठाकुर का मन मैं देख सका कि मुलायम नहीं होना चाहता था। ठाकुर बोले पहले घामीजी से पूछ लीजिये।

“उन्हीं के लिए तो कह रहा हूँ।

“उनके लिए जब कहियेगा तब सब कुछ हो जायेगा। समी तो घापने लिए कह रहे हैं घार और—

बचछा बचछा ! मैंने कहा बुलाया हूँ उन्हीं की और उनकी इजाजत के बगैर तो घाप यहाँ से जा नहीं सकियेगा

“मैंही उनकी न बुलाए।”

मैं बटन दबा चुका था और राजयी के घाने पर कहा “ठाकुर साहब जाना चाहते हैं।

राजी ने कहा “क्यों ठाकुर साहब ?

“कुछ उधर वे काम या जायी जो।”

“बचछा, बचछा। काम देखा जायेगा क्यों जी, तुमने नापक तो नहीं कर दिया इन्हें ?

“तुम राजी कर जो इसीलिए तो बुलाया है।

बाड़ी की है—लेकिन यह सब कुछ ठिका है ऊपर की मेहर के सहारे । क्या इससे मही न साबित होता है कि बुनियाद कभी छू नहीं है और किस्मत को हमने अपने हाथों में नहीं लिया है बल्कि ऊपर किसी के सहारे घटका दिया है । ऐसे अकूर साहब हम कभी डर से नहीं छूट सकते कि विक्रम हमें पछाड़ न ले । आप और हम क्या यह नहीं चाहेंगे कि यह भग्नेया हमेशा के लिए खत्म हो जाए ? और विक्रम खतरे की जगह सुर मरब बन जाए ?

“आप क्या कहते हैं यह सहाय बाबू, बिना आपका ठिकाने है ?”

‘नहीं ऐसा क्या हो नहीं सकता ?’

‘कभी नहीं हो सकता ।’

हो सकता है । माल भीखिए मैं बबह घासी करता हूँ और हम दोनों कोशिश करते हैं कि विक्रम मेरी जगह चुन लाने

“आपको लख तो नहीं हो गया ?

‘कितनी कबर घाबर हो तो गया है ।’

“हां हो गया है । विक्रम और पार्लियामेंट में ?

कहकर अकूर हँसे ।

“मरे माई, पार्लियामेंट से क्या होता है, बस दो-चार बरस छल-चुल करने का मौका मिल जाता है । बाहर के लोग देखते रहते हैं कि हमारा भावमी क्या कर रहा है । इस तरह नकल तो बाहर हम लोगों के हाथ ही रहती है । नहीं तो जनतन्त्र के माने कुछ नहीं रह जाते हैं । ताकत सरकार के हाथों में हो और बाहर सब कोई धराहाथ हो जाए, तो वह जनतन्त्र नहीं रह जाता है कोय तमाषा बन जाता है । विक्रम की ताकत से घातका हमें रहती है तो इनीलिए कि पर-धोहरे का उसे सहाय नहीं है । लोगों के बीच से उसे ताकत बीजनी होती है । एक बड़े सरकार के सहारे उसे सटना हो तो वह पपर में रह जायेगा । और हम अभीन पर मजबूती से लड़े हो जाएं” येव्यों ठाकूर साहब ! समझ में आता है ?”

“जी नहीं । समझ में यह आता है कि सब आपके बिना बिजमसिंह

से हमको मुक्तक सेना होया। लेकिन कहे देता हूँ सहायकार कि हम सिरे तो घाय किसी तरह चले हुए नहीं रह सकते हैं।

“लेकिन मैं उठा हुआ इसीलिए नहीं रहना चाहता हूँ ठाकुर साहब।” मैंने कहा “कि आपको या हमको फिर जमीन गिरना पड़े।”

“तो आपका यही फैसला है ?

“नहीं घाय या घमी नहीं रहूँ। जान-पी के जाइयेगा। और फिर घाम को हमें बातचीत करनी है।

“रुपा है मुझे कुछ काम है। और बात के लिए घव क्या रह गया है ?”

“जी नहीं बहुत कुछ रह गया है। सभी कुछ रह गया है। यह बताइये कि आपका तो बड़ा इलाका है कहीं किसी बाँव में रहने-बसने का बन्दोबस्त मरे लिए नहीं कर डीजियेगा ?

ठाकुर का मन मैं देख सका कि, मुलायम नहीं होना चाहता था। ठाकुर बोले ‘पहले भामीजी से पूछ लीजिये।

“उन्हीं के लिए तो कह रहा हूँ।

“उनके लिए जब कहियेगा तब सब कुछ हो जायेगा। घमी तो अपने लिए कह रहे हैं घाय और—

‘घच्छा घच्छा। मैंने कहा ‘बुसाता हूँ उन्हीं को और उनकी इजाजत के बغير तो घाय यहाँ से जा नहीं सकियेगा

“नहीं उनको न बुसाइए।

मैं बटन दबा चुका था और राजभी के घाने पर कहा “ठाकुर साहब जाना चाहते हैं।

राजी ने कहा ‘क्यों ठाकुर साहब ?”

“कुछ राह में काम था भामी जी।

“घच्छा घच्छा। काम देखा जायेगा” क्यों जी तुमने माराज तो नहीं कर दिया इन्हें ?

“तुम राजी कर लो इसीलिए तो बुसाया है।

बाड़ी की है—लेकिन यह सब कुछ ठीका है ऊपर की मेहर के सहारे । क्या इससे यही न साबित होता है कि बुनियाद कच्ची रह गई है और किस्मत को हमने अपने हाथों में नहीं लिया है, बल्कि ऊपर किसी के सहारे घटका दिया है । ऐसे ठाकुर साहब हम कमी दर से नहीं छूट सकते कि बिजम हमें पछाड़ न दे ! भाप और हम क्या यह नहीं चाहेंगे कि यह घन्देवा हमेशा के लिए खतम हो जाए ? और विक्रम खतरे की बगल खुद मरद बन जाए ?

“भाप क्या कहते हैं यह सहाय बाबू बिजम भापका ठिकाने है ?”

“क्यों ऐसा क्या हो नहीं सकता ?

“कभी नहीं हो सकता ।

हो सकता है । मान लीजिए मैं जगह सामी करवा हूँ और हम दोनों कोविच करते हैं कि विक्रम मेरी बगल खुन जाय

“भापको लक्ष्य तो नहीं हो गया ?

“किसी करर छापर हो तो गया है ।

“हां, हो गया है । बिजम और पालियामेंट में ?

कहकर ठाकुर हुंसे ।

“घरे माई, पालियामेंट से क्या होता है बस दो-चार बरस उछल दूर करने का मौका मिल जाता है । बाहर के लोग देखते रहते हैं कि हुमाय भाबपी क्या कर रहा है । इस तरह नकेल तो बाहर हम लोगों के हाथ ही रहती है । नहीं तो जनतन्त्र के माने कुछ नहीं रह जाते हैं । ताबत सरकार के हाथों में हो और बाहर सब कोई असहाय हो जाए, तो वह जनतन्त्र नहीं रह जाता है कीच तमाया बन जाता है । विक्रम की ताबत से भापका हमें रहती है तो इसीलिए कि पर-मोहरे का उसे सहाय नहीं है । लोगों के बीच से उसे ताबत खींचनी होती है । एक बरस सरकार के सहारे उसे सटना हो तो वह घर म रह जायेगा । और हम जमीन पर नजरबंदी से लड़े हो जाएं देखेंगे ठाकुर साहब ! तमन् में भाता है ?”

“जी नहीं । तमन् में यह भाता है कि भव भापके बिना बिजमतिह

उपर से जब मामला नहीं संभलेगा। नीचे मुक नीचे से साथ को बनाता होगा। वह न होता तो मैं ही सापियों का साथ देने में जैसे पीछे रह सकता था।

“और, तुम धाघोमे तो न चाप पर ? और छ' बने फिर साथ बनेंगे।

“तुम कहते हो तो—ठीक है।

‘तो मैं बनू—उन्हें कहूँ।

“ठहरो प्रताप एक बात पूछूँ। मेरी जगह तुम क्यों नहीं हो सकते ?

“होना मैं हो तुम—

प्रताप धाघे कुछ नहे कि बीच में प्रजु धा गई। बोली—“तमारा भाई है, बाबू जी क्या कहें उसे ?”

“तमारा ?

‘हां। धाघ भूल गये ? बरत चाहती थी धमी न हो तो, क्या कहें ?”

“तुम से मिलने भाई होगी।

‘नहीं धारत।

“मुझसे ?—तो क्या ठहरेगी।’

“अर—रवाया तो नहीं ?’

“नहीं मैं तुम सबर हूँ।

मैं प्रसन्नु था। देखा कि प्रजु प्रसन्नु लीटी है और सामने के प्रताप भी प्रसन्नु बंटे है। बोले “तमारा—तुमसे मिलना करती है।”

“प्रजु की मित्र है—कभी-कभी धा जाती है।

“नहीं सहाय, यह बीन ठीक नहीं है।”

“अब तो मैं प्रोटोकॉम में नहीं हूँ, भाई।”

‘वह बात नहीं। तमारा पीरत ठीक नहीं है।

“तुम सई मुखिक ठहरे। यहाँ तो लपटा है, हमसे बरतर कोई हो नहीं सकता है।”

“यह सन्तपना यह छोड़ना सहाय, यता धाघोमे। यह धौरत थी

‘इन पर मत जाइएगा घाप ठाकुर साहब । इनकी तो मत स्वाटी है । बाइए बी घाप जाइए । घापके लिए घंवर कोई घापे भी हैं’ ठाकुर साहब बलिये, मेरे बामे कमरे में घाइए । जाना जाना-मीकर हो सकेना । ‘घाप क्यों बैठे हैं ? जाइए न ?’

रात्री को मैं मानता हूँ । धानुप्रताप घापे तो बाहर-ही-बाहर बह उन्हें मेरे धम्मयम कमरे में बिठा घाई थी । मेरे पहुंचते ही प्रताप बीसे— ‘कहाँ चलने हुए ये घाप बनाव ?’

‘वे ठाकुर साहब से ।’

‘गये ?’

‘बने जायेगे । ‘हां कहां बह क्या बात भी ?’

बी०पी० का क्यात है, तुम बच रहे हो । मिलने तक से कठराते हो।’

‘नहीं तो ! उनका कोई सन्देश मुझे नहीं मिला !’

‘तो क्या बह सीधे तुपसे कहते ?’

‘क्या हर्ष पा ?’

‘घरे मई जानते तो हो । इसी पर इस तरह के अनुमान बांधे जाने बनते हैं । खैर, घब में कहता तो हूँ कि बह मिलना चाहते हैं । मैंने उन बने का समय मांग लिया है । चल सकोये ?’

‘सच बताओ तुम तो अपनी तरफ से बीच में बह जाना-जाना नहीं पूर रहे हो ?’

‘नहीं मैं नहीं । उन्हीं की इच्छा है ।’

‘ठीक है चलना चमूपा । सैनिंग नाम कुछ नहीं है ।’

‘दिनो गहाय हासत देष की ठीक नहीं है । स्थिति सामान्य होती तो कोई बात नहीं थी । घ की जगह ब हो सकता था । पर हासत नाबुक है घीर जाने-गले सापियों की टीम बिलती तो घामन की स्वरता पर घमा पड़ सकता है । बिजबानी लोग सह्या तो नहीं बनते । ऐसी हासत में तुम्हारा बिछरा रहना घीर बिद रगना ठीक नहीं है ।’

‘बि’ की बात नहीं है प्रमन ! देष की हासत की ही बात है ।’

ऊपर से जब मामला नहीं संभलेमा । नीचे मुक नीच से साब को बनाता होमा । वह न होता तो मैं ही साधियों का साब देने में कैसे पीछे रह सकता था ।”

“खैर, तुम धामोये तो न चाव पर ? और छ बने फिर साब चर्मेने ।

“तुम कहते हो तो—ठीक है ।”

“तो मैं चम्पू—उन्हें कहूँगा ।

“उन्हो प्रताप एक बात पूछूँ । भिपी जगह तुम क्यों नहीं हो सकते ?”

“होस में हो तुम—

प्रताप घाने कुछ कहे कि बीच में धनु भा गई । बोली—‘तुमारा भाई है, बाबू भी क्या कहूँ उसे ?’

“तुमारा ?

‘हां । भाप भूस गये ? बकत चाहती थी अभी न हो तो, क्या कहूँ ?’

“तुम से मिलने भाई होगी ।

‘नहीं धारसे ।

“मुमसे ?—तो बर ठहरेगी ।

“जरा—स्वाभा तो नहीं ?

“नहीं मैं खुद खबर भूमा ।’

मैं धसम्पुष्ट बा । देला कि धनु धसम्पुष्ट लीपी है और सामने के प्रताप भी धसम्पुष्ट बैठे है । बोले “तुमारा—तुमसे मिला करली है ।”

“धनु की मिक है—कभी-कभी भा जाती है ।

“नहीं सहाय, यह बीस ठीक नहीं है ।’

“धब तो मैं प्रोटोचोम में नहीं हूँ, भाई ।”

‘वह बात नहीं । तुमारा औरत ठीक नहीं है ।’

“तुम भाई मुम्बिफ टहरे । यहां तो सगता है, हमस बरतर कौ हो नहीं सकता है ।”

“यह धसम्पना मत भोइना सहान, लता धामोये । धनु धसम्पुष्ट हूँ”

बिखती है वह नहीं है ।

“अहं छोड़ो । धार्मिक है वही जसी जावपी । हाँ, तुम कहो—मेरी जगह तुम ही क्यों नहीं हो सकते ?

मोक्ष न बनो सहाय । न के बदले द को ली ली मनुज की जगह बनूज बैठा मिलेगा ।—घब्ररा पाँच बजे घा रहे हो न ? मैं जन्म तुम तमार घे मिली-जुली ।

प्रताप जैसे मये और जाने का ईम मुझ जमके योग्य नहीं मामूम हुआ । सदन में कुशल बर्षाकार माने जाते हैं । यह क्या कि सुलकर इस तरह घपनी घदधि बखेर गये ।

खबर की तो तमार घकेली नहीं धार्मिक, मनु भी साथ धार्मिक । वही बोली—‘यह डर रही बी बाबूजी कि साथ मिले नहीं । सब धापने खुद बुलाया ली भी डर कर मुझे साथ ले धार्मिक है ।

“क्यों मिलता मैं क्यों नहीं ?

“इसी से पूछिय ।

कहकर मनु लो जसी गई और मैंने तमार की धोर धाँप उठाई । वही प्यारी बिखती है तमार । पैलीम बरस की होगी । ब्याह नहीं किया है, धार्मिक है । मैंने कहा—‘क्यों तमार तुम घाले डरती थी ?’

“हाँ धार्मिक भोग ठीक नहीं समझे जाते हैं । लाल कर धीरत धार्मिक । इसलिए डरती थी ।

“पर तुम न धार्मिक गई हो न मुझे मिलना तुम्हारा मया है । क्या मये भिरे न मेरे लिए तुम लराब बनना चाहती हो ?

हिन्दी तमार सम्मल-सम्मल कर बोझती है और परा वसी तर्क से बोझती है । इसलिए यह हिन्दी धार्मिक प्यारी जगती है । बोली

“गराब बचने भी गराब समझ लिया जाय लमी मे ठीक है । हम बर्सावा नहीं मानते हैं न बर्साकि लब बर्सावा में नहीं घाता है । हम मानना सब नो चाहते हैं । जगम पहले बिखी या कुछ को भी नहीं मानना चाहते हैं । देख लर नो नहीं मानना चाहते हैं । इधमें धीर सबकी जगती

सपत्नी है पर हमें नहीं मालूम होता है कि इसमें सत्य क्या है ?

“नहीं कुछ ममत नहीं है।

“आप मुझे बहलाने को तो नहीं कह रहे हैं यह !

“तुम धानती हो तुम्हें बहलाना मेरे लिए बकरी नहीं है। फायदे मन्त्र भी नहीं है। क्यों समझती हो कि देश के आगे मैं सत्य को नहीं मान सकता हूँ। तुम क्की ही मैं हिम्बुस्तानी हूँ। पर सच में तो दोनों हम्मान ही हैं। यह मानने में क्यों मुझे सुरिक्षत होनी चाहिए ?”

बहु सुनकर एकदम आने के लिए तैयार दिखाई दी। बोली—

‘बस इतना ही मैं सुनना चाहती थी। अब समय नहीं मूयी। जा सकती हूँ ?’

“जा सकती हो पर यह तो कुछ बात न हुई।

‘निकर घाऊनी। एन्जिन ने (अजलि को बह एन्जिन कहती है) उचर दिया था कि राजनीतिज्ञों से मुझे विद्येय मिलना नहीं चाहिए।

“तो मैं राजनीतिज्ञ हूँ ? जानती हो—यह अभिनन्दन नहीं है ?”

“नहीं तो क्या है ? अकृष्ण—जमस्ते !”

उपाराण आई बैसे जली गई और उसका ‘जमस्ते’ जो भारतीय से कम क्की न था मुझे से भी अधिक दिखाई देता रहा गया। विविध है यह उपाराण जो अपनी जमस्ते में कह गई है कि मैं राजनीतिज्ञ हूँ !

तीन

बी० पी० से मिसकर भ्रष्टा जमा । पर दुबिधा भी बनी । प्रयास करनी होनी बननी । भानुप्रताप को प्रसन्न बना देने में उन्हें कठिनाई न हुई । काफी देर तक अपनी बातचीत होती रही । मुख्य इसमें यह कि देश को विसर्पण वाली शक्तियाँ बढ़ रही हैं । ऐसे समय देश को एक रचना है टूटने नहीं देना है । घन्ट में यह प्रयासन का काम रह जाता है । यह काम निर्मास का है, हुकूमत का नहीं है । इसके लिए व्यक्ति व्यावहारिक से अधिक आदर्शवादी चाहिए । प्रश्न तुम्हें ?

मैं तुमका रहा था । प्रगट इतना ही किन्ना कि सोचने वही बात हो सकती है ।

घन्ट में बी० पी० ने देते कहा कि सहायता ही चाहते हों । भानुप्रताप करी न हो पर शाहीनता तो प्रामासिक पी ही । उनकी बात न रख सकने में खीर पड़ा । पर मैं आस्वासन कैसे देता ? कारण मैं मानना चाहता हूँ कि देश नहीं प्रथम मनुष्य है । खीर मनुष्य के लिए प्रथम प्रयासन से अधिक अनुशासन का है । प्रयासन की परिभाषा पाकर देश की एक बंद खीर प्रमूनसात्मक पारखा से बँठा है उससे मुक्तान ही हो रहा है । व्यवस्था पात्र सभी इकाई के पाल पर टिकी है । पर वह इकाई हमारे ज्ञान-विज्ञान के विनाश का साथ नहीं दे पाती । राष्ट्र खीर राष्ट्रवार रिच्छा बढ़ रहा है । स्वदेश-विदेश के भाव के अर्थात् समरवाएं वही ही रही हैं । उससे धाने जाना जरूरी ही खीर जरूरी तो है, तो क्या राशनीय बनने

ये वह काम प्राप्त हो सकेगा ? मुझे वह सम्भव नहीं मान्यम होता है ।
घोर मही बुझिया है ।

पर उससे भी भीतर की कुछ बूझा है । घायली सुपत्ते को सही जान
नहीं सकता । सबकी बगल वह जो बूझते बैठे हैं । उसी में सही वास्तविकता
है । देखता हूँ, राजमी फिर भ्रममगी है । उस दिन तो कृतार्थ मान्यम हुई
की सुनकर कि हमें बरती पर जाना घोर भ्रम से सगकर रहना है । भ्रम
पर नहीं तो हम भ्रम पर जीत हैं । लेकिन फिर ?

यही जानना चाहता हूँ । ठाकुर साहब को उसने जाने नहीं दिया था ।
बल्कि सामान्य कर मन्वा दिया था । मुझ्ना यह मुझे चाहिये था ।
ठाकुर मेरे राजनीतिक जीवन के इतिहास में बुनियाद की तरह भविष्य
रहे हैं । उन्हीं के प्रति फिर दुर्लभ मुझ्से कैस हो सका । घायल राजनीति में
यही होना लग जाता है । उपयोगिता की बेरी पर हादिकता को इम्मान
दुर्दान्त करने लम जाता है ।

मेरे दोष का मार्जन ही समझो । राजी ठाकुर को लेकर व्यस्त रही
होयी । कुछ में भी बेर से घायल था । इससे राज की बात तक नहीं ही
सकी थी घोर सबेरे साढ़ बार से उसका दिन शुरू हो जाता है ।

इस समय में नास्त पर बैठा हूँ । मान्यम होता है ठाकुर के नास्ते
की व्यवस्था प्रसंग हुई है । मैंने प्रारम्भ करने से पूब राजमी को सुन
बाया ।

वह आई घोर घाते ही कहा 'कहो ? कहा एस कि बस्ती हो घोर
भ्रम हो ।

मैंने कहा, जरा बैठ सकापी ?'

'बैठना है ता फिर बन्टे भर बाय रला ।

'ठाकुर साहब ठहर रहे हैं ?'

'घमी तो जाने की कह रहे हैं । मी बजे ट्रेम जाती है ।

'नास्ता हमारा प्रसंग क्यों रखा गया है ?

'मैंने सोचा, घायल'

तीन

बी० पी० से मिलकर घबड़ा गया । पर बुनिया भी बनी । प्रयास करती होती उनकी । सामुप्रदाय को अलग बना देने में उन्हें कठिनाई न हुई । काफी देर तक अपनी बातचीत होती रही । मुख्य रूपसे यह कि देश को विकसित करने वाली शक्तियाँ बढ़ रही हैं । ऐसे समय देश को एक रखना है टूटने नहीं देना है । अन्त में यह प्रयासन का काम रह जाता है । यह काम निर्माण का है, हुकूमत का नहीं है । इसके लिए व्यक्ति व्यावहारिक से अधिक आदर्शवादी चाहिए । अब तुम ?

मैं मुगता रहा था । प्रगट इतना ही किमा कि सोचने जैसी बात हो सकती है ।

अन्त में बी० पी० ने ऐसे कहा कि सहायता ही चाहते हों । जादुकता खरी न हो पर दालीनता तो प्रामाणिक भी ही । उनकी बात न रख सकते में और पढ़ा । पर मैं आदर्शवादी कैसे देता ? कारण मैं मानता चाहता हूँ कि देश नहीं प्रथम मनुष्य है । धीरे मनुष्य के लिए प्रथम प्रयासन से अधिक अनुशासन का है । प्रयासन की परिभाषा पाकर देश भी एक बंद धीरे प्रभुसत्तात्मक कारण से बैठा है उससे मुक्तान ही ही रहा है । व्यवस्था मात्र उसी प्रकार के मान पर टिकी है । पर वह प्रकार हमारे शान-बिभ्रान के विश्वास का साथ नहीं दे पाती । राष्ट्र धीरे राष्ट्रवाद पिछड़ा पड़ रहा है । स्वयंसेवक विदेश के भाव के अर्थात् समस्याएं पैदा हो रही हैं । अन्त में आये जाना बहरी हो धीरे बहरी तो है तो क्या राजकीय बनने

ये वह काम प्राप्त हो सकेगा ? मुझे वह सम्भव नहीं मानूम हांग है ।
धीर यही बुद्धिवा है ।

पर उससे भी भीतरी कुछ घुसप है । आदमी अपने को नहीं जान
बुद्धि सकता । सबकी जगह वह जो पुसरे बेठे है । सही में सही बान्धिका
है । बेकता हूँ, राजभी फिर मनमनी है । उस दिन तो कृताव मानूम हुई
थी सुनकर कि हमें बपटी पर जाना और भ्रम स समयकर रहना है । भ्रम
पर नहीं तो हम भ्रम पर जीठ है । संकित फिर ?

यही जानना चाहता हूँ । ठाकुर साहब को उसने जान नहीं दिया था ।
बल्कि सामान भर मगवा लिया था । सूझना यह मुझ बाह्य था ।
ठाकुर मेरे राजनीतिक जीवन के इतिहास में बुनियाद की तरह अनिवाय
रहे हैं । वन्ही के प्रति फिर दुर्मुख मुझसे कैसे हो सका । चाकर राजनीति में
यही होने सम जाता है । अपयोगिता की बेसी पर हादिका को इम्तान
हुर्मान करने सम जाता है ।

मेरे शीप का मानन ही समझे । राजी ठाकुर को लेकर ब्याप्त रही
होपी । कुछ में भी वेर से घाया था । इससे राठ को बात तक नहीं हो
सकी थी और सबेरे साइ बार से उसका दिन शुरू हो जाता है ।

इस समय में नास्त पर बठा हू । मानूम होता है, ठाकुर के नास्त
की ब्यवस्था प्रथम हुई है । मैंने प्रारम्भ करके स पूव राजपी को बुल
बाया ।

वह आई और माठे ही कहा "कहो ? कहा ऐस कि बल्की हो और
काम हो ।

मैंने कहा "बरा बैठ सनोगी ?

"बैठना है तो फिर मण्टे भर बाव रखो ।

"ठाकुर साहब ठहर रहे हैं ?"

"मन्नी तो जाने की कह रहे हैं । नो बजे डेन जाती है ।"

"नारता हुमाय प्रथम क्यों रखा गया है ?

"मैंने सोचा, चाकर"

तुम वहीं से घा रही हो ? नास्ते पर उनके साथ थी ?”

“हां तुम नहीं तो मुझे साथ देना चाहिए था।

वह ठो ठीक है। लेकिन क्यों मैं भी वहीं बसता हूँ। यह सब वहीं जाने को कह दो। ठाकुर नारायण तो नहीं हैं ?

“बताने तो नहीं। पर—निपाय है।

मैं अपनी बगल बढ़ा ही आया था। राजी पहले से खड़ी थी। बी टुमा जाने कैसा बी हुआ। मैंने कहा “एक बात पूछूँ राजी ? पहले तुम मान गई थी अब अपमानी हो। सोचो तुम्हारे बिना मेरा कैसे बसेगा ?

राजी ने टाल बिया कहा “क्यों बस नहीं रहे ठाकुर की तरफ ?”

“बस रहा हूँ। पर तुमसे बताया नहीं।

“क्या बताऊँ। छोड़ना मुझे कभी समय में नहीं आया। तुम्हें उठी का महारब बीस रहा है। अब बताओ क्या बताऊँ ?

“मैं मतलब नहीं समझ तुम्हारा।

“यहाँ बहस करोने ? मैं उन्हें नास्ते के बीच छोड़कर आई हूँ। राह बेरतते होपि क्यों।”

हमारे पहुँचते ही ठाकुर महारब सिंह पड़े हो गये।

“घाघी सहाय ! नहीं उबर नहीं इबर बैठो।

“सुनता हूँ मो रजे की यादी से तुम जा रहे हो ठाकुर।”

“हां जा रहा हूँ।

“नहीं नहीं बाघोने।”

“तुम टुमन तो मिनिस्टर बीस बसा रहे हो। कल घाम सबमुच बन आये हो क्या ?

“नहीं तो बात नहीं मानोने ?”

“कैसे मानूँगा ? मजदूरी के बिना कभी नहीं जाग सकता हूँ।”

मेरा बी हमरा था। नीकर के हाथ से मैंने लुप मेरा बी सफ़र समा दिया। बीजे लुप मेकर मेरा पर लनी बीर कहा “ठाकुर, कुछ लप

नहीं हो रहा है मन में। अभी तुम्हारी मानी से पूछ रहा था कि ठीक बताएँ, इनका मन क्या है ?”

“क्यों मामी भी घापने बताया नहीं—कि मन क्या है ?

राजभी बोली नहीं।

“यह बात नहीं होगी मामी जी। हम तो इनके लिए बृहत् हैं नहीं। ठीक है साहब देहात के हैं और विक्रमवत के लिए हैं। लेकिन घाप—घार सिर्फ”

“कह चुकी हूँ मैं इनसे कि हम बरबानियों का मन समझ होने के लिए नहीं होता है। फिर जो पूछते हैं तो समय राय बेनी होती है। नहीं तो पूछने का मतलब क्या है ?

“घाप भी घजब है मामी जी। अभी कह रही थीं मुझे कि घाप बेरी मयज नहीं कर सकती है और मुझे चाहिए कि मैं विक्रम को बड़ाये मैं मकर हूँ और हम कोष सब चुनाकों से मुह मोड़ लें। और सब ?”

“यह तो मैं मानती हूँ कि चौहदों में या दूसरे तरह के बड़प्पन में प्रसन्न मुल नहीं है। पर तुम सबों का उपर से मन हटे न ? इटता है सब सब बढ़ने की मूर्ख नहीं रहती या घम्बर सकत नहीं रहती।”

“मुझको कह रही हो यह तुम, राज ?”

‘सबको कह रही हूँ।’

ठाकुर बोले “छोड़िए। यह कहिये कि कल वहां क्या कुछ हुआ ?”

“बया होता बही देस-बिरेष की बातें। पर बी० पी० साफ रिल के धारपी हैं। लेकिन बुनिया टेड़ी है। देसना है कब तक बनेगा।

“कब तक बनेगा ?” ठाकुर ने बमककर कहा। “माने ?”

“माने कुछ नहीं। राजनीति का नया घनट-पलन हुआ ही करता है।”

“तैर जी यह बताओ बड़ बाफ घाफर कर रहे थे कि नहीं ?

“बहुत माफ ती बीने करते। इन्कार मुनने को करते? बाकी सब”

“तो ठीक है सहाय हमको घब बनने दो।”

“नहीं ठाकुर” यमों राजी बहती यमों नहीं हो कस बने आएंगे।”

“तुम वहीं से आ रही हो ? नास्ते पर उनके साथ थीं ?”

“हां तुम नहीं तो मुझे साथ लेना चाहिए था।”

‘बह तो ठीक है। लेकिन जसो मैं भी वहीं चलता हूँ। यह सब वहीं लाने को कह दो। ठाकुर नाचक तो नहीं है ?’

उतने तो नहीं। पर—निघण्टू है।

मैं अपनी जगह खड़ा हो आया था। राजी पहले से खड़ी थी। बी हुमा जाने कैसा भी हुमा। मैंने कहा “एक बात पूछू राजी ? पहले तुम मात गई थीं धब धनमनी हो। सोचो तुम्हारे बिना मेरा कैसे जसेपा ?”

राजी ने टाल दिया कहा ‘व्यों जस नहीं रहे ठाकुर की तरफ ?’

“जस रहा हूँ। पर तुमने बताया नहीं।

“क्या बताऊँ। छोड़ना मुझे कभी सम्झ में नहीं आया। तुम्हें उठी का महत्व बीस रहा है। धब बताओ क्या बताऊँ ?”

“मैं मतलब नहीं सम्झ तुम्हारा।

“यहाँ बहस करोये ? मैं उन्हें नास्ते के बीच छोड़कर आई हूँ। यह देखते हैं जसो।

हमारे पहुंचते ही ठाकुर महारंज सिंह लड़े हो गये।

‘आपो सहाय। नहीं उबर नहीं उबर बैठो।

“मनता हूँ जो देखि की गाड़ी से तुम जा रहे हो ठाकुर।”

“हां जा रहा हूँ।

‘महीं नहीं आओये।’

“तुम टुकुम तो मिनिस्टर जैसा जना रहे हो। जस शाम सबमुख बस आये हो क्या ?

“नहीं तो पात नहीं मानोये ?

“कैसे मानूंगा ? मजदूरी के बिना कभी नहीं मान सकता हूँ।”

मेरा जी जसका था। नीकर के हाथ से मैंने गुरु मैज को निकल लगा दिया। नीचे गुरु मैज पर रती घोर कहा “ठाकुर, कुछ लय

घाय गई तो ।”

“तो तुम ठहर रहे हो, ठाकुर ? यह ठीक है । सप कहता हूँ महादेव, कोरी बातों और किताबों पर धमर में ऊंचे उठे रहना अब मैं नहीं चाहता हूँ । पाँच के नीचे बनीम चाहता हूँ । इसलिए तुम्हारी तरफ हूँ । मुझे अपने यहां आकर रहने की दावत तुम नहीं दे सकते हो ?

“ना तुम्हारा मन नहीं लगेगा बाबू । जो अनुमत्त पा जाता है वह फिर कहीं का या किसी का नहीं रह जाता है । मैं इसमें क्या करूँ ? हमारी राजधानी अभी भी इसमें कुछ नहीं कर सकती । बकर रोग का बीज तुममें पहले भी रखा होगा नहीं तो बीरेस्वर अब ठक काम का घायमी न होता ?

ठाकुर ने यह सुखती रंग पर हाथ रखा था । मैंने कहा ‘ठीक कहते हो, ठाकुर । बकर मेरी ही मसती होगी । बीरेस्वर सब कुछ है ऊंचा पड़ा-लिखा है । कोई ऐब नहीं है । फिर भी

बीरेस्वर की बात घात ही राजी बमक आई थी । वह मानो पबरा गई थी । उठकर आई और मेरे कंधे पर हाथ रख कर बोली ‘देखो, फिर बही ! मैं कहती हूँ तुमने क्या नहीं किया । फिर तुम बार-बार मन में स्मृति किस बात की लाते हो । बिबाठा भी तो कोई है । बही नाम ही तो हम क्या कर सकते हैं ? तुमको मैंने बताया नहीं था बीरेस्वर बयतीर नहीं है ठाकुर साहब के कारण पर है और खुश है ।

सब क्षण मैंने अनुभव किया कि मैं कितना घनाबदयक प्राणी हूँ । मानो ऊंचारमों पर मुझ घलंग छोड़ दिया गया है । अब घायमी मुझ-मुझ मेरी निगाह की भीड़ें न हों । मैंने ठाकुर की तरफ जिस निगाह से देखा, उसमें आभार और अनुभव रखा होता । ठाकुर गरम हो घाय और बोले, “देखो सहाय ! बीरेस्वर को तुमने घपना-घपना बेटा बहकर बिगाड़ लिया । तुम्हारी मयता ने उसे बिगाड़ा । उसे घायमी बनने देने की बकरत थी । तुमने हमेशा उसे साये में और ससामती में रखा । धरे, सामने मुद्रिक्रम नहीं घायमी तो घायमी मैं कब कैसे पैदा होगा ? उसका मन उठता है

“वह तो कम ही जा रहे थे । मैंने अपने ऊपर भोम्ब लेकर एक दिन ठहराया था । लेकिन तुम्हारे बीच मैं न पहुँची”

“अभी बात है ठाकुर, जैसा तुम सोचो । मुझे अंधार में छोड़कर जाना ही चाहते हो तो चामो ।

राजी बोली “ठहर न जाएँ ठाकुर साहब, एक दिन धीर ?

“भाभी जी, ठहर तो बस दिन बाढ़ कह तो चरनों में वहीं रह जाऊँ । पर मैं इस बीच को जानता हूँ । जब विमान में अमृत बैठने लग जाता है तो बाकी सब सोम एक आदमी के लिए बिरता हो जाते हैं । मैं तो सोचता हूँ कि ऐसे आदमी को अपने छोड़ देना चाहिए । करे अपने जी की धीर रहे मगन जैसे जाहे । धीरों को भी उससे क्या । मैं तो कहीं भाभी जो आप भी अपने काम से काम रहो । रात पर भाता होया इन्हें तो आप आवेंगे । न जाएँ तो मतके, अपने को मतलब ? सुना भाभी जी बस्कि आप भी जाने बीजिये सब क्या कहूँ । बस्कि पन्नाह-बीस रोज के लिए आप भी हमारी तरफ आ जाएँ । फिर यह निबटरे अपने अंतर्यामी से । पूरी फुरकत से आत्मध्यान करने धीर उसमें जोत बनकेगी जो ये चाहत है । इम-तुमको जब धार करेते तब सेवा में हाजिर होने का मौका हाया । इससे पहले भाभी जी हम तब इनके लिए फलतूँ फलतूँ । हमभी आप ?

मैं सुनता बीठा रहा । कुछ कुछ न लग रहा था । बस्कि स्वर की आत्मीयता पर जमते कुछ अन्धा ही लग रहा था ।

राजी ने कहा “बात तो आप हीक कहत हैं ठाकुर साहब । कम तक ठहरिये तां शायद सबमुच सब जतां नमू । साह्य टिकट अपना—कहा है ?

सब कहती है चलोदी ?

“हां सफ़ता है । आप तो ठहरने की हमी भरिये । साह्य टिकट, सोत्रिय ठहरवाएँ बता हूँ ।

कहिये, सहाय साहब ! मुम्ब होय फिर न बीजियेया अगर भाभीजी

बाहरी आदमा होऊं। राजमी हाथ पकड़कर मुझे ले जमी घौर में वहाँ से निकाला गया था साम बल दिया।

रास्ते में राज ने बताया कि कबर साहब घाम को बा रहे हैं। मिन सेना।

“भामी हैं घर में ?”

“वे तो देख लो। होने घामब।

राजमी तो अपने काम से गई घौर में, मजु वाले कमरे में घामा। कबर साहब सोफ़ा पर फँस बैठ ने घौर पाइप पी रहे थे। मंजु घौर तमाटा पीर-बस्त संभाल कर पैर-कर रही थीं। कबर साहब उठकर एक तरफ़ घामब पाइप छिपाने जले गये घौर मुझे मंजुमि के साथ तमारा को इस तरह व्यस्त देखकर कुछ बिस्मय हुआ। मंजु बोसी ‘बाहू भी हम घाम बा रहे हैं।’

“एकएक। मुझे तो किसी ने बताया भी नहीं। भामी तुम्हारी भामी ने कहा।

‘घामको हम बीबों के लिए फुरसत कहाँ रखती है ?’ ✓

“बका न कर मंजु। जानता हूँ बड़ी सेफ़रार है तू। लेकिन मैं समझता था तुम सोम भामी बस-बाएह बिन ठहरने वाले हो।

“हां वह तो था लेकिन घब इन्हें बकरी काम भा गया है।”

“तो वह बा सकते थे। उनका तो यही हाम है। आज यहाँ तो जाने कल कहाँ। लेकिन तुम ?

“नहीं बाकुड़ी जाना होगा। काम के घताबा बच्चे बघाहरे पर घाने वाले भी हैं।’

“वे तो यहाँ भी भा सकते हैं !’

“भामी भी यही कहती थीं, लेकिन ।

‘तो साफ़ क्यों नहीं बहती कि तुम्हारा मन नहीं है। उसमें लेकिन क्या ?

“हां यही समझिये

घौर घासनाम तक जाता है पर करने की बात घाती है तो हीनता हुआ भी जाता है। यह सब तुम्हापि बहीसठ जो सब किया-बराउ उसे धेरे गये। लेकिन मुनी ! अब यह मेरा बैठा है घौर तुम्हें फिर कर करने की जरूरत नहीं है। मुनते हो ? तुम कोई नहीं होन उसके। मैं डाटूना पीटूना जो चाहे करूंगा। निबन्ना मुझे है। तुम अपनी हमदर्दी से कर बस घामे न घाना। उसको मर्द बनना है। तुम लोगों ने अब तक उसे घण्टा घण्टा बनाता आहा है। पर अबभी यह होने घौर बनने के लिए होता है। बनाया जाना किसी को पसन्द नहीं होता। घौर तुम "

तो ठाकुर राजधी ने कहा "तुम भी उपदेश देते हो ! घण्टा है इनको सभी उपदेश बें तो घण्टा ही है।

"नहीं-नहीं भाभी जी !" ठाकुर एकदम लम्बित होकर बोले "मैं माफ़ी माँगता हूँ। बीरेस्वर की बात घाई इसमें बेघाबी हो गई। घाप मोयों का उममें बरार कमूर है।"

"मेरा है इनका नहीं ! क्या मैं उसे चुप-चुप दिये जाती थी- घण्टा मैं इन ठिकनों का इंतजाम तो करूँ। नहीं तो चुर्माना पड़ेगा। क्यों जी घाप बनते हैं कि बँझे ?"

राज ने पड़पान लिया था कि मैं भाबुक हो रहा हूँ। इसलिए जानती थी कि मझे घामे बड़ा बँटने देना नहीं चाहिए। उठने हुए मैंने कहा, 'ठाकुर महारैब सिंह तुम जाना टाल कर एक दिन ठहरे हो इसका घहसान मैं भ्रमूगा नहीं।'

"किमना घण्टान एम ठाकुर का। कहवर ठाकुर महारैब सिंह विसगिलाकर इमि। बोले, "बन ठाकुर कीई तो है जो तेरा घहसान मानता है ! अब तो हीनता एम कि निफारिसा हो जाएगी। घौर तु नरक नहीं जाएगा !"

राजधी न कहा मैं घपी घाँ ठाकुर साहब। बीरेस्वर के रिस्ने की बात भी तो है न ?

गुनकर मैंने उन दोनों की तरफ देगा। घानी मैं इम नामने मैं

बड़ी देकते हुए वे बोले 'सब हो गया ? अब चलना है कि नहीं ? नहीं तो वहाँ इन्तजार होमा ।

कहल के बाद मामो उम्हेंनि मुन्ने देखा । बरा स्वर मध्यम करके कहा हम सब घोपहर का भोजन भक्षोका में ले रहे हैं । एक मित्र इम्पति प्रामन्वित है ।

मैने कहा "तब तो समय भी हो रहा है । चायब लड़कियों की फिर तैयार भी होना है । तो घाब ही घाम बा रहे हो ? देख सो जकरी ही तो । जाहे तो प्रंजु को दो बार रोज रहने देते ।

'अमी तो बाबूजी जाने बीबिए । फिर घा बाएमी—अब घाप कहेंगे हम सभी घा सकते हैं ।"

"हां, बकर-बकर' कहहर में वहीं कुछ देर घसमजस में लड़ा रह गया । कुंवर साहब से प्रौपचारिक ही एकाध बात हो पाठी है । वह घसन्नुल है, सट्ट है । एक मामले में मैं उनकी मदद नहीं कर सका हूँ । तब से उनका खयाल है कि मेरा सम्बन्ध उनकी जैसी प्रतिभा के लिए सायक के बजाए उफ्टे बायक हो रहा है । मैने कहा "तो घाप भोग/ तैयार होइये घसोका के लिए । देखो भई हो सके तो जिसमस की छुट्टियों में बाल-बच्चों को दो-बार दिन के लिए साय भेते घामा । भाउ करना, सब ठीक बन रहा है ? नई मिम पय गई है न ? प्रोइवदन-सायब इन दिनों जानू हो जाने बामा बा ।

'जी हाँ । सब ठीक है । अनबरी में माल बाहर जाने मग बायेया । घापकी वृपा है ।"

"घमछा तमारा मैं बनू ।"

तमारा मैं हाथ जोड़े घीर जैसे कि कंठ में घाई बात को समने रोका । मुन्ने मया कि युबकों की दुनिया घाये निकल रही है । जैसे इमारी दुनिया के साय बनरा परिचय कम होता पा रहा है घीर कुछ पनरा प्रमद मर्बया घसग मूस्यों पर नया बनता बा रहा है । "बोसो, बोसो कुछ कहना बाटनी हो ?

तमारा बोली "सब बात बीसना चाहिए, एंजिल डामिन ! ठीक बात क्यों नहीं बोलती हैं । इनका क्याल है, मिस्टर सहाय कि भाप यह डेरा नहीं रखने वाले हैं ।

मैंने अपनी भर्बें समेंटी । मुझे बरकी बातीं में बाहर बातीं का बखल घण्टा नहीं बगता है । मैंने तमारा को चीना बबाब नही दिया बा, और तमारा ने निरबय ही इस पर बक्य किया । मैंने कहा, "अंतु, तुमको मकान का खयाल है ? बात ठीक है कि यह कोटी बाबर नही रहने वाली है । लेकिन तुम कोटी में घाती हो या मां-बाप के पास घाती हो ?

"भाप तमारा की बात पर न बाएं, बाबूजी । क्यों री तू क्या बक बाया करती है ?"

तमारा ने कहा "मिस्टर सहाय ! भाप सबसे घाघा करते हैं कि बि कर्तब्य न रहें । पर कोई कर्तब्य में नहीं रहता है । सब भीतिक परिस्थिति में रहने हैं ।

"तमारा मैं तुम्हें घाटिस्ट समझता बा कि जो सब को अपने भीतर व्यादे मानने हैं बाहर उतना नही । फिर पर का एक कामबा होता है, उसमें बाहर बाप को नही घाना चाहिए ।"

तमारा के लिए माको कुछ यह बात नई थी । वह मुझे बैलती रह गई और बोली "मारत में परिवार विठा का स्वरू होता है । यह घाबर मुझे भूतना नहीं चाहिए बा । भाप उस परम्परा में से घाये ही सकते हैं, पर बापी मांगती हैं कि मैंने भाप लिया बा कि भाप उसके घनीन बनकर बि रहने होंगे और नम्या का हक भी बगबर मानते होंगे । मैं बाहर की बही हूँ एंजिल की विन हूँ ।

"तुम घाटिस्ट हो और तुम्हें हक है कि तुम न सबकी और मरी बोगिसा भी नही होमी तुमको यह समझाने की ।

तमारा विबिन्न हंसी । बड़ी बिबस्त वह हंसी थी और उसमें व्यंन बा । तथा कि उसने पीधे से कहा कि भाप बड़े बन रहे हैं, लेकिन वह स्पष्ट मुनाई नही दिया । क्योंकि सभी बंबर साहर बाहर से बा ये से ।

बड़ी बेखत हुए वे बोले "सब हो गया ? अब चलना है कि नहीं । नहीं तो वहाँ इन्तजार होगा ।

कहने के बाद मानो उन्होंने मुझे देखा । बरा स्वर मध्यम करके कहा हम सब बोपहर का जीवन प्रसोका में ले रहे हैं । एक विश्व सम्पत्ति प्राप्त है ।'

मैंने कहा "तब तो समय भी हो रहा है । शायद मकड़ियों को फिर तैयार भी होता है । तो घाब ही घाब जा रहे हो ? देख सो बकरी हो तो । जाहे तो यजु को दो-चार रोज रहने देते ।

'धमी तो बाबूजी जाने बीगिए । फिर भा जाएंगी—जब घाप कहेंगे हम सभी घा सकते हैं ।"

"हाँ, जकर-जकर' कहकर मैं वहीं कुछ देर घसमसस में बड़ा रह गया । कृंर साहब से घीपचारिक ही एकाध बात होनी पायी है । वह घसमसुष्ट है इष्ट है । एक मामले में मैं उनकी मदद नहीं कर सका हूँ । तब से उनका खयाल है कि मेरा सम्बन्ध उनकी बेसी प्रतिभा के लिए सापक के बजाए उस्टे सापक हो रहा है । मैंने कहा "तो घाप सोम तैयार होइये प्रसोका के लिए । देखो मई हो सके तो तिमसस की घुट्टियों में बाम-बच्चों को दो-चार दिन के लिए साब सेते घाना । माफ करना, सब ठीक चल रहा है ? मई मिल जय मई है न ? प्रीइकपन-घायब इन दिनों जानू हो जाने जाना या ।

'जी हाँ । सब ठीक है । जनवरी में मास बाहर जाने मन जायेगा । घापकी कृपा है ।"

'घच्छ ठमाठ मैं चमू ।

तमारा मे हाप जोड़े घीर जैसे कि कठ में घाई बात को उनसे रोका । मुझे लगा कि मुबकों बी दुनिया घापे तिमस रही है । जैसे हयापी दुनिया के भाप जनता परिषय कम होता या रहा है घीर कुछ घमका जमठ मर्बया घनम मूर्त्त्यों पर गया बनता जा रहा है । "बीतो, बीतो, बीतो कुछ बहना चाहती हो ?"

“नहीं, कुछ नहीं। सिर्फ यह कि पिता के गाँठ घाप तुम बाँधे हैं कि अपना धर्मने हक में इच्छीर बप की धरस्वा में अपनी धर्मन हैसियत रख सकती है। आप सोच धायर धर्मन व्यक्तित्व तक उसका न मानना चाह—।

मैंने दासना कहा, कहा, “तुम लोगों को हम से धार्ये तक देवना समारथा है धीर में माफी चाहता हू।”

तमाप मान्य नहीं क्या चाहती है। धायर धर्म स धीर कृपद साह्य स निभता चाहती है धीर मुम्भ विदेव वास्ता नहीं चाहती। लेकिन मरे मन में यह-यहकर हावा है कि वह निभता यह ही न हो, वास्ता उध यह कभी मुम्भे न चाहती हो। बौद्धिक बहुते के लिए जो कभी-कभी नाहक बात उठा सिवा करती है सो मैं उसका सीबापन मानता हू। कहीं ऐसा तो नहीं कि सीबापन सचष्ट हो।

बौद्धिक धायर तो भागुप्रताप का बरुपि एक पत्र का धीर बाह्य बहार के लिए इन्तजार में बड़ा था। पत्र न रोप था कि बी० पी० के मिलने के बाद मैं सीब धर जसा धायर धीर उबर भी फलस सम्पर्क नहीं किया। बी० पी० का सम्बेध है कि मेरा उत्तर जान कर उन्हें बताएं।

मुम्भे यह बहुत नासवार हुआ कि बी० पी० कहना है वह बी० पी० भागुप्रताप की मार्कत क्या जानना चाहते हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि बीच में भागु प्रताप ही धरना कहते धीर धायर्य बड़ा रहे हों। मैंने फल बढाया। कहा, ‘क्यों भई, ऐसा नापजी भी उठ से मंत्री जाती है।’

“सहाय यह न समझना कि वरग बिना डार क उकती है। तुम डोर काट कर उकना चाहते हो क्या ?

“मैंने वरग तुम तुम काट नहीं चुक हो, क्यों ? उतकी फिरर बौद्धो।”

“सहाय तुम्हें कति बताऊ कि बी० पी० धर हम सोच फिटना धीर फिट लखे धीर दास रहे हैं। नहीं तो बी० पी० के पास धीर बिरुप है। ऐसा न समझना कि तुम्हारे बिना उरका काम नहीं चल सकता है।

यह तो हम कुछ लोग हैं जो तुम्हें जरूरी मानते हैं। उन्हीं से तुम किनारे किनारे असोने तो कुछ बनने वाला नहीं है, समझ सेना। यही बताओ, क्या हुआ है ?'

“मई प्रताप, तुम्हारा जोर कम तो नहीं है। इसलिए बी० पी० भी क्या करें। संकेत में उन्होंने कहा धीर में बेच सका कि साफ है कि मेरा ही प्रबलम्ब उन्हें नहीं है, उनके पास विकल्प भी हैं। सब यह प्रताप कि जोर स काम नहीं होता है। मन की मजबूती हो तो ही बात है। वह कुछ मानूम नहीं हुई।’

“तो मानूम होता है फिर तुम्हारे घर पर मुझे बसक बेनी होमी। घरे मई राजनीति में जोर ही बना करता है, प्रेम नहीं बना करता है। धीर देखो एक बात कहता हू। कृंवर साहब स तमारा की दोस्ती बढ़ती जा रही है। काफी तुम्हारे घर पर उसकी धाबाजार्द सुनी गई है, यह मुनासिब नहीं है।

“घबडा घबडा। कृंवर साहब घाम जा रहा है सब जा रहे हैं। पबराओ नहीं।’

‘तो सुनो, जाय तुम्हारे यहाँ साके चार बजे। ठीक ?’

‘ठीक ! जोर मैंने फोन बन्द कर दिया।

चार

वही दिन है। शाम हो गई है। कुछ सही है। धीरे धीरे में बड़े मासूम होता है। कृष्ण साहब को घनी बिदा देकर घाया हूँ। राजभी भी साब भी। पंडु ने पैर छुए थे धीरे कृष्ण ने नमस्कार दिया था। कार के खाना होने पर हम चले आए, लेकिन राजभी बीच से अपने काम के लिए निकल गई। ठाकुर साहब घर में हैं न। उसी दिनविने का कुछ काम रहा होगा।

घरेला हूँ अपने कमरे में। बड़ा बेमाना लग रहा है। वही कुछ समझ नहीं पाता। जाने क्या है घायमी का रहा है। धीरे धीरे जी कर मरता जा रहा है। कुछेक बरों में जैसे इस मुझको ही चले जाना है। सभी को जाना है। मायु के इन किन्ती के बरों में घायल क्या है जो घायमी चाहता है। त्रिपटे लिए घायल प्रवाह में तथा रहता है? रहते हैं मूम में अस्तित्व है। जमी को खाना धीरे बनाना है। इन घायल पर लोगों ने जीवन की समझ है। समझया भी है। लेकिन अस्तित्व स्वयं अपना प्रयोजन हो तो अन्त में मृत्यु क्यों आए? इसलिये जयता है कि अन्तिम प्रयोजन को मृत्यु की अस्तित्व की भाषा में खोजना होगा। निर की समाप्ति धीरे अर्थल-विगर्जन की भाषा में।

लेकिन मैं यह क्या सोच रहा हूँ? क्या क्या हो गया? ताई पाठ? क्या है घाना घाय नहीं मिलेवा? राजभी अब तक कहाँ है? यह टीक नहीं है।

सोचता हुआ मैं सीमा ठाकुर के कमरे में पहुँच गया। वहाँ राजभी नहीं थी और परसंग पर तकिये के सहारे बरफ उठ्यं कर बैठे हुए ठाकुर साहब सबेरे का प्रसन्नहार देख रहे थे। भैरे घाने का उन्हें पता नहीं था। पीमे से स्टूल खींचकर मैं बैठ गया। कहा—“कहिए, किस बाबर में गिरफ्तार हैं ?”

“घोह ! घाघो कब घाये ?”

“घाकर बैठा हुँजाने किन मुहलों से। घाघकी होय भी हो !”

“होगा सबमुच नहीं है—तुमने जो सब छीम लिया है। यह बताओ तुमने मुझे रोका किस लिए ?”

“जमी के लिए घाया हूँ। राजभी कहाँ है ? वह भी होयी तो टोक रहता।”

“नहीं घपनी बातों में उन्हें बीष में न लो। वह तो, जो तुम करोमे सब में गबी मिलेयी। तुम उनके परिये मुझे कमजोर बना बैठे हो। वह ता देवी है और तुम—इसलिए घाने की चाहे जो करने की आजार मान लेते हो। जानता हूँ तुमने कभी कुछ जमा नहीं किया है। इन्वीरेंट पालिमी तक नहीं ली। अब यह छोड़-छाड़ की बातें कर रहे हो—कुछ है तुम्हारे पास कि जिसके बल-बूठ बूद रहे हो ?”

“वही तो तुमसे बहने घाया या ठाकुर। पालियामण्ट में हमने पासा घण्टा मत्ता घपने लिए तय कर रत्ता है। उससे पहले जानत हो और भी ठाठ प। इस सब के लिए बताघो में करता क्या हूँ ? जो करता हूँ, उस कोई काम नहीं वह सक्रता।”

“जी हाँ ! और वह क्या है जिसे घाप काम कहेंगे ? और पालिया मैल छोड़कर करने की तजबीज कर रहे हैं ? कोई पट्टी कमाई का काम है ?”

“तुम्हारे पाबित होकर रहना चाहता हूँ। जमीन में बच पसीना बामूंगा और मन की तमत्सी रहेगी कि पसीने का ग्रा रहा हूँ इसमें बा नहीं।”

“बहुत ठीक। जगज ने हल कमी हाथ में सम्माला है ? जमीन गोड़ी है ? अपनी उमर को देखिये और बदन को देखिये और खाम-क्यासी यह सब छोड़िए। मुझ तक से तो घाब होता नहीं है काम किसानों का और धान करेगे बाहू लुब।

‘ठाकुर ! हम लोग इतने बरों से जिनके हित की बात उठते आये हैं, उनके हित-अनहित को समझ क्या सकते हैं, जब तक उनकी जैसी हासल में अपने को न रवें। ऊपर से उपकारक-सुधारक बनने से तो नहीं बसता न ?

‘अच्छी बात है। तो ब्योहार की बात कीजिए। बोलिए कितने बीजे जमीन सीजियेगा ? और किस किराये पर ?

‘तुम मजाक न समझे ठाकुर !

‘बहुत देखा है मैंने तुमको सहाय ! तुमसे वह काम नहीं होगा, नहीं होगा नहीं होगा। सबको अपना काम सजता है। बोलने बठाने से असल तुमसे कुछ-का काम नहीं होने वाला है। और अगर एक उसी काम के भायक तुम बने हो तो जबरस्ती अपने से नाराज न होपी। जैसी नाराजी में भी रस मिलता है, तपस्वी पसी रस के स्वाद में उपस्था किया करते हैं। तुम्हें भी प्राथिरी बचत यह तपस्या की बात पून्नी हो सकती है। ठीक या सब, अगर मकेले होते। पर जिम्मेदारियां हैं और मांभी होने के लिए सिर्फ गांधी से तुम नहीं हा।

मैंने ठाकुर को देखा। बैलाग उनका बेहूष था। जानता था कि जारी सगरी बहु सधरों में गर्ब कर देते हैं इसलिए अन्दर से एकदम कोमल हैं। लेकिन सचमुच क्या उनकी बात में सचाई भी नहीं है ? मैं थोड़ी देर इती सोच म रह गया कुछ बीला नहीं।

ठाकुर ने ही कहा— बरों, सोच में मुह सटका लिया ? मई, सोच-त्रार की क्या बात है ? नहीं है मन धब महां, ती जाने दी। जामी बी-त मुमस सब बार्ने पहले ही कर सी है। जितनी जमीन बाहो जर कर-ठ जाना। एक-दो सान सचमुच पी है तो देत लो प्रयोग करके।

उसमें परेशानी की क्या बात है ? कह दिया है मैंने मामी जी से कि
 व्यकुर किसी तरह तुम लोगों से बाहर नहीं हो सकता। यह तो हुई
 बात की बात। लेकिन देहाती बोली हमारी माफ करना। धम्बल बजें
 के तुम महमक होये घयर मन पर घपन काबू नहीं रखोले घौर हमारी
 मामी जी को कष्ट दोगे।

मैं ठाकर को प्रत्यूर्वक देखा। बककर पूछा—“कष्ट की बात
 कह बहूदी की क्या तुमसे ?

“पामन हुए हो सहाय। कष्ट की बात कह बहूदी ? घब तक
 उम्होंने क्या पाया है सब कहना। कष्ट के सिवा कष्ट घौर तुमने दिया
 है उम्हें ? घौर तुम घपन से पूछो कि कमी कष्ट उम्होंने मामा तक है ?
 इसीलिए तुम्ह मात्र बके सोचना चाहिए हमसे पहले कि कुछ करो।”

मैं ठाकर को देखता रह गया। राजभी को लेकर जममें फिलती
 बुझता हो जाती है। मैं प्रयत्न कर सकता हूँ उस भाव को। प्रयत्न कर
 सकता हूँ राजभी की भी कि जिसने यह बन ठाकर का दिया है। उसने
 मुझसे कुछ छिपाया नहीं है। मैं मानता हूँ कि स्त्री के प्रति पुरुष में
 पुष्पोचित भाव भी जसे तो कोई घनहोनी बात नहीं है। लेकिन प्रयत्न
 करनी होबी दोनों की राजभी की घोर ठाकर की कि दोनों मुपासते में
 नहीं है। फिर भी दोनों मर्यादा में हैं। इसीलिए यह बुझता है जो कर्तव्य
 में से निरी नहीं जाती है। जममें स्नेह का पुट है इसलिए कठोर नहीं है।
 इस कारण वह बुझता दृष्ट नहीं सकठी वह पतिल का भी मुकाबला कर
 सकती है। उस कहीं लज्जित होने का घबकाव भी नहीं है न पीछे
 हटने का।

मैंने कहा—“मैं जानता हूँ ठापुर कि मेरा मन खेया तभी उम्हें
 घसमी कष्ट होया। बाकी बातें खपटी हैं घौर मैं नहीं मानता कि तुम
 परी नहीं जानने हो।”

ठाकर बेबैन शिगार्द दिये। ठकिया उम्होंने छोड़ दिया। पांख परसंग
 से नीचे तिय घौर वह सीधे बैठ घाये। बोले—‘तुम पति हो सहाय,

इसलिए वह कुछ नहीं कह सकती मैं कुछ नहीं कह सकता। इस हिसाब का नाम न सो ज़्यादा।

मैंने हसकर कहा— तुमने कहने में कमी कमी नहीं भी ठाकुर और बीरेबर जब तुम्हारे पास है और राजभी ने जब तक मुझे इसकी खबर तक नहीं दी। बीसो तुम ज़्यादे हो कि मैं ?

ठाकुर की मरी और खबर मूँछें थी। उनका मुँह कंप घाया मूँछों के बाल हिले कमपटियाँ भी हिलने लगीं। मानो सहसा उनका घना जब आया हो और बेहुरा टूटकर रो घाना बाहूठा हो। इसी समय राजभी ने धाकर कहा—“तुम यहाँ हो ? नीता का फोन है।

“नीता का ?

“हाँ।

“कब घाई, कौसी है ?

‘कहती थी आज बंटे रहने ज्येन आया है और होटल पहुँचते ही फोन कर रही हूँ। रखा है फोन—बात कर लो।

“घण्टा ठाकुर साहब—

“आना लय गया है मेज पर, फोन से खबर ही आ जाना।

ठाकुर बोले नहीं और दानों की छोड़कर वहीं मैं घाया और फोन में कहा—“नीता ! यह क्या एकदम आसमान से ?”

‘हाँ। लेकिन टपकी नहीं हूँ बाकायदा आसमान से उतर के घाई हूँ। वह भी है।

“कब तक ठहरना होगा ?”

“कल शाम लौट पाएँगे जबर शाम बात न हो गई।

“तो—?

“बताओ तुम्हीं।

“घण्टा, मैं फिर फोन करूँगा।

‘क्यों कैसे बीत रहे हो ? सब ठीक तो है ?

‘आना मेज पर लय गया है जा रहा हूँ। बात फिर हीनी।

तुम—सब ठीक-ठाक है न ?

“फोन पर क्या भाकर देखना कि किस कब्र ठीक हो रही है ?
 पुहरी हुई जा रही है सब ।

‘ना ना देखना यह गजब न करना ।
 ‘बाहरी है कि किसी की मजूर लग जाय । नहीं तो—सायद दूसरी
 तरकीब नहीं है ।

पण्डा नीला फोन करेगा ।

“फोन क्या बस बजे तो यह बत्ते ही जायेंगे ।

‘तो तभी फोन करेगा ।”

क्या बदबतती है कि फोन किया तो तुम से नहीं राज मिली ?
 बिगड़ी तो नहीं भी ?”

“नहीं नहीं नहीं । कंसी बात करती हो ? पण्डा नीला ।”

मैं म्पारह तक यहीं हूँ । “सुना, म्पारह तक ।”

मैंने सुन लिया ‘म्पारह तक घोर घाने की मेज पर घाया । बात
 वहाँ बिनोप न हुई । नीला का प्रसंग इष्ट न था घोर संगत घारम्भ
 उसी मे हो सकता था । राजधी को भी मंजूर न था कि किसी नीला
 की बर्बा ठाकुर के सामने हो । ठाकुर को मैं जिस बिमोर हातव में छोड़
 घाया था उसके बाब उनकी घोर से बर्बा का घारम्भ सुरिकल था । उस
 सर्व-हातव को तोड़ते हुए मैंने कहा—“राजी ! तुम ठाकुर साहब से

ठीक बिठा सेना कि हमको उनके इलाके में पहुँचना है सो कैसे क्या होया ।
 घिर्क तारीख तय करके सूचना हमें देनी रह जायगी । दो-चार दिन मैं
 घायब तारीख भी तय हो जाय” “वा ऐसा हो सरता है कि तुम दो-

एक रोज पहले बनी जायो । मैं यहाँ इतने मुठकरँक काम निबन्ना सूया ।”

राजधी ने सुन लिया बबाब नहीं दिया । ठाकुर भी नहीं बोले ।
 मैंने कहा—“ठाकुर साहब ! बिदेबर मे हम लोप चलत चलत ही
 रहे । सब घायके यहाँ मीका होया कि उसके मजरीक था सबे । यह एक
 बड़ी बात होयी घोर छूटा फज पूरा हो सकेगा ।

ठाकुर ने मुझे देखा और अपनी ओर से कुछ नहीं कहा।

बड़ा अचरब मामूम हो रहा था यह कि मैं ही बोलता जाऊँ। इसलिए अचरब राजी की ओर मुखातिब होकर कहा—“राज ठाकुर साहब कस घाम जा रहे हैं न?”

राजकी ने बीमे से कहा—“हां।

“तो दिन में हम सब का तप रस सकते हैं नीलिया के साथ?”

‘मेरे लिए तो मुदिकल होगा आप जले जाइएगा।

‘तो मरे ही लिए जाना कौन बरूरी है। लेकिन वह सोय घाम को सौट जाने वाला है।

“इसीलिए तो कहती हूँ कि आप को बकर जाना चाहिए।”

‘मह छोड़ो। देखा जाएगा। ठाकुर साहब आप नादान हैं?”

‘नहीं नादान नहीं हूँ। आपका मन आपका है उसमें माराज होने की मेरे लिए क्या बात है। एक धर्म कर सकता हूँ? पालियामेन्ट से आप अभी स्टीफन मठ बीजिये और धाकर जमीन के साथ ठजुर्बा कीजिए। मन सब काम तो ठजुर्बा जारी रखिये और फिर जाहे तो पालियामेन्ट भी ठर्क कर बीजिये। इसमें तो कुछ हरज नहीं है क्यों मामी जी?

राजकी कुछ नहीं बोली।

मैंने कहा—“क्यों राज क्या सोचती हो?”

मैं सोचती हूँ कि ठाकुर साहब को सब बीच में कुछ नहीं कहना चाहिए।”

ठाकुर साहब जसाह से बोले—‘टीर कहती हूँ मामी जी आप— कि मुझ कुछ नहीं कहना चाहिए। मैं कौन कि दखल हूँ?

राजकी का रग मुझे छू गया। उसका मनमनापन जैसे मुझ पर कमियोज डाल रहा हो। मैंने कहा—“ठाकुर साहब! आपकी सलाह ठीक है। यही होना चाहिए।

ठाकुर ने मेरी ओर देखा। पूछा—“आप लोग बीरेबर के साथ रहे लड़ने फारम कर?”

“क्यों नहीं रह सकते ? बकर नहीं रहेंगे । क्यों राखी ?”

“बीरेबर फिर वहां से भी बसा न जाय ?”

“मिरी बजह से बसा जाएगा ?

“हो सकता है ।

ठाकुर साहब ने कहा—“मैं भी समझता हूं प्रलय इतनाम ठीक होगा । बीरेबर बहुत चिन्ता हुआ है आपसे ।

“ठीक है, जैसा तुम्हारी भाभी कहें ठाकुर, वैसा ही ठीक है ।”

कहकर मेरा चित्त बिपाद से मर हो घामा । जाने की मेज से मैं वहीं अपने शयनकक्ष में आ गया । ठाकुर अपनी बजह जैसे पये धीरे राखी को भी कुछ काम रह गया होगा ।

इस बृत्तान्त में मैं तीसरे पहर की बात भूल गया हूँ । मानुप्रताप ठीक बक्त नाम मांगते हुए आ बमके थे । बिस्मय हुआ देखकर कि वह बी पक्षियों की० पी० के हाथ की लिखी मेरे लिए आए थे । पक्षियों की कि मैं हुआकर स्थिति की अपेक्षा में पुनर्बिचार कस्यथा धीरे निर्णय में पस्ती नहीं कस्यथा ।

मुझे प्रताप के हाथ उन पक्षियों का धाना अच्छा नहीं मया । पूछा, “यह पुर्जा उन्होंने तुम्हारे यहाँ भिजवाया था ?”

“नहीं तो मई धीरे क्या ? बेगो मैं तुमसे कहवा हूँ कि धमी तो धनका इतरार है धीरे बजह कि उगक पीछे हम सोपों का जोर है । लेकिन इस लव के साथ तुम समझ भो उन्होंने दूसरी तरफ भी बातचीत करने का हल कर लिया है ।”

“तुमसे यह कह रहे थे ?”

“फिर वही बात । धरे मई, कहिये क्या ? बात साफ है ।”

“तुम मिसे थे उन्हें बाह में ?”

“मिसे नहीं था तो क्या यों ही ?

“तो ये साइन उन्होंने धमी तुम्हें दे दी होंगी ?”

“बह तो है ही धीरे मैंने उन्हें बरोसा रिनाया है कि धार किंक न

करें, मैं सहाय को संभाषण बुना। देखना मेरी बात कम्भी न करला।”

मुझे धक्का नहीं लगा। कहा “तो अभी यह क्या कह रहे थे कि पुर्जा घाबनी के हाथ भेजा है ?

“मई तुम भी बाघ की जाल निकालते हो। भेजा या दिया, बीज तो सामने है उनके हाथ की लिखी हुई तुम्हारे—है कि नहीं ?

“प्रधान तुम इस मामले से बाहर हो जाओ।

“कैसी बात कर रहे हो मई मैं बाहर हो जाऊँ तो कहता हूँ तुम्हारा नाम धापे जाने वाला बूराय कोई नहीं है। और देख लो यह पाकिरी कौपिय है। ठीक है तुम बाहर रहने की कहते हो बाहर हूँ ही। लेकिन हमारा स्वाम था कि तुम धन्दर हो सकते थे और हमसे ब्यापे इसमें तुम्हारा फयरा था। लो छोड़ो जाने दो। लल में इतना ही लो है कि तुम बाली कैसला नहीं करने वाले हो। इतना लो जाकर कह सभ्या हूँ न कि ठीक है तुम जल्दी नहीं करोये।

‘मै—’ श्राव था रहा हूँ !

‘बैहात ? बैहात क्यों बन-बनम क्यों नहीं जाते ? कि एकदम श्राव बहवि बन जाओ और हम सोय तुम्हारे बरनों में गिरें। छोड़ो मार, बजाक छोड़ो। मैं जा रहा हूँ कह बुना बी० पी० को कि सब ठीक है और अभी अपना रग फरें नहीं। धक्का टा-टा।”

प्रधान जैसे गये और मेरे मन में हो गया कि वह मेरे और बी० पी० के बीच बिबाह करके छोड़ेंगे। मैंने इतलिए बी० पी० को नीचे एक लम्बा लल जिला। उसमें अपने लिखने राजनीतिक इतिहास और हास का इबाला देते हुए बताया कि प्रदन धाम व्यक्तिओं का या कार्यक्रम की नीतियों और स्थियों का नहीं है। प्रदन उससे गहरा और मौलिक है। गाँधी के बाद हमने मौलिक पर ध्यान दिया है, मौलिक की तरफ दुर्लभ दिया है। फिर भी लल मौलिक भाषा का उच्चार और बोध करते धापे हैं। ऐसे बाहर और धन्दर की स्थितियों में कई बड़ा है और हमारी लाल दूट रही है। धन्दर से देश के भीतर हमारे धाननी लम्बक दूट रहे

हूँ धीर प्रविष्टास धीर भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। जानता हूँ मुझसे ध्याये आपको इसकी जित्ना है। लेकिन मुझे लगता है कि बेच में बलिदान के मार्ग को फिर खोजना होगा। बलिदान प्रमुख प्रयोजन से नहीं पर जीवन नीति के ही तौर पर। यदि वह नहीं सीधे सेवा की तरफ बढ़ा जाय / धीर वह के द्वारा सेवा के रिश्ता को थोड़ा कम किया जाय। यह भी पत्र में लिखा कि मानुप्रताप यद्यपि आप से जुड़े हैं मेरे तो निश्च ही। लेकिन इस बारे में आप मुझे अपने निकट धीर सुलभ समझें, मानुप्रताप पर निर्भर न बना दें।

पत्र लिखकर भी जाने मैं बैठा धनुमन्ध कर रहा था। मन मानुप्रताप की याद पर आकर मुझ नहीं मानता था। दूसरी तरफ हमारे अकुर है। एक हीचियाद, दूसरा हादिक। ठाकुर के समझ मन मिचता नहीं सुलता है। राजनीति भी धरब जाने-जाने से बनती है।

धर दल का साड़े दस हो गया है। धामर में स्वर्णी हो रहा हूँ। लेकिन धरणा नहीं सचता यह कि राजधी के पास अकुर से जमाने को काफी बात हो सकती है मैं उस स्वीकृत धीर मान्य रह जाता हूँ। बीरेवर की व्यवस्था बातचीत करके ठाकुर के साम सीधे-सीधे तय कर ली गई। हो सकता था कि मैं बिरोप सहामक न होता लेकिन उन दोनों के बीच क्या मैं तीसरा ही होने सामक था? मेरी धीर से कभी राजधी पर बिरोप ध्यान खर्च नहीं हुआ है न परिवार के दूसरे लोगों पर। लेकिन धर इस समय कल के अकेले में साड़े दस बनने पर धरणा नहीं लगता है यह कि पति का पत्नी को इतना कम ध्यान हो। किताब लेकर मैं बैठा रहा धीर हवर-उपर का जाने क्या-क्या सोचता रहा। मन में रह-रह कर खुश होती थी। धर तरफ क्यान जाता था पर खुश का काँटा दूर नहीं होता था। ग्यारह हो गया, साड़े प्यारह भी बीठ गया। मैंने बड़ी को बार-बार देखा। धरनी धीर से राजधी के धर तक न जाने को तरह-तरह का समर्जन दिया। धापर है कि नीना के बिचार के

घब तक उसकी दूर रखा हो। स्वीकार करना चाहिए कि नीला के सम्बन्ध में बचपि मैंने प्रगट खोटी नहीं रखी है। पर वह सम्बन्ध सीधा है, परन्तु कौ मारफत नहीं है। मैं साफ-साफ समझ नहीं पाता हूँ। पति-पत्नी का सम्बन्ध केन्द्र है। वह प्रबुध है कि जिसके प्रभाव पर परिवार की एकजुटता और समाज की मर्यादाधीनता सही है। सही-बजट सब उसके सहर्ष से बनना चाहिए। लेकिन मैं नहीं जानता कि नीला को लेकर मुझमें क्या होता है। एक धार्मिक स्फूर्ति-ही दिखती है। राजनी को लेकर वह नहीं हो पाता। वह बिबाहित है मैं बिबाहित हूँ। इसी कारण उस सुस-सीहार्द को क्या निपट कर देना होगा ?

पीने बाटू बने राजनी आई। मैं किताब धीर पढ़ने लगा। वह भी बात के लिए उत्सुक नहीं थी। एक घोर जाकर उठने कपड़े बदले धीर मैं किताब में रहा। अब वह तैयार थी कि बिस्तर में जाय धीर मैं छोड़े मैं वा धीर पढ़ रहा था। धीरे से बोली 'बत्ती घनी न कर्क ?'

'नहीं।'

'पीने बाटू हो गया है।'

'होया ही—तुम्हें क्या ?'

'तो देख लो मैं छोटी हूँ।'

मैं चुप रहा धीर वह बिस्तर में बहूच गई।

मैं धीर भी धीर धीर से बहूच गया। पर धीर-धीर पम्बर ही वा, किताब तक नहीं पहुँचता था। किताब का पम्बर वही-का-वही रहा धीर मैं सप्तर भी सप्तरा के साथ र्थी के हीन-बुद्धि होने वा बिचार करता रहा। गाम कर परन्तु-बर्ग की र्थी। इन प्रबुध तात्त्विक बिचारों में पाँच सात दिन बीत गये होंगे। पम्बा गुना रहा धीर कपड़े में उम्माटा रहा। सप्तरा वा टि हाप में किताब भी धीर उमे धीर से फेंक कर सप्तरा मेरे द्वारा बिजा वा सपमान नहीं बिवा जा सकता था। फिर वह भी बात थी कि किताब सबकर उमारे चीट नहीं दे सकती थी। कोई धीर माटी मापर-नीटे की बीड होती तो उसको फेंकना सार्थक हो भी सकता था।

इतने में दबता हूँ कि राजभी पास ही लड़ी है। पूछ रही है—
“गायब हो ?”

मैं चुप रहा और किताब में देखता रहा।

“भाभी रात हो गई है, सोओगे नहीं ?

मैं ऐसे बीठा रहा कि भाभी रात में कहीं सोबा जाता है—या कि पड़ा जाता है ?

राजभी ने बिना किसी बड़के के किताब मेरे हाथों में से प्रसंग कर ली। मैंने कहा ‘बधा है उमीर नहीं है ?’

कहकर ऊपर की तरफ देखा। मेरी आँखों से बिनपारियां निकल रही होंगी। पर राजभी मुस्कुरा रही थी। बाँकी चितवन की उस मुस्कान में।

मन्दिम मुझे हारना न था। जोर समाकर कहा ‘घपना काम देखो और सोओ। मुझे पढ़ना है।’

राजभी ने किताब रखी नहीं। दूर एक तरफ फर्श पर फेंक दी और मेरे दोनों हाथों को पकड़कर उसने मागों मुझे सींचकर उठाया।

मैं भारी भरकम घादमी हूँ और उस समय मन बहल से कम भारी न था। मन्दिम उन हाथों में लिपटा उठता जमा था।

बोली “बली कर दू ?

मैंने कहा ‘छोड़ो इन कपड़ों छोड़ना ?’

राजभी ने फौरन छोड़ दिया। कहा ‘अच्छा तो तुम बिस्तर पर आते रहना।’

उस समय राजभी जो बरफ पुत्र-मुत्रियों की माता थी जाने कैसे बोझिली हो गई। वह जिसे मुस्कुराई और छोटे-छोट कवमों से ऐसे घबराव जाल से बिस्तर पर गई और मुझे देखती हुई ऐसे उजाई में दुबकी कि सब मुकम से काटूर हो गया। मैं रिपलकर हर तरफ से मोम हो गया।

मैंने कपड़े बदलें, बली की और बिस्तर में धा सेटा।

बो-नीन मिनट चुपचाप अलग-अलग होकर पड़ा रहा। तभी राजभी

का एक हाथ बढ़कर आया। उसने मेरी बांह को बन्नाया कहा—तो क्या ?
 अब तो नीलिमा घा गई है। बिगड़े क्यों हो कुत्ती की बात है।

उसके स्वर की धारण्य पर मामूम हुआ कि राजधी नीलिमा के
 साथ अपना स्वीकार ही चाहती है। साथ हीसा का बहिष्कार नहीं।

सायद—सैकिन ?

पाँच

कोन नहीं किया नीला को दस बजे कुछ ही पहुंच गया। यह इसलिये कि घायब है दर साहब मिल जायं। धमिक घाघा बी कि नहीं मिले। पर मैं मन को धाक रखना चाहता था। और बुग न हुआ कि दर मिल गये। जाने की बस्ती में वे नीला के साथ जाठक से गुजर रहे थे। बैठक ठीक दस बजे शुरू हो जाने वाली थी, बफ़्तौह में वे कि कुछ मिनट घमी देर हो गई है।

बसते-बसते उम्हने बताया कि इन्तजार न किया जाय, मंच नहीं है और घाय-वोन पटे कपड़े के बाद फिर बैठक होगी—पाँच बजे तक।

नीला ने कहा— तो मैं पाँच पर तुम्हें भवन से ही लूँ ?

दर ने स्फोकार किया और बताया कि नीला कह रही थी कि मैं जाने जाता हूँ। फिर अपने जाने की मजदूरी पर समा नामते हुए हाथ मिला कर बह चले गए।

अब नीला ने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया और हम सोच करने में गए।

अम्बर कदम रखते ही बह मेरी तरफ़ बुझी। दोनों हाथों से बन्धों के पास बांहों पर से पकड़कर मुझे सामने लिया और परत ऊपर-नीचे दौलकर मानो मुझे तापती हुई बोली— 'तुम तो—बही हो।'

नीला धड़ेकी में बोला करती है। धड़ेकी उलनी भीठी भी होती है। ऐसा लगता है कि शतरज और टिपटा का मेन जो उलनी धड़ेकी

निजा पायी है, सो धायद हिन्दी बधा नहीं कर सकती। एक साथ बचीव
व्यप्य धीर संतोष उसके स्वर में था।

“यानी—कुछ धीर होना चाहिए या ?”

“नहीं तो क्या !”

“तुम तो नहीं बचती हो। जरा बर बकर रही हो।”

“मैं सोचती थी, एबज में तुम कुछ बुझते दिखाई दोने।”

“तो निराश तो नहीं हो रहीं तुम मुझ में ?”

“नहीं बल्कि धीर बिपबस्त बीसठे हो अपबस्त जरा भी नहीं।”

मैं कुछ बिपड़ा। बोला—“अपबस्त ?”

“कह तो रही हूँ कि नहीं बस्ते बीसठा है कुछ पा गए हो। छोड़ो
मागो बैठें। क्या लोमे काफ़ी या कुछ ठंडा ?”

“काफ़ी गुनो ग्यारू बने तुम कहाँ या रही हो ?”

“कहीं नहीं।”

“तुमने कहाँ या न कि ग्यारू तक।”

उसने बटन बजाया। पोन में कहा—“हलो दो काफ़ी।” “जी,
काफ़ी—बी” हाँ वह ग्यारू।

“कहीं जाना या ?”

“हाँ जाना तो या।”

“जाना दूर हो तो छाड़ि बस बने जस देना चाहिए। यानी काफ़ी
से बाह मैरी घुटी।”

“हाँ जाना या” धीर जरा दूर भी। गुरुबचुंड की बात भी। एक
बार गई थी गुरुमूरत जगह है।

“बहु सुदबिसमत कीन है ?”

“कोई है—धायद मैं हूँ !”

अबज बिटी-सी पाबाज थी। इतने में पटी बनी धीर मालूम हुआ,
धीकर है गाड़ी या गई है। नीता ने कहा—“ठीक है। तुम ऊपर
धायेगा।”

इसमें मैं काफी घाई। तैयार करती हुई बोली—“ओह ! तुम तो झूठे होते हो। सुपर—भाभी चम्मच ? तो जो फिक न करो, भाभी देर है।”

मैंने बड़ा हुमा सावर हाथ में ले लिया।

सोच रहा था कि देह में भरती घाटी हुई नीसा पहल से अच्छी लग रही है। जरा बांह को बचाकर देखूँ, पुसूँ कि नीमिमा, तुम पर से सभ क्या कपूर की तरह भाकर उड़ जाती है ? सिर्फ सुपच छोड़ जाती है। सब त्रिस्म तुम्हारा गपराया था रहा है। पर कुछ पुसना बताना कैसे हो सकता था। धायव यह सोचा भी नहीं जा सकता था। साढ़े दस बजे उसे जाना है। जाने किसके साथ या किसके पास जाना है।

इसी धसमजस में काफी के प्याले को हाथ में लेकर मैं बोड़ी देर से देलता रह गया।

उसने अपना प्यासा भी तैयार किया और एक सिप लेने के बाद मुझे धनमना देगकर वह मुस्कराई। बोली—“साढ़े दस नहीं बज पाये प्यारह पर निकलेंगे। हो जाने दो पांच-साठ मिनट की देर बागद होवी तो।

मैंने कहा—“मुरबकुंड दूर है।

‘होने दो दूर।’

“क्या यह मुनासिब होगा कि कोई वहाँ पहुँचे और ताली राह देखे और”

नीसा मुस्कराए जा रही थी। अब जरा सोच में पड़ती मामूम हुई। बोली—‘हां मुनासिब तो नहीं होगा। अच्छा तो साढ़े दस ही बजे चला जाय—बस ग्यादे नहीं है—

“घात्र ही जा रही हो बागिस ?

‘अभी तो हाँ—बाबी पररा घात्र को होया। क्या बज गया देलता। ओह अभी छान मिनट है। (तभी डादरर घाया) ‘ओह तुम धा ग्या ? देगो यह दरर नामान है। गाड़ी में रग के बज करके

पामी हमको देवा और पीछे ख्याल रहेगा । हृय बेर से माने सकता है, तुम ख्याल रहेगा ।”

आइएर को साइड-स्न में सामान बताया । फिर मेरी ओर हलके बाहर आकर झंकी कहा—“माफ करना, बरा बँच कर नू ।

कहकर वह साइड-स्न में ही बसी गई । मुस्कराती बई थी और मैं उसका धर्म नहीं पा रहा था । नीला कुछ धनग ही है । मारो उसके लिये कहीं रोक नहीं है । वह बचने में बिस्वास नहीं करती बस में भी नहीं करती । जीवन जैसे उसके लिये सहजता तस्व है । साथ वह भी सहजता रहना चाहती है । कुसीनता को उसमें कभी नहीं है न धिप्टाचार की । किन्तु उसके साथ यह सब इतिम नहीं रहता धनापास हो जाता है । उसकी अकर्मिता को सामाजिक सहृम्यबहार तक नहीं पाता । जीवन में सीरती-सी चलती है और कहीं उसे निवेप जात नहीं होता । मानो कठम्य उसके लिये वह है जो उससे होता है । किसी 'बाहिए' का दबाव वह साथ नहीं लेती । मानो जो है वही उसे बाहिए ।

मैं समझ नहीं पाता हूँ कि नीला की शक्ति क्या है । पर शक्ति का अनुभव करता हूँ । साथ होता हूँ तो सपता है बाठावरण उससे बनता है, मुझसे नहीं । बरिस्थिति में जो छोड़ जाता है उससे जाता है । बिस्मय यह कि यह अनुभव एक समय मुझे अभिय भी नहीं दीता । बार में सोचना पड़ता है कि अभिय होना बाहिए वा । अपने पुस्वोचित सम्मान-अभिमान का उसकी उपस्थिति में मुझे ध्यान नहीं रहता है जो रहना तो बाहिए ।

नीला बदन के विषय रूप में धाई, उससे बिस्मय हुआ । एवद्य सहज उसका परिपान वा और धामुपण एक भी नहीं । बस मने में रंगी सीरियों की माना थी जो बार-छ' पीछे में धाठी होती । यह रूप मैंने धामय ही नह्ये कभी उस पर देगा हो । बन्कि जरा पहले थी बै-सीवार हानत हमडे प्पादे सारी मानी वा सवती थी । पर रूप वह उस पर पत्र रहा वा । बड़ा बम्य नामूब होता वा । धाते ही बोली—“बाहिए ।

धपनी जगह से उठते हुए मैने कहा—“यह क्या उपासिका बन आई हो ? कोई सख्त-सख्तुब मिलने वाले हैं क्या ?”

“हो सकता है। ‘घाय कब तक की सुट्टी चाये है ?’

“धमी तो जाऊंगा। बताओ लंब धपना साथ हो सकता है ?

“साथ ही तो होना लभ।”

“वहाँ से या जाओगी न तक तक ?”

“कहाँ से ?

“कंड से।”

“क्या जकरो है ?

“बकरी है यानी ?

‘यानी कुछ नहीं—सुनकर जाने तुमने में होती है। बीमो, कहीं धीर बनें धोसना बनें ?

“लेकिन—”

“धोसना जगह बहुत धाम बनी जा रही है। मूरज कुंड एकांत रहता है। जस्ती फँसना करके बताओ।”

मैने धमसा करके नहीं बताया। कमरा बन्द करके हम बाहर की धोर बसे। मैं सख्तसुख प्रसमजस में था। यह नहीं कि मेरे पास बचत न था, पर उस बचत के साथ कोई ऐसे स्वतंत्रता ल यह मेरे मान की प्रिय न हो रहा था। कहा—“धमी तो मेरा जाना न हो सकेगा।”

“जी हाँ धमी नहीं तो जैसे कमी धीर रखा है हमारे पास कि जब जाना हो सकेगा। कहा तो है मैने कि धाम हम बापस जा रहे हैं धीर—”

“लेकिन नीसा।”

“जी हाँ नीसा। उसे वहाँ कुंड में जाके डूबना है न कि धकेली जाएगी। तो जाने दीजिये। धारण बापस कमरे में बनें।”

“मगर यह गप क्या है नीसा ?

“देतो तीन बरस बाद हम मिल रहे हैं। उस पर तुम चाहते हो बात पिछी-पिछी हो। मुझसे बह नहीं होया। धाय दीजिये बिरतान

नियम में धीरे-धीरे मुझे आशा पसन्द है जो सुना है दिखाए पसन्द है जो सुनाती है चारों तरफ से किसी तरफ से रोकती नहीं। मैं नहीं रहना चाहती कमरों में बबकों में आर्यों में। मैं धनस्त में रहना चाहती हूँ। पर छोड़िए 'सम्बन्धों' भाषा बड़ी छोटी पड़ती है—बल रहे है न ?

“नीला !

“समय नहीं है न आपको ?”

“नहीं यह बात नहीं।

“जानती हूँ यह बात नहीं है—फिर क्या है ?”

“कुछ नहीं।

“डरते हैं—घपने से ?

डरना नहीं चाहिये ?”

“नहीं। कभी नहीं डरना नहीं चाहिये। पाप से डरा जाता है। इसलिए सिर्फ़ निडर है जिस पाप नहीं घूटा।

“नीला !

“छोड़िए, कभी तो घपने को भूला बीजिये। एक बार भूसे ये। दोनों हम भूसे ये। वह शायद क्या मर सका है फिर—आपके लिए या मेरे लिए ? घपने बही होता है जहाँ आपा भूल जाता है। बहुत पाप न रहिये घपने को या फर्क को।

उसने मेरा हाथ बाम रखा था। सिफ़ से बाहर धाकर हृदय साइड पार कर रहे थे। मैंने उसके हाथ को बचाया कहा—“नहीं नीला ! घब नहीं।

मुनकर नीलिका जमते-जमते एकाएक रुक धार। बिहरा उसका मानो फट हो गया। उसने बांह न मुझ रोकना धीरे मेरी आंगों में देता। बाली से ग्याये श्रीम बुष्टि न उसने पूछा—“कह 'घब क्या नहीं ?

मैंने मानो बुद्ध बनकर कहा—“माफ़ करना मैं बल नहीं मफूना।”

या पन्ना शायद वे शब्द में है। मैं भी। मानो हमारे जमने में

कोई व्यापार नहीं था। उसने धूल के उस भाव को संक्षिप्त करते हुए कहा— धण्डा धण्डा ! धीरे मुझे साव लिए धागे बढ़ती जाती गई।

पीटिको पर घाकर बोली—“गाड़ी जाए हो अपनी ?”

“नहीं ! अपनी सब है कहीं ?”

“तो धायो ! कहोगे तो जहां हुमा छोड़ दूंगी।

जसत हुए हम गाड़ी पर धाए। उसने जाती से दरवाजा खोला धीरे स्टीयरिंग पर बैठ गई। बरबरा का दरवाजा खुलने पर पास में धा बीठा। गाड़ी स्टार्ट करने पर उसने धीमे से पूछा—“धलवार में जो सबरें निकली हैं कितनी सब हैं ?”

“बोसो क्या पका है तुमने ?”

‘तुम अपनी कहा कि कितनी सब हो।

“मुझे लगता है—उपम-गुणन न हो कहीं। यक्ति का समुच्चय ऊपर धस्थिर हो गया है। तुम जानती हो दर-कर मेरे जग का नहीं है। धायद उससे बात संभलेयी भी सब नहीं। धायिर टिकता है वह जो सब होता है, धायदर हाता है। ऊपर का बरबराव धायम नहीं रहता। मेरी धमर—तुम कितन की हो गई नीसा ?”

“उमर—मुझ बयासीसवां सग गया।

‘मैं बीबन न धायता हूं। मुझ नहीं मामूज पुनरगम होता है धा क्या ! सविन दगता हूं कुछ होकर बीज जाता है कुछ रह भी जाता है। यह धा ऊपरी धीरे बाहरी है उम पर मन का कर तक धाकाए रधा धा गकता है ? बस इतना ही सब है।

‘जाती इकार दिया जिसे वह ऊपरी है ?

“इकार करने की बात नहीं किधें स्वीकार न करन की बात है।”

“भीतरी क्या है ?”

‘मामूम नहीं। धायद वह जिनमें—वैसा नहीं लगता ! ।

नीसा हम धाई। बोधी— तुम पागत हा रह हो ! मता वैसा बिचमे नहीं मयता ?’

‘वही सोच रहा हूँ और सयता है सब में वैसा सयता है।’

खिलखिलाकर नीला ने कहा—‘सोच कर नहीं पहुँचोगे नहीं। एक ही रास्ता है कि वैसे के बारे में सोचो ही नहीं। उसे तर्क किये जायो। जरा बह ठहरेगा, कि उसके बारे में सोचना पड़ जायेगा। मैं यही करती हूँ परा नहीं सोचती वैसे के बारे में। वेपरीं से खर्च करती हूँ क्योंकि बड़ी खराब बीज है यह वैसा। मजबूर करता है कि उसके बारे में मोचो और सोचा कि सके। रकना गलत है और तुम सती बचकर मैं या बए हो। हां कहां तुम्हें पहुंचाना है बतानो। या—बल रहे हो?’

मैंने नीला को देखा। कहा—‘तुम्हें अपना ख्याल नहीं होता नीला? धरती तल का या घासे का?’

‘म्याम बासों ने कुछ पा लिया हो तो कर्क भी मैं ख्याल। मैं तो देखती हूँ लोमा ही लोया है। तो जमी बसुं म?’

‘उम्मे में कहते चर्से संभ के लिए।’

‘छोड़ो संभ। वहां घाम-वास कुछ भिल नहीं जायेगा क्या? छिपाके, सकरकन्व मूनी कुछ ही मिलेगा ही।’

‘इससे जलेमा तुम्हारा?’

‘येरा तो घाज हवा से भी बल सकता है!—तुम लोग जो उठार चाहते हो धरती पाबन्दियां छोड़ नहीं सकते। एक रोज उपास ही सही।’

मैं इस प्रकरण को बड़ाना नहीं चाहता हूँ। मूर्खदंड पर धाकर देता कि सामान में बहुत कुछ है। दो मुझे वाली बुनियां ठक है। क्लास में कापी है और संभ का पूरा संरंजाम है। मैं इस सब के लिए बतई तैयार न बा। पर तैमारी का प्रसन्न ही न रह गया था। माड़ी रोक कर उमने उम संदहर में धरने लिए जबह छांगी कि जहां परा घोट भी और भूप तुमी घा मकती थी। कइ पर करीब सल्लाटा ही बा। उतने कुछ सामान बुन्दे दिया कुछ धरने हाय में लिया और वाली लवाकर माड़ी को किनारे छोड़ दिया। एकाम्त जबह पर धाकर उमने कैनवास की बोना बुनियां केंबा थी। सामान नीचे बटक दिया। कजुड़े उठारने

लगी। घन्टर उसने बेचिय सूट पहना हुआ था। घाकर कुर्सी में फँस गई, कहा—“तुम भी कुर्सी से सो। सूर्य-ज्ञान नहीं करोगे या कपड़ लाने रहोगे? कुर्सी की पीठ कर सो सूरज की तरफ।

बूप सबमुच पैज भी। मैंने कोट उतार दिया कमीज के बटन हीने किये घौर मैं भी कुर्सी पर सेट गया। कोट मैंने तिर पर से लिया कि घाबें छाया में रहे।

नीला ने कहा—‘भ्रम कहो, जो तुम्हें कहना हो। पर सब बठाओ। इस बूप में घौर खुले में घौर घाजादी में तुम घादल की बात करना चाहोगे कि मन की बात करना चाहोगे?’

‘तुम भ्रमर घोड़ा बूप रह सकती नीला।

‘यह तुम ठीक कहते हो। प्रकृति में घाकर तर्क नहीं होना चाहिए। लेकिन यह सकते हो कि तुम्हारा मन तर्क नहीं कर रहा है। घन्टर-ही घन्टर? जसी को बाहर लोख घाने की कहनी हूँ जिससे कि इस घनमत्त में सब घान्त हो जाये।

‘मुझने कहासाओ मत ज्यादा नीतिमा। यह सब तुम्हें बताना चाहिये वा मुझे।

‘बघों? क्या ऐसा लग रहा है कि नीतिमा तुम्हें ठग सार् है।’

‘यहसे से तुमने यह तय किया हुआ था—मुझे बता देना चाहिये वा।

‘जब तुम्हारे काम का हर्ब हो रहा हो मुझे बता देना एउ मिनट में तुम्हें पर पहूँचा दूनी। लेकिन तुम किससिय रहना चाहते हो?

‘मैं किसी भी सिये रहना चाहता हूँ।

‘पूछ सकती हूँ यह घाबेघ किससिय?’

‘मुझे यह बंग पसन्द नहीं।’

नीला हँसी। बोली—‘यानी उतासिका के कपड़े पहन मूँ यह पसन्द है? वह तो बहनूपी ही। लेकिन सूरज भी है घौर घून बरन को घूँचाप तो इसमें कोई घतर नहीं है।’

“सब बठाओ तुम क्या चाहती हो ?”

“ऐसा समय है तुम्हें कि मैं कुछ धीर चाहती हूँ ? बीने से कुछ धीर ? धीर जिताने से कुछ धीर ?

“हाँ समय है !

“मुझे नहीं मासूम या सहाय कि तुम्हारा दिल इतना कमीना हो गया है !”

मैं मुन कर चींका । मुझे यह धाया न थी । मैं अपने से ममड़ रहा था । उस पर माने के लिए मेरे मन में आरोप-समिबोध शकित न था । शकित वह धावेण में बोली—

“तुम लोग समझते हो सब तुम्हीं करते हो । ठीक है दर साहब के लिए कुछ हुषा धीर कुछ मीके बने । लेकिन घोहरों पर पहुँच कर तुम यह मन मान सेना कि तुम जितनी के धीजार नहीं हो उसके मासिक हो । जितनी अपने ठीकों से चलती है । तुम्हारी जगह कोई धीर हो सकता है । धीर दर साहब की धीर मेरी जगह पर कोई दूसरा हो सकता है । क्या तुम समझते हो कि तुमने एहसान किया है ? एहसान मने किया है कि तुमसे बात की है !”

“नीला !

“मैं नहीं समझती थी तुम अपमान करोगे । मैं फिर कहती हूँ कि जितनी हम सब के साथ गेम करती है । जो इनको गेम नहीं मान सकते हैं वे ही एक-दूसरे की शिकायत-धालोचना करते हैं । मैं समझती थी, तुम उससे बाहर होग धीर बिना लगाव के बीनों को देख सकते होगे । पर देवती कि तुम ”

यह बहुत हो रहा था । मैंने कहा “नीला मुझे तुमने सतत समझा । शकित मुमान रहने की तुम्हें भी पकरत नहीं है । यह सब समाया किब लिए धागिर ?

नीला न हनकर रहा “तुम्हारे कुछ समय के लिए, धीर किसलिए ?”
मुझे सबकुच भोप हो धाया ।

कहा "भयज का इलाज तुमने बदन में समझ रखा है क्यों ?"

बह धीर भी हस धाई बोली "मरज धीर इलाज सब शरीर में होते हैं। बन्द में मरज खुले में इलाज।"

'इसीलिए अपने शरीर का तुम्हें गुमान है।

"हां इसीलिए। बुद्धि का गुमान तुम्हारी तरह मुझे तो नहीं हो सकता है। शरीर का ही हो सकता है।

"ये सब नहीं होना भीना। मुझ तुम पहुंचा सकती हो ?"

"जकर पहुंचा सकती हूं। कहकर बह मुस्कुराई धीर कुर्सी पर बांहें पीछे करके उसने भगड़ाई सी। इसमें टांगें दोनों घांसे को तन धाई धीर भयड़ाई के बाह बदन दिविस हा गया। उसके उठने धीर तैयार होने के कोई धासार नहीं दिव्याई दिये। तो मैंने कहा 'उठी नहीं ? धनी बसना होगा।

उसी मुखान के साथ बह बोली "मैं सोचती थी धा-धीकर बसा जाता। तुम भी उठने कुछ धूप धीर हवा से लेते।

"तुम्हें धर्म नहीं है ?

"न नहीं है।"

बहती हुई बह गिनगिसाई। कहा "धीर तुम्हें भी उसकी जकरत नहीं है। मेरे सामने तो बिसदुस नहीं है।

मैंने उठकर उसकी बांह को पकड़ा। उसकी लंगी लबा का स्पर्श मुझे धीर बज कर गया। बांह को छटके से लीपठे हुए कहा "उठी धीर कपड़े पहनो।"

बह छटके के साथ उठ धाई सी धीर मेरे बिसदुस सामने थी। बोली, धधी तो मेरा बिचार धूप भेंकने का धा' कहा—धीर धनज बिचकन से देगा।

"कोई धूप नहीं। बसो धीर मुझे पहुंचा के धाघो।" धीर कहकर मैंने उसकी बांह को जक रेंटा।

"नहीं बसोपी ?

घब उसकी मुस्कराहट बन्द हो गई थी। बांह की एंजल के साथ उसने बाट बस घाया था और उसकी आंखों में अपार विस्मय हीन था। विस्मय के साथ ही जाने कैसा एक विचकार था। उसने एक दम्य भी नहीं कहा, सिर्फ उन आंखों से देखा और मने उसके हाथ को छोड़ दिया। बाह भी वह ठनिक नहीं बोली। सिर्फ गई, वही अपने सफेद कपड़े पहने, फिर अमीन पर बैठकर प्लास्क बोसा और प्याले में काफी उबोमकर मेरे घाये किया।

मैं देखा वह मया, प्याला से न सका।

“मो काफी पी लो लो बस अभी बसती हूँ।”

“नहीं मुझे बकरूठ नहीं है।

“कह लो रही हूँ अभी बसती हूँ। लो।”

‘तुम भी सोपी।

“मैं—से लूगी।”

मुझ पर अपने पर घब हो रहा था। लेकिन कोई उगाव न था, मने छोड़े-छोड़े काफी पीना शुरू किया और नीला मे भी अपने लिए कप बनाया। बकरू नाम को ही उसमें काफी डाली गई होमी क्योंकि पत्थी निबट कर उसने फेंसी कुत्तियों को लह किया और उठकर चलने लगी। घब सामान अभी वड़ा ही था मने कप को धावा छोड़ा और बीड़कर उसके हाथों से कुत्तियां छीन लीं। उसने कुत्तियां टिन जाने की बन्कि मेरे हाथ में कार की चाबी भी बसा दी। मैं बड़ता धावा और कार लीनकर कुत्तिया बहा जमा दी। इतने में नीला घा गई वह सामान से सबी भी और मने फिर बीड़कर उसे हलका किया और वह कुछ न बोली। घब एक वह कुछ नहीं ही बोली।

मैं सोचता था पर के बरबाने पर मुझे उतार कर लीचे वह भी अपने डैरे अभी पायेगी। पर वह मुझसे भी घाने होकर घर में बड़ी गई और कुत्ती हुई राजधी के पास पहुँच गई। मैं बाहर की बैठक में था कि नीला के साथ राजधी आई, बोली, धा मये। मैं समझती थी यह

बिना सब के तुम्हें न भेजैयी, क्यों नीसा ?”

“इन्हीं से पूछिये, धरमर कमूर मेरा हो । बड़ी मुस्किल से एक कप कापी पिता सखी हूँ ।”

इतने में बिना जकरत घौर बिना बुलाये ठाकुर महारेवासिंह बैठक में आ बस । उनकी मुद्रा देखकर मुझे डर मया, इसलिये मैंने कहा,—
“नीलिमा देवी आप हमारे मित्र ठाकुर भी महारेवासिंह हैं एम० एम० ए० ।

नीलिमा ने कहा “नमस्ते ।

ठाकुर महारेवासिंह सबमुख अपने ऊपर से काहू खौ नहीं सके । नीसा का नाम प्रबन्ध जानते होये । राजधी ने भी कुछ-न-कुछ बताया होया । घाटे समय उनकी मुद्रा को देखकर घाघका होना स्वामाबिक था । लेकिन ठाकुर एकाएक नमस्ते सुनकर नीलिमा को कुछ देर मटके से देखते रहे । एकबस सफेद भूया थी—घौर साज-सज्जा में हुन्दी से रंची छह षेसे की छिकियों की माता गने में बी ।

उन्होंने कहा “नमस्ते । फिर मेरी घोर मुलातिव होकर बोले—
“तुम्हें क्यास रहा या सहाय कि मुझे धाम जाना है ?”

नीसा ने कहा, “घण्डा मैं बसूँ । नमस्ते ठाकुर साहब । नमस्ते राज भाबी माम संमाल रचिये अपना ।”

राजधी ने हंसकर कहा, “तुम इतना अपना घबिरबास न करो, नीसा ।”

नीलिमा ने कहा “घण्डा भाबी ।”

धर ठाकुर जाटी मने से बोले “सहाय यह घोरत घब घाये कभी | तुम्हारे घर में न घाये सुनते हो ?”

मैं बुब रहा ।

ठाकुर बोले ‘मुना नहीं घायद तुमने ।’

राजधी बोली, “किठनी मामूम रिघटी थी बिजाठी, घौर ठाकुर तुम सब पर बियाड़ रहे हो ।”

“हां बिगड़ रहा हूं। वह धायेगी सबर तुम लोगों की मही कोठी रही। ठीक सीमा है भाभी जी इन्होंने कि यह—छोड़ रहे हैं।

‘सही कहते हो ठाकुर, लेकिन मुन्सिफ न बना करो किसी के।’

‘बया कहा ?

‘बस चुप रहो।’

राजभी ने बीच में धाकर कहा ‘धाइये ठाकुर साहब, धाप धाइये। छोड़िये इन्हें।

कहती हुई राजभी ठाकुर को से मई धीर में सामने मूने में देखता रहा।

छ.

मानता होया कि मैं धनमया था। नीला के सम्बन्ध में चित्रव की भावना का सहारा देते पास बिलकुल नहीं रह गया था। बल्कि ऐसा सपना था कि नीला के सामने मैंने अपने को हल्का बनाया है और। उसने अपने को संतुलित और ऊँचे रखा है। यह सोचता था सोचकर धनुमन् करता था कि मेरे अह को काफी धति पहुँची है। मैंने चायद नीला को नीचा दिखाना चाहा था और इसी मे मेरी अपनी नीचता प्रकट हो गई थी।

“क्यों क्या सोच रहे हो ऐसे ? नीला से कुछ बिपाद तो नहीं हुआ ?

मैं चौंका। मामूम होता था कि मुझे इस तरह आचमकुर्मी में घातों बंद करके लेटे हुए वह कुछ देर से देवती रही है और अब सोच-समझ कर उनमें यह सवाल पूछा है। मैंने कहा— ‘नहीं नहीं !

किर किस सम में हो ?

“किस ? नहीं तो। सम क्या होता ?

‘किंगी मीसिना हम तुम जसी नहीं है। आजाद सवास है इसमें बीप जा जाँ सममें। सेबिन मैं तुमसे कहणी हू कि वह तुम्हें कभी— नीच रखना नहीं चाहेगी।’

“क्या मतलब तुम्हारा—नीच रखना ? पापल तो नहीं हुई हो ?

“पापल नहीं तुमसे बहनी हूँ कि उसके मन में तोट नहीं है। स्वार्थ

भी नहीं है। वह तभी ऊँचे दर्जे की है। नहीं तो यहाँ मिलने क्यों घाटी, सीधे घपने होटल नहीं जा सकती थी? धीरे सीढ़ी होयी तो तुमको लेकर मुझ से लुना मजाक कर सकती थी?"

"बस हुआ राज! मुझे छोड़ो घपना काम देखो।

राजने उलट कुर्सी के पीछे आकर दोनों हाथ मेरे कन्धों पर रखे। ऐसे एक दो क्षण वह चुपचाप खड़ी रही। हाथ जैसे मुझे आश्वासन दे रहे थे धीरे वह सुरक्षा की छाया की भाँति घपना आँखों में मुझ पर किये थी। वे शब्द मेरे भीतर तक उतरते चले गए।

कुछ बर बाद राजभी ने ठोड़ी से लेकर मेरा बेहतर ऊपर किया धीरे अनिच्छा देर मुझे देखती रही। फिर एकाएक झुककर उसने हल्के-से मेरे माथे का चुम्बन लिया। कहा— "विश्वास करो मैं शक नहीं करती हूँ।

मैंने जमे देखा नहीं। भटके से मैं कुर्सी पर सीधा हो आया धीरे साँच धोर सामने फेंककर कहा— "करना चाहिए एक। तुमने मुझे क्या समझ रखा है! देखता समझ रखा है?"

राज कुर्सी के पीछे थी। मैं बीच सामने बैठा रहा था। राज ने सामने ध्यान की अक्षरत नहीं समझी। वहीं से बोली— "हाँ धारमी मैं देखता होता है। धीरे पत्नी नहीं प्रेयमी उसे अगाठी है। तुम घपने देखते से नष्ट क्यों हो? तुमको तुम्हें धीरे प्रसन्न पाते देखें तो क्या हममें मुझे प्रसन्नता न होगी? पर धार तुम जैसे नहीं दीजते हो। मैं नहीं मानती कभी नीतिमा की तरफ रही होगी। बीच मैं अक्षर तुम्हीं उलट पड़े होये।"

मैं कुर्सी से उठ आया धीरे राजभी की धोर मुड़कर शकते हुए मैंने कहा— "जानती हो तुम क्या बक रही हो?"

"बक नहीं रही। नीतिमा को मैं जानती हूँ। वह मामूली धीरे नहीं है। वह तुम घपने को गिरा नहीं सकती हमसिधे पुण्य को भी गिरा नहीं सकती। तुम उनके बारे में निराश रह सकते हो।"

मैंने घीर भी जोर से कहा—“बस, बकवास अपनी बन्द्य करो। मुन खिया, नीता तुम्हारी देवी है। घाये घीर कुछ ?”

मुझे अपना रोप समझ न आ रहा था घीर राजभी की सांत्वना मुझे घीर बैसे आ रही थी।

वह बोली—“बैठे हो तुम नाचुकरे। आज वह घायर बली जाएगी। एक दिन को घाई तुम्हें याद किया बूमने से घई, साथ तुम्हें यहाँ लाई—फिर भी तुम बड़े हो घीर एँठे हो? जाएगी तो क्या, यह अच्छा होमा कि तुम्हारे बठने की याद लेकर जाए ?”

मैं समय घाये से बाहर होने वाला था। मैंने कहा—“राज ! अब घाये मैं बर्दास्त नहीं करूँगा। बात की हक भी होती है कोई।”

राजभी मुस्कराई नहीं। उसमें व्यंग्य ठणिक न था। बोली—“अरी एक बात मान सकोमे ?

मैं चुप रह गया। बोला नहीं।

“बोलो मानोमे ?”

“कहो—”

मिठ क्यान है, तुम्हें नीसा से बात कर सेनी चाहिए, फोन पर।

“क्यों ?”

“कुछ हर्ज है ?”

“बकरत नहीं है।

“तो मैं यहाँ बूमा नू ?

“नहीं।

‘तुम्हारी तरफ से मैं उससे मिल घाऊँ, तो ठीक होगा ?’

“मैं पूछता हूँ किसलिए यह सब तुम बाँधा जा रहा है राज ?”

“इसलिए कि मैं बेत लकी थी उसमें जोट है। |

“उसमें कुछ कहा था ?

“वहीं तो वह यहाँ घाती नहीं।” |

“सब तुम्हाय बहम है राम ! धीर अब उस बात को छोड़ो !”

“नहीं एक बार उसके जाने से पहले तुम्हें मिल जाना चाहिए ।

“मैं नहीं जा सकता ।

“तो देखो मुझे जामा पहनें ।”

“जामो, जामो छी बार जामो । मुझे छोड़ो ।”

राजमी ने धाये बिंद न की । बोमी—“देख लो, वीता ठीक समझे । ठाकुर को छोड़ने जामोने न स्टेशन ?

“मैं ?—बसा जाऊँगा ।

“नहीं हो तो मैं जा सकती हूँ !

“यही ज्यारे ठीक होगा राज तुम्हीं छोड़ जाना ।

‘तो उनकी जमीन पर घपने जाने की बात पक्की है ?

“धीर क्या पक्की ही समझे । तुम तो राजी हो ?

“—धीर यहाँ पालियामेन्ट में धरहाजिर रहा करोने ?

“कमी-कमार या जामा करुंगा । काम तो कुछ है नहीं । ‘तुम सब जा सकती हो ?

“तुम्हें लोकरों के घरोसे छोड़कर तो मैं जाना नहीं चाहती ।”

‘तो—ठीक है साथ ही बसने । ठाकुर से मेडिन कह सब रखना/ हंसजाम के लिए ।

“घं हाँ—मैंने तुमसे कहा नहीं कुंवर साहब का चीन या ।

“कुंवर ? क्या कहने से ?

‘हो सकता है घाम को बह या ही जाए ।

“घाम घाम ?

“हां जाने क्या जरूरी काम बता रहे के । उठी बजह से होटल में टहरेने ।”

मुझे मुनकर घण्टा नहीं लगा । कान—“उध ठाकुर साहब को बुलाना था ।

ठाकुर आए तो कुछ नहीं मामूय होते थे। बोले, “मुझे बुनाया या ?
कही।

‘बैठो भी पहले। मैंने कहा। “हां, बीरेस्वर कसे बस रहा है
फार्म पर ?”

“क्यों ? ठीक बस रहा है। मैंने कह ता दिया या कि तुम्हें फिफर
नहीं करनी है अब उमकी।”

‘हां बही मैं सोच रहा था कि कृंवर के साथ इंडस्ट्री में उस लगाने
की बात नहीं जानी चाहिए।”

“क्यों उसका मन बहां लुसे तो क्या हर्ब है ? सब बात यह है
सहाय, कि तुम जहां हो बहां नीत की भाषा और नीत का बाना बस
सकता है। बीरेस्वर का मन अगर नहीं चाहता है सबक बनना तो सभा
की बातों को उस पर बोधन की बरूत बना है। घावमी भरता है और
दमता है तो घाव ही भर जाता है। उससे पहले मन में उठने-बढ़ने की
बाह रहती ही है और बीरेस्वर कोई धीरो से बसग नहीं है। तुम हमेशा
घपनी भिसान देने लग जात हो। मैं तो सोचता हू कृंवर के साथ होकर
एक बार बस निकसेगा ता कहा नहीं जा सकता कि वह कहां तक
पहुंचेगा।”

‘नहीं मुझे इंडस्ट्री-बिंडस्ट्री पसन्द नहीं है।

“घावकी पसन्द का सवाल बहां है ? हमसा घावकी ही पसन्द।

‘नही ठाकुर उनके लिए फार्म ठीक रहना और तुम्हारा मन माव है
तुम को हो साक हो। इंडस्ट्री से घावमी बामाक बनता है। यही तो फरक
होता है वेगत और बाहर का। वेपो ठाकुर बीरेस्वर तम्हारे पास रहेया।
कृंवर के पास उसे जाने न दना।

ठाकुर ने बिगमय में मुझ देगा। बहा “क्या वह रह हो मह। मैं
तो बलिष्ठ चाहता था कि कृंवर से बिच कर्म। लेकिन मैंने देगा कि वह
घपनी रबीनों में है, बिमी भी और की उन्हें सुप नहीं है। मुझ तो
ख्याल था कि उन्हें बीरेस्वर का ख्याल होला।”

तुम ठीक कहते हो ठाकुर । क्याम नहीं है घोर इचीनिए में बहूवा हूँ कि बीरेस्वर की नहीं घगर कुंवर उसे जेने लो किसी घोर ही घातिर सेये । मुझे यह बांक-केर पसन्द नहीं है ।'

“घण्टा घण्टा । तुम फिर न करो । मैकिन बीरेस्वर का रास्ता घागे तुम बनाने वाले हो यह भी बिमाग से निकाल दो । तुमने उस पर जम्मीवे बांधी जाहा कि जो घादर्य तुम पूरे नहीं कर सके वह करेगा । घोर इस तरह ऊपर से उसे सादकर मामूम नहीं तुमने घपने लिए उसमें कितनी चिड़ देवा कर बी है । छोड़ो यह कहो कि तुम्हारा पक्का है ? मैं लो बहूवा कि फिर सोच लो । शौकिया भाकर वहां पांच-बेहात में जाहे भितने दिन रहो तकलीफ तुम्हें बिस्कून न होगी । मैकिन इधर से मुह मोडो मत । एक बात पूछू ? वह घोखत कौन बी ?”

“छोड़ो उसे । होगी जो होपी । राज मे कुछ बताया लो होपा । मैकिन ठाकुर, मेरा मत भर मया है इस बनकर से ।

“वह लो ठीक है । मैकिन उस बनकर से भी एक दिन मत भर घापवा । घदस-बदल से मत का इसाब नहीं होता है । हाथ में घाप काम से बचने से नहीं बनता है सहाय । मन की ऐसी घादत बुरी होती है यह जानने की । नहीं राज भाभी मे लो मुझे ज्यादा नहीं बताया उस घोरत के बारे में ।

“उनका नाम नीतिमा दर है । घाला राजदान की है घोर ऊंची सोमादती में रहती है ।”

“तुमसे क्या बांठा है ?

“वहां नहीं रहती दिल्ली में । बम्बई रहती है । बास्ता पास नहीं है । राज वहां मई ?”

“ठीक है, मैं ज्यादा नहीं पूछूंगा । देखो बीरेस्वर की तरह से बिचिफर रहो । घम्बन लो घापवा नहीं वह कुंवर की तरह । कुंवर के लिए उसके मन में गार है । मैकिन जाए लो तुम्हारी बला से । मैं समझता हूँ तुम घापोने यही कोई पत्रह-एक दिन में ?”

“हाँ, पहले खबर बुना।”

लेकिन ठाकुर ने यह सायब सुना भी न था। वह जा चुके थे। मैं जब धकेला या घीर नीला के बारे में सोच निकला था। तब ठाकुर मीने कामज सींचा घीर धरेजी में मिला “मीने सायब अपने व्यवहार से तुम्हें खोट पहुँचाई है प्रिय। मुझे खेद है। धाज तुम न मई तो मैं मिसूमा।” कामज को सिफाफे में रखकर मीने बग किया घीर अर नाम घीर होटल का पता मिला दिया। इसी समय राम ने धाकर बताया कि असो फोन पर नीला है। बात कर ली।

“उसने किया था फोन ?”

“नहीं मीने मिलाया था।”

“सो यह उठ अपरासी के हाथ मिकबा हो। मैं मुन लेता हूँ फोन।”

एक क्षण मैं टिठका घीर देता कि सिफाफे पर कुछ देर राम नीला का नाम पढ़ती रह गई है। उसने फिर अपरासी क लिए बटी बचाई। घीर मैं फोन पर था गया।

नीला कह रही थी “आपने मुझे पाब किया था कहिये।

मीने ! “घभी एक उठ मिकबाया है, तुम्हारे पास।”

‘कहिए ?’

“तबेरे मेरा व्यवहार ठीक नहीं रहा। बिचार न करना उसका।”

“हाँ आपको तब क्या हो गया था ?”

‘मासूम नहीं जाने क्यों मैं भड़क गया !’

नीला उबर से हंसी “बेदिस मूट का तो प्रताप नहीं था ?”

“बह भी हो सकता है। लेकिन पहले ही दिन तुम मूरजकुंड अलने का प्रस्ताव मेरे सामने रग सकती थी। जिस इंस से जाना हुआ वह सही नहीं था।”

‘सही ! घीर मोना फिर हनी। क्यों, सप्रारनेज आपको पसन्द नहीं है ! मुझे बाबायदगी पसन्द नहीं है। अलिये पत्रन से आपने अपने को बचा लिया !’

“यह क्या बक रही हो नीला !”

“धीर नहीं तो आप किससे बिगड़े से ? अपने पतन से ही तो !”

यह घात ‘आप’ क्या बल रहा है नीला ? कह रहा है मुझे दुःख है धीर तुम बनाये ही जा रही हो । मुझे माभूम हुआ कि घात जा रही हो । या नहीं ?

“पाँच बजे के बाद मानूम होया । मैं बघाई बेटी हूँ आपको कि आप सभ्त बन रहे हैं ।

“फिर नहीं !

‘तो सब न कहताओ । मुझे नहीं मानूम था कि तुम कायर निकलोगे । जो स्त्री से घपने को बचाता है, वह सब से घपने को बचाता है । स्त्री भूत नहीं है धीर पुरुष के लिए सब की चुनीची स्त्री के रूप में आती है । मेरा धीर नबा मरा घपना नहीं है । क्या मैं उसके साथ सह्य नहीं हो सकती ? सुर्वस्मान भूठ नहीं या उसकी जगह पूरा प्रवृत्ति स्मान भी हो सकता था । क्यों क्या मुझे इसका हक नहीं है ? किसी का मन डोमता है क्या इसीलिए मेरा हक कम हो जाता है ? देखो, सहाय तुम लोग इज्जतों में धीर पदा में रह कर जाने दिन-दिन व्यर्थताओं को घपने साथ लपेट लेते हो धीर उनम धीरव मानते हो । यह सब तुम लोगों की भूगी सम्पत्ता है बकौलता है । फिर कहत हो हम सब को पाना चाहते हैं । तुम्हारा सब कपड़ों में है लिबास में है धीर सभ्वाई से बनने में है । तुम लोगों ने”

“बेबा नीला ! हाँ बताओ कि हम लोगों ने धीर क्या तितम हा रगा है ?”

“तुम लोगों ने धीरव को गुदिया बना रगा है !

टोपीबोन पर हगी क था समबा रोप मुझे बगुठा मया । उय रोप से मेरा गिग्न भाव दूर हो गया था । मैंन कहा— ‘गुदिया कभी सपती तो बहन बन्यो है !’

“बन तुम्हारे बन्धे समने के लिए ही तो धीरव को होना है ।

मुड़िया हो ती मुड़िया । कुछ घीर उसका रूप ना चाये तो बह । बुर रही ।”

“घण्टा—मह हो क्या । सब बताओ, कि नाराज ती नहीं हो तुम मुझसे ?”

“तुमसे ? तुम बकेले से क्या हूंगी । लेकिन तुम व्यवस्थापकों की बिपदरी से बकर नाराज हूँ । तुम सौम्य धारि क्षति में प्रविष्टास करले हो घीर घपने नियम कानूनों में विश्वास करने सब जाते हो । क्यो ती घपने को उस क्षति के हाथों में छोड़ा करो जो धार्मिक धीर सनातन है घीर जिसके बलाबा कोई बुरास सप नहीं है । क्यों तुम लोग बंभाव पसन्द करते हो । क्यों प्रकृति के स्वरा से बचते हो घीर संस्कृति का बेटन उस पर लपेटते हो ।

“क्या कर रही हो नीसा कस के लिए कुछ बाकी नहीं छोड़ोगी ? राज पीछे धाई लड़ी है । सेवकर कब तक पिशाचीगी ?”

एकदम नीसा का स्वर नीचे आ गया । धीमे से बोली “बड़े बीसे हो । बताया क्यों नहीं कि पास मामी हूँ ।”

“पसो कोई तो है जिससे तुम डरती हो । राज सेना फोन । नीसा बहुत बड़-बड़ के बात रही थी । जरा मुना-मुनु के ठीक कर देना ।”

राज ने फोन ह्राप में सकर हस कर कहा “नीसा ! हमारे घीमान् बी को क्या डांट-डपट रही थी ?

“मुझसे बह स थीं बात रह य । यह उनकी हिम्मत । बताइये फिर डांटूंगी बही ?”

“बापू किम बात की ?

“उहीं स पुछिए किस बात की मापू ! बड़ है उगूँ धमिकार है । फिर यह छाना बनना क्या ?

ठीक बहनी हो नीसा । इपर छोटा बनने का इन्हें मोह होता बा रहा है । प्रतिश्या होयो अगने धमिकार थी । लेकिन तुम फिर न करो । ठाटे यह नहीं हो सकते । मई भी नहीं छोटे होते है ।

मैं बराबर कुर्सी में बैठ गया था। राज लड़ी बात कर रही थी। मुझ इन दोनों की बातों में बड़ा रस आ रहा था। जाने कैसे नीला की भाषाओं भी कामों को स्पष्ट धर्म दे जाती थी। धायर कुछ अनुमान भी इसमें मदद करता हो।

नीला बोली—'सब बठाऊ राज भाभी। तुमने सब तक इनमें सभी के घपेर का डर क्यों रहने दिया है? डरते घुर हैं, माफी मुझे मांगते हैं।

'छोड़ी नीला! तुम भी अपने घपेर को सब तक कसीटी बनाए रखानी कि पररा के पुरप को पास-फैस किया करो!

नीला हसी। बोली—'नहीं भाभी। तुम्हें इनमें सब डर निकालना होया।

राज ने कहा—'तुम यह जिम्मा सब बीठी हो तो मेरे लिये क्या करने को रह जाता है, नीलिमा? लेकिन सभी को अपने घपेर के मरोहे नहीं रहना चाहिए। ऐसे घाये दुर्गाति हो सकती है। सुनो, घाब तुम दोनों हमारे यहाँ ही क्यों न आना लाओ।

'हो तो सकता है लेकिन इस बारे में उनसे पूछना होना।

'तुम्हारा तो पका है न? यह आ न सके तो तुम घपेसी ही लही।'

'मामूम नहीं जगहनि तो घाम के लिए नहीं मेरे साथ का उप तो नहीं कर लिया।

'उनके घाटे ही मुझ बताना घण्टा?

'घण्टा।

राज ने घान बन्द दिया घोर मुकच कर मेरी घोर बला। मैंने कहा—'उन्हें डर पर क्यों बुला रही हो?'

'तुम्हारी बरह रो। नीला को अपने से डूर रगने की कोण्ड तुम्हारी टिक नहीं है सिरु सीम है।

'लेकिन डर बिजनिया में है। यह घायरा उठाना चाहने है।'

“क्या बुरा करते हैं वह धमर फायदा बठाना ही चाहते हैं। बिजनिष्ठ किसी को तो करना है और फायदे के लिए वह किया जाता है। या तो बिजनिष्ठ को बलम कर दो, नहीं तो फायदे की सोचन में कुछ हर्ज नहीं है। मुनासिब को हो वह तुम कर सकते हो। मा-मुनासिब की कोई मजबूती नहीं है। माहक संशय रख कर व्यवहार करने की क्या जरूरत है। ठिठ पर धब तुम किसी पर पर तो हो नहीं।”

“तो भी अपने सामाजिक सम्बन्धों का हमें ध्यान रखना चाहिए। ताकि प्राण उसमम न पड़े।

‘हम कौन होते हैं कि जो सोचों में अन्धे-धुरे का फक डालें ?’
 भीसा की तरफ तुम्हारा फज है और यह मजबूत बात है कि और सम्बन्ध रख सकते हो सामाजिक बचाना चाहते हो। तो नहीं बुझाना है उन सोचों को ?”

‘दिए सो जैसा तुम चाहो।’

“पांच बजे के बाद फोन करके देखूँगी और तुम्हें बत्राज्मी—अनुर साहब न बरूँती ऐसी क्या बात थी ?”

“बुछ नहीं। बीरेवर को मैं नहीं चाहता कि कूबर घीचि। उसका ठाकुर क साथ ही रहता ठीक है।

“क्यों हर्ज क्या है ?

“तुम दोनों एक स्वर में बोलते हो क्या ! अनुर भी कह रहे थे हर्ज क्या है। हर्ज यह है कि कूबर की निमाह हम पर है, बीरेवर पर नहीं। समझी यह हर्ज है।

“निमाह होने को तुम तो छोड़-छाड़ कर पांच में बैठने जा रहे हो। तुम्हारे नाम को घब क्या गतरा है। मैं भी सोचती हूँ कि अगर उद्योग व्यापार के काम में जाकर बीरेवर का मन गुने तो अच्छा ही है।

“तुम सोच कर सकते हो अपने जी की। मैंने अपनी राय बें दी है।”

‘हां तुम वह टिकर छोड़ दो।

‘मैं कुर्सी पर ही बा। राजभी पढ़ी थी और यह कहकर वह जाने

समी । मैं किस तरह धीरे-धीरे परिवार के सब के लिए प्रभावहीन बनता जा रहा हूँ यह अनुभव मेरे भीतर बिबटा जा रहा था । इस पर मातो मीने घर से लुप्तकर बाहर हो रहना चाहा । अनुभव हुआ कि घर छोड़ बाहर सब ही सो हैं और पुण्य का क्षेत्र बाहर है । वहीं उसके लिए आवाहन है वहीं आवासन । जो घर में अपने को बचन में पाता हो, बाहर वही लुप्त जाता है । सब जैसे मुझे याद हुआ कि पारिवारिक भी जैसे सामाजिक में बामा रूप हो सकता है । जिसे सार्वजनिक बनना हो उस घर-बाहर के सम्पर्क से सम्मुख मुक्त ही होना होगा ।

मैं कहाँ हूँ ? मामूम होता है नहीं भी नहीं हूँ । अनिश्चय में हूँ और अमर में हूँ । परी उड़ते हैं बूझ उन्हें डासकर अपने एक जगह रखे रहते हैं । धारमी घर बनाता है इधर-उधर भी बसता-फिरता है । पौंसले की तरह उसका घर एक नहीं हो सकता । मामूम होता है कि उत्पट जीवन उठना ही प्रतिमय होगा । स्थितिनिष्ठ धारक उस बकड़ में जड़ पड़ता जायगा । समता है स्थिति को राजधी के निर्णय पर छोड़ देना चाहिए और अपने लिए मुझे पति का ही ध्यान रखना चाहिए । विचार की इस संकति में मुझे फिर भीला का ध्यान धार्य और उसके स्वभाव के प्रति जैसे एक सृष्टा-नी मन में उत्पन्न हुई । मानो वह है जो अपनी नहीं है । सत्ता जीवत है और लहरीनी है ।

पड़ी में धमी सबा चार बजा है । पानियामेस्ट की बैठक के बिना बचन भारी हावा लयता है । मीने किताब ली और बिबान पर जा बैठा । फिर पढ़ने-पढ़ने जाने धीरे से धांगों पर सब मीन घा गई ।

राजधी ने जवाबा सब पांच भीम हो गया था । बठाया कि नीतिमा था नहीं सवगी । मैकिन तुम उसका साथ होना में बिबर से रह हो । मीने तप कर दिया है ।

‘ और तुम ? ’

‘ मुझे ठानुर साहब को बहूचाने जाना है न । सबा ली पर ट्रेन है । ’

“यह तुमने ठीक नहीं किया।”

“लेकिन यह कुछ किया नहीं जा सकता। हर सोच हमें भी नहीं
व्यवहार पर कि केंद्रित करूं। बने जाना क्या बात है ऐसी ?

मैंने राजश्री को देखा। उसकी धारों में तनिक अभियोग नहीं था।
अच्छ विरक्त उसकी मुद्रा थी। मैंने कहा ‘राजश्री तुम मुझे खो
देना चाहती हो ?

“पकड़ रख कर तुम्हें वा जाऊँगी यह तो कहीं तुम कहना नहीं
चाहते ? जितना तुमको स्वतंत्र रख सकूँगी, उतने ही तुम मेरे होमे।
यह मैं अनुभव से जान गई हूँ।

मैंने कहा “राज।”

उसने कहा “बस” और फिर एक सिफाफा हाथ में लिया। उस
कंपन में मेरी सम्पत्ता थी। साँचे छह का समय था।

राजश्री ने पूछा “जाना है न इसमें ?”

“जाना ता है। कुंवर का प्लेन क्या आता है ?

‘राम को साउ-भाठ के बीच में कभी पहुंचना होगा। लेकिन वह
तो होना में ठहर रह है। घण्टा मनेरे मिनने घाने को कहा है। जो
तुम तपार होयो बसत ग्यादा नहीं है। फलसन से बेखो वापिस
घरिं घाना। टापुर को जाना है।

मैं उदा और तैपारि में मन गया। राज कुछ देर कमरे में फँसी हुई
बीजों की सम्भालती रही। फिर मानो अगाह निगाह से मुझे बचती हुई
बह बनी गई।

मैं अपने को शमा नहीं कर सकता हूँ। फलसन में देर समठी गई
और मैं बिचल बना बैठ रहा। सम्पत्ता में यही शोष है। पर आया
तो टापुर का चुटे प। स्टेसन पर आकर दुमा-सताम वा ही समय
मित पाया।

राजश्री एक शब्द नहीं बोली लेकिन राजश्री निगाह में से विकारत

झांक रही थी। अन्त में उसने कहा "बस हो रहा है। तुम्हें बिनर पर भी जाना है।"

मैने कहा 'जाता रहूँगा। बस मिनट बाव सही।'

ठाकुर ने कहा "नहीं सहाय तकस्मुफ की क्या बात है। तुम्हें बस पर पहुँचना चाहिए।'

मैने कहा "यह कैसे हो सकता है भई।

ठाकुर बोले 'तो मामी जी घाय भी चाहते। घायम से मैं बँड तो गया ही हूँ और क्या चाहिए?'

राजमी ने घायपति न की हम दोनों ने ठाकुर की नमस्कार किया और वापिस चले घाये। राजमी कार में मुम बनी रही।

पर घाकर बोली 'मै में बस पाँच मिनट है। तुम्हें उतरने की जरूरत नहीं है। कहकर सीधी घर बहती चली गई।

यह मुझे अच्छा नहीं लगा। मैने भी डाइवर को एकदम वाड़ी बताने के लिए कह दिया। सोचा कि यह भी कोई तरीका है।

होटल के डाइनिंग कम में देखा कि यहाँ हमारी बों हैं। दर साइब के गाब कोई बिदेयी मेहमान हैं और हम दो अलम मेज पर हैं।

मेरा मन स्वस्थ नहीं था। पानी को पच बात पर शिद कर जाने का जो अधिकार मिमा हुआ होता है—पति की हैमियत से मैं उमी सम्बन्ध में अशिश-या कुछ तोच रहा था। अच्छा हुआ कि मैं पर से दूर हूँ और घायार हूँ।

"मामुब होता है, घायकी नाउजमी दूर नहीं हुई।

मैने कहा "नीसा, कमी घाने और पर की तरफ के फर्ज में तुम्हारे घाय अलबन नहीं हो घाठी है?'

"नहीं कब सब घायनी तरफ होता है। जगका अमूरल नहीं होता कि अलबन का सवाल हो।

"बबाल मेरे लिए तो बन ही घाता है अलबन बन घाता है।

“तबमी भामी बीसी पत्नी के रहते भी बन जाता है सवाल ? वो बसती तुम्हारी है ।

मैं इसका उत्तर नहीं दे पाया । कारण, नीलिमा की कुर्सी के पीछे तमारा था लड़ी हुई थी और घाबर हाथ जोड़कर उसने कहा था, “नमस्त । खण पीछे बीमी बात से बसते कुंवर या नमि ये । बिन्होने बोसकर नहीं विरक हाथ जोड़कर मधस्कार किया ।

मैंने कहा “घाधी घाघो । यह बचबर से कुर्सी से लो । नीलिमा देवी—यह हमारे कुंवर हैं, और यह है तमारा ।”

कुंवर ने कहा तकमीफ न कीजिये । हमारी मेज उपर लगी है । तमारा नीलिमा से हाथ मिला कर प्रवेची में बाठ करने लम गई थी ।

कुंवर ने कहा “घात्रा दीजिये कितर के बाह मिलेगे । बसो तमारा ।

“तुम बसो मैं घाती हूँ ।

कुंवर इके नहीं लम्बड से बसे नये और तमारा मुठ से बोसी— “होटल की लुप बिस्मती है कि घात्र घाप भी यहाँ है ! नीलिमा देवी घापका धम्मबाद ।”

नीलिमा अपनी तरफ से बन्व भी और यह उचित था । तमारा ही उससे बोसे जा रही थी । धम्म में उसने कहा—

“मैं हज लो नहीं कर रही हू । घान कितर के बाह क्या कुंवर हाह्व के करने में घायेगे ?”

मैंने कहा, “कुंवर तुम्हारी राह देख रहे हैं तमारा ।

“मच्छा नीलिमा देवी, बहुत लुगी हुई घापसे मिलकर । नमस्ते, उहाय साह्व ।

बाबे पर नीलिमा न धीमे से पूछा “यह कौन है ?”

“तमारा है ।”

“है कौन ?” पूछते हुए वह मुस्कराई ।

मैंने भी मुस्कुराकर कहा "देखती तो हो जो सामने है।"

"हां देखती हूं। और मुझे बहुत बहुत खुशी है कि तुम अभी इस ऊपर
हैं हो। इसी नाम पर तो यह नाम लो !—अरे जो मैं भूमी। तुम
तो बाहिर हो।

और कहकर वह बुद्धिमत्तों से निकलती-थी हंसी हंसी।

सात

हल्क-हल्के झुपकू बजने की-सी वह हंसी—क्या मुझ तोड़ने के लिए थी ? मेरी तरफ बढ़ा आम बिच कर जब मीसा के हाथ में सूना-सा बसा रह गया था । उसने उसे ऊपर ल जाने की चेष्टा नहीं की । वह मुझे देख रही थी—जैसे दृष्टि में तरल कल्पना हो ।

मैंने साप बन के लिए जग फल का रस लिया और गिलास को उसके आम के मास ऊपे उठाकर टनकाया । पर उसकी मुद्रा से स्पष्ट था कि नहीं इतन से मीनता क स्तर तक उठना न हो सक्ता । कुछ बेर बाद बोली "अगर जो बजित रसते हो फिर उस पर मर्ब मानते हो । इसको मैं तो —अभाप्य कहूंगी ।"

मुरकाराने में उसकी धारें तनिक छोटी हो धाई और उसमें मधु का मध । मधु में जैसे कुछ तिक्त भी हो ।

मैं झुपकान उसे देखता रहा । बोली— क्या बताया था माम ?— तमारा ? मैंने बपार्द दी थी कि तुम जब भी हरियासे हा । फिर निपेप—"

मैंने भीम म कहा "निपेप नहीं पर मरी बजह से तुम परहेज में न पड़ना । तुम्हें धारन है, मुझे नहीं है । कम इतनी-सी बात है ।

"नहीं इतनी बात नहीं है ।" नीतिमा ने कहा बात यह है कि इसे 'तिरिक्त' कहते हैं । तुम निपिटि नहीं घडस खादत हो । ठीक है, रवो घडस बनने बात । लेकिन मुरक तुम्हारे बराबर से घगर निर

मैंने भी मुस्कराकर कहा 'बेसती तो हो जो सामने है ।

'हां बेसती हूं । धीर मुझे बहुत बहुत खुशी है कि तुम अभी इस ऊपर
हूरे हो । इसी नाम पर लो, यह नाम लो ।—घरे घो में भूती । तुम
तो बाहिर हो !”

धीर कहकर वह धूपधूमों से निकलती-सी हंसी हंसी ।

सात

हस्के-हस्के बुपम् बजने की-सी बह हसी—क्या मुझे तोड़ने के लिए
की? मरी तरफ बड़ा जाम खिच कर घब नीला के हाथ में सूना-सा
बना रह गया था। उसने उस ऊपर स जान की चेष्टा नहीं की। बह
मुझे दल रही थी—दोमे दृष्टि में तरल कक्षणा हो।

मैंने साप देन के लिए जग फम का रस लिया और गिजास को
उठते जाम क साब रूप उठाकर ठककाया। पर उसकी मुद्रा से स्पष्ट
था कि नहीं इतने स भीनता के स्तर तक उठना न हो सकेगा। कुछ वर
बाद बोनी “घन को बंधित रखते हो फिर उस पर सब मानत हो।
इसको मैं ता—काम्य बटूगी।”

मुझपाने में उसकी धानें तनिक छोटी हा धार और उसमें मधु
का मय। मधु में जैसे कुछ तिष्ठ भी हो।

मैंने बचान उस देगना रहा। बोनी— क्या बताया या नाम?—
तबारा मैंने बपार् की की कि तुम सब भी हरियासे हो। फिर
निरप—”

मैंने बीन स बजा “नियेस नहीं पर मेरी बजह से तुम परदर में
न पड़ता। मुझे घान है, मुझ नहीं है। कम इतनी-नी बात है।

“नहीं इतनी बात नहीं है। भीनिमा से बहा ‘बात यह है कि
इसे तिरगि बहुर है। तम तिरगि मरी घबम बाहुर हा। टंक है,
रसा घान घान पाम। मकिन मुष्ट मुम्हारे बपबर से घान निर

जमा जाए तो देख कर उसे कुड़मा मत । बाहिर से यही डर रहता है, मजर सगने का डर ।”

घौर मुस्कराहट उसकी हंसी बनने को हुई ।

मैंने कहा “नीला तुममें स्पिरिट की कमी तो नहीं है कि बाहर से फिर घौर भी बाम में मर कर सेनी पड़े !”

ताउ के लिए उसकी मुस्कराहट जैसे सायब हुई, “यं हा ।” घौर फिर हठाए इस घाई । बोली—“सही कहा तुमने बहुत सही कहा । बरकर तुम्हें होनी चाहिए की वो घबल का हंकरा ऊपर देकर अपने को रोके रहने हैं । लेकिन क्या किया जाय एबज किसी को तो भुगतना होना । मैं सोचती थी—तुम अब मिलोगे नहीं । सोचती थी कि मारज नहीं हो मारजी का जरिया घपना रहे हो । तास्तुक तर्क चाहते ही । झूठ कहती हूँ ?

“क्यों ऐसा क्यों सोचा ?

“भामूम नहीं । लगा कि तुम मुठ रहे हो । मुझमें नहीं सबसे ही मुठ रहे हो । बिपर दुनिया है उससे उमटी तरफ जाना चाहते हा । डर तो पहले भी था मुझे तुम्हारे बारे में । लेकिन इन बार—बया बात है कांटा क्या है ?

“कांटा ?”

“तुम्हारे दिमाग में था न कि घपर मुस्क की बागडोर तुम्हारे हाथ या जाय तो ऐसा करो बीमा करो बेग को स्वर्ग बना दो । यह बात क्या हुई ? इरादा छोड़ बीठे ?”

‘दयान नहीं गयान जाहे तो हां यह सचती हो । लेकिन मैं बैमता हूँ शुरू नीच बुनियाद से करना होना । राज की ताकत घमन नहीं होती ।

‘यह बचने कब से लगे हो ? जब से घाली टूट हो ?

“सायब तुम्हारा प्यप टीक हो । पर गयान की अड़ पहले से थी । क्यों तुमने उमका कमी बिकर नहीं घाया ? बरकर घाया होया ।

“सच कहना, बाबी उस्ती पढ़ रही है बबह यह तो नहीं है ?”

“नहीं बाबी उठनी उस्ती भी नहीं है—

“खैर, मैं उसमें नहीं हूँ। मुझे क्या है ? तुम्हारे लिए धारमा का उपास उठा हो तो मैं या कोई क्या कर सकता है ? पर सच कहो दुनिया, ये धरम कोई सचमुच परमेश्वर होता है ? धरम हो तो धरम जाने से बह धायद मिल भी पाय। ‘घंहु छोड़ो। बह मैं क्या जानती हूँ। लेकिन लगता है कहीं किसी टोकर से तो तुम नहीं सीप रहे हो। तुम कहते हो ऐसा नहीं है। तो बनो ठीक है। लेकिन धरम कांश जरा भी रहेना तो धरम लगना बह की रिहार्ड नहीं हीगी।’

मैंने नीलिमा को देखा। हाथ मे धिर उसके पैंग या धाँसों में बमक थी, बेहरे पर जरा-जरा मुस्कराहट धीर गम्भीरता थी। उसके चश्मों में कोप उल्ल विज्ञान न दीखा। मानो भीषे मेरे प्रति लगान हो। मैंने मन ही-मन धरम को हठत्र धनुमब किया। लेकिन ख्याई से बोला ‘तुम्हारा धरम क्या है ?’

‘धिर मराबरा ? यानी मैं कोई हूँ। धरम सोचो यहाँ तक तुम कैसे धार ? दुनिया से बनटी जाने वाली राह तुम्हारी होती कामयाबी तुम्हारी उसी तरफ होती तो धरम तक बह राह तुम्हें छिपी क्यों रहती ? इस उमर में धारर ही क्यों मूमछी धीर दीजती ? मैं तो मानती हूँ कि मूल में निराधा है। रोप भी तुम में उठा या मन के धरमड़े में से धाया, या। निरधर भी बना है, हठ में से बना है। ‘धरर तुम इस बरत मेरे हाथ से जरा पी सकते तो धरमने नजरीक खुल जाते। खुद देस भिते कि धरम तुम क्या हो धीर धरमने साय जोर-जबरदस्ती तो नहीं कर रहे हो। तुम ऊँचे होना चाहते थे उससे ऊँचे धीर उससे ऊँचे। मैं बहती हूँ इस उद्विगल में कोई बुवाई नहीं है। यह इम्गामी हक है। धीर धरम नहीं तो धरम बह तुम्हें मिल सकता है कि जिसका कभी तुमने धरमना लिया था। ‘धरमने से लौटकर धरमिस जिस ताक धाधोये बहो तुम्हें धरमनी धारमा नहीं मिलेगी। जिस में कब तक बसोप धरमिर टूटोने धीर

का घामबल हो। मानो एक साब बुनीठी धीर धम्मवर्षना हो कि प्रहार से तोड़कर उसकी दहजल को मिटा जामा जाए।

नहीं मैं नीच को धागे बड़ा नहीं सका। हठवत् धम्म से मुस्कृत कर कहा "धीछे हटती हो! देती क्यों नहीं?"

"तुम्हारा मतलब है कि मैं भी न हूँ?"

"नहीं। मतलब है कि मुझे भी हो।

"दिया या तब से नहीं सके। धब—बमकी से लोपे? नहीं वही बार किसी धीर के हाथ होगे जो बने। राज दे तो ठीक है। फिर धाघोपे तो मैं भी हूँबी।"

"ये राज को बीच में तुम क्यों लाती हो।

'बह बीच में है।'

"तुम कह रही थी मैं पी के लुम्ना। मैं सुलना चाहता हूँ। तमाघा न करो धाघो हो।

"धब भी कहती हूँ सुलोपे। लेकिन तुम्हारा बन्पन मैं नहीं हूँ राज है। धोलेगी तो बही धोसमी।"

मुझ प्रतीत हुआ कि यह पयादे तो नहीं हो रहा है। घासपास की मेज बामों के लिए बही डूम बुरय तो नहीं बने जा रहे हैं। इसलिए यथा बत् होकर मैंने कहा—"राज बीच में नहीं धायेमी।

"नहीं। मैं उसका भरोसा धपमे मैं से नहीं छोड़ूंगी।"

'उमका भरोसा। बँसा भरोसा?

"तुम कहते न थे कि उसने भेजा है?

'तो—?

'राज मुझ पर बीठ नहीं सकेयी। परमी है तो हो।

मैं इस उद्गार को समझ नहीं सका। उसमें मान हो सक्ता था पर उँघटी मुस्कुराह" थी।

"यथा धतलब तुम्हारा कि तुम धीतोमी?"

—"मतलब—कुछ नहीं। उदार बानी ही नहीं हो सक्ती" तुमसे एक

बचन चाहती हूँ बोये ?”

मुझे घासपास का भान होने लगा था। मेरे हाथ में फलों के रस का मिश्रास था और उसने अपना पैर दूर कर दिया था। ऐसे ही हमने बागों में जासी बेल बनायी थी। दूर से बीरे को उम्मीद में देखता हुआ मैं रू-रूकर बल सेता था। वह पास आने के लिए घायब हमारी कुदलत की राह देख रहा था। मैंने कहा “भाईर तुमने ई दिया है, नीका ?

“भाईर—ही जायका। तुमने बताया नहीं बचन है सकोये ?

मैंने हसकर कहा “पहले भाईर तो रो।”

उसने हबेसी ऊपर किया अपना हाथ मेर पर मेरी ओर बढ़ाया। कहा “लाओ हाथ यो। मैं बचन चाहती हूँ।

“क्या बचन चाहती हो ?

“पहले हाथ पर हाथ रखो।

मैं बिनोद में बाल उड़ा देता। पर उसकी निगाह में कुछ था कि वह ही नहीं सजा। मन्नी उस हाथ की संयनिया थी और हबेसी जरा-जरा मुताबी थी और वह हाथ निबेदित प्रतीछा में टिका था। सामान्यत यह समाया मान लिया जा सकता था। हाथ बहस-बहस से घिरा था और मन्मीरता की बहा संयत न थी। मैंने जाहा कि मान मूं और टाम हूं। इसमें कुछ बेल वह हबेसी जसी तरह फेंकी रही। अनंतर मैंने अपने पजे से उसे बक लिया। कहा “कही ?

“कहना नहीं है बचन है।”

“ही बचन है।

“मैं तुम्हारी कोई नहीं होती हूँ। कबिल मेरे हाथ पर तुम्हारा हाथ है बहती हूँ तुम पीछे मुड़कर नहीं देखोगे। आने ही बड़ोये। बोली दिया बचन ?

मैंने अपने हाथ से उमारी हबेसी दबाई। कहा “यह ली बचन की बान न हुई। मतलब बताया क्या है ?

‘मठ सब कोई बूझा नहीं है। जीना घट तक संभव में है होता है। बीच में सब धान्ति चाहते रहते हैं। चाँति वह पुरुषार्थ की नहीं होती हार की होती है। नहीं वह चाँति ही नहीं होती। थिक्क पपाय होता है।’

‘मठ सब में समझ नहीं।

‘मठ सब यह कि राजनीति तुम छोड़ नहीं सकते बचन इ चुके हो।’ कहकर उसने नीचे से धपनी हथेली में मरे हाथ को बाँध लेना चाहा। इसमें उसकी उँगलियों का दबाव मैंने समझना लिया और उसने हाथ खींच लिया। धनन्तर उसने मुझ कोई या तनिक सबसर नहीं बिया बोली, ‘हाँ धाँर ! बसाधो क्या लोग ? और मुझकर उसने बीरे को इपारा किया।

मैंने कहा ‘नीमिमा ! तुम राजनीति से बरी हो।’

उसने मरी बात को जैसे गुना भी नहीं और बीरे के धाने पर पुछ-पुछकर धाँर भिन्नाने सम गई। बरा जमा गया और मैंने कहा— मुझे तुमने गुना नहा या नीला। मैंने कहा या कि राजनीति न तुम न धाँर और उसके बिचार को भी छोड़ दो।

नीला ने कहा ‘धभागिन है वह जो स्त्री है और राजनीति न धानी है। या उतका बिपार भी करती है। स्त्रीत्व न माय लमे समझीता ही होता है पासल नहीं होता।

‘धिर ?

‘स्त्री के पास प्रेम है। धिर उन राजनीति का क्या करना है ? राजनीति बर वह जिन स्त्री के पास पुरप न हो। बीनी धभागिन में बन सकती ? क्या यह सम्भव है ? मठा राजनीति मठा ?’ तुम नहीं साँ रहने — इग रहने में मुझे बोलना रात्र विना जाता है। गिजिन पुरानी माने पान करो। तुमप मान व और मैं गुहारी नजर में न उन धानों का मैं धानत तर्दे देगने सम ही थी। धाँरमी अपने के निदे जीता है और धी उतम अपने क धाँरमी के निद जीती है। दर के साथ मैं रहती

की ज़िंदा तुम्हारे लिए थी। तुम्हारे लिए—धानी जो सपने में बनता था और सपने में करता था। इसीलिए आज तुम हो कि सब कुछ होकर घपरिग्रह बने हुए हो। इसके भेष का मुझमें ज्यादा और कौन समझेगा? लेकिन भय जो सोचने लग गए हो वह दायर कर्त्तव्य है सपना नहीं है। कर्त्तव्य से घादमी बचता है सपना उसे छोड़ता है पर घमस बात तो मेरी घपमी है। सपने में मौत-हारकर तुम जाओगे तो मेरे जीने के लिए क्या आधार रह जायगा?

मुनकर मुझमें जैसे गुस्ता बनता हुआ उठा। माना मैं घपना न हूँ, किसी के लिए आधार होना को हूँ। यह बर्बाद नहीं किया जा सकता। आधार ही बनता होता तो परिवारके लिए न बनता? वैसा बनेरता मकान ब्यादाव कट्टा करता। यह सब झूठी भाषा है आधार देने या बनने की। घरती को गुरुज का आधार है, लेकिन घरती घर है। चांद को घरती का आधार है चांद भी घर है। आधार है लेकिन किसी पर किसी की बिठा नहीं है। मैंने कहा नीता। तुम्हारे जीने के लिए आधार दिव रहने को मुझे जीना हागा!

मुझमें कठोरता थी। मुनकर नीता फरक पड़ गई। यह घबरा-सी मेरी घर देग उठी। मैंने कहा सपना या तो मेरा या सब उसकी बपट कर्त्तव्य है तो भी मेरा है। तुम—इसमें क्या चाहती हो?

“मैं— कहने-बटने यह सबी और घरत हा घाई बोनी “कूट नहीं चाहती। बचन दिया या तो—यागि करती हूँ!

यह नीता एगारक मरी समझ में नहीं आई। झुंझलाकर बह्य,
“घागि यह सब क्या है?

कूट नहीं तुम आधार हो!

‘देरे न देर की!’ मैंने जैसे स्वयं को टालने को कहा फिर बोला,
“घात्रा नीता तुमसे?”

हा मुझमें। “गनिय बचन मे भी।”

“नीता भय रात्रनीति को सपनी नहीं हो!”

“मैं उस कमबख्त को समझना तक नहीं चाहती। कष्टी हुई जानी वह तत्पर हो घाई, 'बहु पुरुष का शौक है। कब स्त्री पुरुष की समझ सके है कि वह क्यों मड़ता है, मरता-माएँटा है, सिंकार में घोर मुड में मजा सैता है ?—यह समझ म कैसे घा सकता है ? फिर भी स्त्री है कि पुरुष के उस शौक में मबर करती है। इसलिये नहीं कि शौक को समझती है बल्कि इसलिये कि पुरुष है वह घोर अपनी सकलता की राह पर स्त्री का प्रार्थी है। तुम नहीं हो प्रार्थी घोर बहु शौक है। जसो, मैं लुप्त हू।'

उसका बार लींछा था। पर मैंने कहा 'राजनीति तुम देखती हो वहाँ घाकर फल गई है। बहु धनीति बन गई है। फिर उसमें रहन से कातिप्र ही तो मयभी हाय क्या घाएगा ?”

'राजनीति कब धनीति न थी ? घोर तुम कह सकते हो कि देश का मबर एक बनने की तुम्हारे मन म स्पृहा नहीं रही ? इस स्वाहित्य को नीति-धनीति पर कभी तुमने सोला था ? मैं कहती हू घण्य पे हार के हैं नीति-धनीति। हार को धनमाने के लिए तुम इन शर्तों को टटोल नाए हो घोर मेरे सामने ऊषा चठा रहे हो। पर स्त्री की घोर उसके प्रेम की शान्य शर्तों के पार देख सकती है। कह चुकी हू कि तुम घाबार हो। जामा घोर धन घाबर्स के घोर कर्तव्य के साब रहो। जैसे ही जैसे घाबर्नी बीबी-बच्चों के साय रहता है। धाराम की घोर पाबर्गी की शिल्ली होगी बहु घोर मुबारक हो बहु तुम्ह। मैं राजनीति नहीं समझती हू तुम समझते हो। सकल कुछ है जो तुम नहीं समझते हो हम सब समझती है। राज भी समझती है—

“जानी मुझे मबर एक बनने की कोशिस करनी चाहिए ?”

'जम्बर करनी चाहिए। घण्य घण्यस-दोयम की भाषा मन म की घोर उस भाषा ने घब भी तुम्हारे निचे धरना घब नहीं तो दिया है—तो।

“जानती हो इनका क्या मतलब होता है ?”

‘तुम भी मतलब होता हो।’

“मतलब होता है, देव को तोड़ना उसके टुकड़े कर देना।”

‘बड़े शाय्यों को पैदा करके तुम अपने को बरत से बांधो और पीछे हटने का कारखाना बना सो तो कोई तुम्हें रोकेगा नहीं। लेकिन होनी को अपने हाथों में मानना अब से छोड़ो हो ? देव को तुम तोड़ सकते हो या शायद देव को जुड़ाने वाला भी अपने को मान सकते हो। इसी तरह तुम लोगों का काम बला करता है, शाय्यों के गोरक्षरूप से। उसके जोड़ तोड़ से।’

“नीला ?”

“नहीं अब उस बात को छोड़ो।

‘तुम समझती हो राजनी यह चाहती है ?

‘जबर चाहेंगी क्यों कि जानती हूँ मैं उसमें प्रेम है।

‘लेकिन नहीं चाहती यह।

‘इसलिये कि तुम्हारे मुह के शाय्यों को तुम्हारे सामने कभी धरने मुंह से भी बुझा देती है। ‘नहीं तुम गांधी नहीं हो।

“लेकिन गांधी का धर्म तो है।।”

“नहीं। जाग नहीं है, सिर्फ प्रकाश है। बला बलाया धर्म कोई नहीं हुआ करता शिन्दगी के लिए। पर छोड़ो बैरा घा रहा है।

स्वीकार करना होना नीतिमा के अधिकार को। यह शुद्ध या मानो स्वप्रतिष्ठ था। उसे कहीं भी आकारकता न थी।

हमारे बटने से पहले ही बिना की मेज पर आकर हर हमसे माछी मापते हुए कह गये थे कि वे रिसेप्टन में बैठे हैं। बिना के बीच बातचीत में मैंने अनुभव किया था कि नीतिमा को साथ रखना ठीक होगा कुंवर से बिना मिले जाना मुनासिब नहीं है और यहिच सम्भव है कि समाज भी उनके साथ हो। ऐसे समय नीतिमा के कारण समसंजस की परिस्थिति सहज बचार्द या सठपी। जाने के अन्त में इनलिए मैंने कहा—

“तुम्हें रिसेप्टन में दर की तरह जाने की जरूरी न हो तो बनी बरत कुंवर को देख लें।”

“मैं जानूँ ? मुनासिब होना ?

मुझे महाराज हो जाना ।

“इसी हाटस में ठहरे हूँ ?”

‘अन्धकार तो यही है ।

हम सोच गये तो कमरे के बाहर सातवज में ही कुंवर और तमारा बीनों मिल गये । चायब हम उन्हें न भी देख पाते । मन्दिन तमारा नै उठकर हम गोकना हतो ! इबेर घाय कहां जा रहे हूँ ? हम तो यह रहे !

तमारा की सिगरेट हाथों में पसी रखी थी मैंने देखा कुंवर ने अपनी सिगरेट को तप-तप में खट कर बुझा दिया है ।

घोह ! नीनिमा देवी भी है ! आइए, यहीं बैठिएगा कि कमरे में क्या जाए ?

हमसे कोई कुछ नहीं बोला था । कुंवर अपनी जगह से उठ घाये थे । हमारे मोन गधम पर उन्होंने जसकर अपना कमरा छोला और हमारे साथ तमारा भी कमरे में दालिस हुई ।

बबर न गबबो बिठायी और तमारा की तरफ देगकर मुझसे कहा, “हम लोग बायकी तरफ घाने ही की सोच रहे थ । जरा सो धिक्किट है ऐतिएगा ? माफ़ बीजियेगा नीनिमा देवी !

मैंने मसखर करी “मही कोई बात नहीं । सब मरने ही जी हो यही कह सकते हो ।”

कमरे में फिर तमारा का दगा और बहा नीनिमा देवी अजर पाऊ बन पारती— ।

वह तो रहा हूँ कि बगो जो बहना है ।

बहबर मैं अपनी सोना-मुनी के पीर भी निश्चित हो बैठ । तमारा हवागो ही सी बा ॥—“नी नीनिमा देवी को लकड़ीक न हा तो जरा इस बनने में सा मरती ?

नीनिमा उठने का तैयार हुई और मुझे उन लोगों की मूच्छता लख

मांसखंड हुई। मैंने डटपटे हुए कहा—“ऐसा राज क्या है तुम्हारा ? यहाँ न कह सकती हो तो फिर क्या बापूया। तुम बैठो भीमिया।

तुम्हारा मैं उस पर जेब से एक कागज निकामा। वह घरबार की कतरल थी। मैंने उसे पढ़ा। उसमें महाबदाता ने लिखा था कि सहाय अपनी स्थिति से संतुष्ट नहीं हैं। प्रयत्न किया जा रहा है कि उनका असंतोष को बढ़ने न दिया जाय और किसी-न किसी तरह शासकीय बल के भीतरी बल में उन्हें सम्मिलित रखा जाय। पर मामूले हुआ है कि उनकी अपनी योजनाएँ हैं और न तिरकं यह कि यह राजी होने को तैयार नहीं हैं बल्कि संभव है कि अपने साधियों के साथ स्वतन्त्र बग को तैयार करके वर्तमान सरकार को चुनौती न दे दें। उनका कुछ अठगण्ठीय सम्बन्धों के बारे में बात ही है। ऐसा हुआ तो एक धमकानुर्ब स्थिति का निर्माण होगा और बहिष्कार नाम परों के वर्तमान संतुलन में भारी भेद पड़ जायगा।

मैंने पढ़कर तुम्हारा को तन्द्रा बगा।

कुंवर बोले— बापूजी ! हमको सब यह सब चुनबाप नहीं सहना चाहिए। पीछे में कीन क्या यह घगरल कर रहा है। इसकी सबर लेके मुजाबसे को सामने घाना चाहिए।

मैंने कठगत मीनितमा के हावों में ही घौर कुंवर की बात की तरह बिना ध्यान दिये तुम्हारा ने पूना यह सब क्या किम्मा है तुम्हारा ?

तुम्हारा ने कहा मैं तुम्हें कुंवर में इसी बारे में बात कर रही थी। घाय क्या गाबो है ?

“यह घरबार तुम्हारे दण के दण का है। तुम्हें मायम होना चाहिए कि इसका पीछे क्या भीयत है। तुमने कुंवर से पहले मुझ को यह क्यों नहीं बताया ?

कुंवर बोले— घायने वं कुछ दूरी मानती है। दण्डत काली है। मैदियन क्या घाय चाहें—कि मैं घायबार बान में मिनू घौर मानुब करू ?

मीनितमा बोली— 'परेगाती की बोई बान नहीं है। घरबार तो अपनी

पढ़ाया ही करते हैं। मैं समझती हूँ, इसे तूम देने की कोई जरूरत नहीं है।'

तमाच बोली 'यह भीज बहुत बेमेलिय ही सफ़टी है।

कृबर ने कहा 'ऐसी चीजों को सजदेसी करना खतरनाक होपा। मैं मामूज करूंगा।

मैने कहा 'छोड़ो। यह तो सब जसा ही करटा है। तमाच, कस तुम मिस खकोपी यही बार बने ? हाँ पर पर। कृबर तुम यहाँ होटस में ठहरे तो मजबूरी से ही होगे। पर बर तो पा।

'जी कुछ एसा ही काम घा गपा यहाँ का।

'बलोमें घब साप पर, या सबरे घामोमे ?'

'बबेरे ही घामा हो सकेगा—सब तो।

इसी समय राजभी यहाँ घा पहुँची। घाना बेहब भवानक पा। घाते ही उघने किसी का घमिबादन नहीं किया। मुन्ते बोली—'जउ सुनना।

हम दोनों बराबर कमरे के एकांत में घा गए तो राजी ने धीमे-से कहा 'ठाकुर का फोन पा। बीरेस्वर घाना चाहटा है दिम्पी। ठाकुर का घ-शर है कि बुसावा कृबर का है। घभी तो ठाकुर के मना-मनू रता है एस। मेकिन बापसी फोन से जानना चाहत है कि बीरेस्वर को घाने दिया बाप या बही रगने की कोसिख की जाए ?'

किठनी देर की बात है ?

'मुन्ते ही तो मारी घारि हूँ देर की यहाँ बात है।

'नहीं बह नहीं घामेगा।

तो यही कहूँ ठाकुर को ?'

'हा बह देना कि कोई जरूरत नहीं है घीर उसे बाकू में रगें।'

इतनी-सी बात के बाद हम बापस घाये घीर राजवी किना कुछ बोले सबने बीच में स भीपी बाहर निगलनी जनी गई। मैने कहा 'तो तुम बबेरे घा मकोगे कृबर ? मुग्हारा तो तमाच बार बने घाने का टिक

है ? नहीं बार ही बने मुझे सुभीता होगा । बख्शा, बनी नीसिमा,
बने । कुंवर तुम या ही रहे हो । तमारा बार्द-बार्द ।

तमारा ने कहा तमस्ते नीसिमा बेबी ।

तमस्ते तो थी पर जान उसमें कौसी एक बार थी । नीसिमा ने उत्तर
नहीं दिया और हृद सोंग बाहर या गये । मन में एक स्त्री और ऊब
थी । जैसे कहीं प्रमिसिबि की दुय्य हो और स्रोत का पता न हो ।

था। उन्होंने खुद मुना, बीरेबर को नहीं दिया। कुंवर चाक्रीब से कह रहे थे कि बीरेबर को फौरन मेक दिया जाय। सम्बन्ध उन्होंने दे दिया और बीरेबर—वह किसी तरह स्कन्धे को तैयार नहीं मासम होता है।”

“छोड़ो होने दो जो हो—तुमने फिर क्या कहा उन्हें ?”

‘वही जो तुमने कहा था, कि बीरेबर को रोको, हरगिज् यहाँ न आने दें।

मैंने कहा “राज—।

राजकी मैं मेरी तरफ देखा। मेरे सम्बोधन का स्वर प्रबल्य कुछ भरा और भीगा रहा होगा। वह प्रतीक्षा में मेरी और देखती रही। मैंने कहा “राजी क्या सब करता करता राम ही नहीं है फिर हम बीच में क्यों अपने ऊपर बुरा बोझ मेटे हैं ? छोड़ो धामो चलो।

‘तो क्या फिर कहना होगा कि बीरेबर को धमर वह चाहता ही है तो धा जाने दे ?

‘राजी नहीं कुछ नहीं करना होमा। राम चाहना वह होगा।”
 बहता हुआ मैं राज को कंधों से लेकर पसंग तक गया और वहीं उठे हाथों से बिठा दिया। फिर बपड़े बरसे और कुर्मी सामने सेकर उस पर बैठने हुए मैंने कहा “राज मैं अभी बांधी समाधि से आ रहा हूँ। बड़ी सूनी वह मामूम हुई। मामूम हुआ कि अन्त में सब मुना ही जाता है। तुमसे एक बात पूछना हूँ। तुमने बड़ा कष्ट उठाया है मेरे साथ। इपर धाकर रहने-सहने की कुछ मुक्तिया मिल सजी थी। छोटी चीज नहीं है यह और एकाएक मैं उसे छोड़ना भी नहीं चाहता है। पर “तुम बताओ क्या बर्क ?”

“फिर बही सवाल। अब तक सगे पास रये बांधीये ? काटकर एक तरफ करो और हम सबकी फिर छोड़ दो। जो तुम्हें अपने लिए ठीक लगे बही करो। जो तुम्हारे हैं उनके लिए भी बही ठीक होगा।

“सब कहना तुम्हारी राय क्या है ?

“मेरी राय कुछ नहीं है। क्यों, मीला मैं तुम्हें दिया दिया है ?

मैं समझती थी निर्णय पर तुम या बुके हो !

“हां मीना की कुछ बातों ने डिया दिया है। इसीलिए तुमसे फिर पूछता हूं। तुम जो कहोगी होना।

मैं मीना का समर्पण करती हूं। यही कहा न उसने कि तुम्हें मुझना नहीं है ?

“राज ! तुम एकदम जती के घाव खोहच रही हो। यह क्या है ?”

“मैं उसे जानती हूं वह तुम्हें जानती है। घोर कुछ मैं भी तुम्हें जानती हूं। लेकिन बस ! अब सवाल सतम !”

“राजधी ?

राज परसप से उठती। जमाने बाहों से मुझे उदात हुए कहा “नहीं बस। अब रात।

मैं तनिक उठता ही मदिन उठकर सामने जमे फिर पलम पर बिठा दिया घोर मैं वहीं कुर्सी पर बैठ गया। कहा “राज। हम तुम जिन्दा थे, जब मापी थी रहे थे। तुम खुद उनसे मिपी थी। मैं पूछता हूं यह मरे किस लिए ? क्या इसीलिए कि हम सब भूल जाए घोर इतिहास क लिए छोड़ दें कि वह फिर जगें बूझकर निकाले। राज, क्या वह मर कर हमें कुछ सोच नहीं पड़े है ?

“नहीं अब भूने मैं इपर-उपर भूपने की जन्मरत नहीं है। मीना ने वह दिया मैंने वह दिया। बस रात।

“मीना ने तो कहा, पर तुम—तुमने भयवान से उम रोव क्या कहा था ?”

“हां, मैंने कहा था। अब भी कहती हूं कि भयवान का रास्ता यह नहीं है। उम पर तुम बनोगे, तभी मुझे समझी तुम होना। सब कहा था अब भी कहती हूं। लेकिन तुममें घोर-घोर से बाते घाठी है तुम बस भी पड़े तो न तुम्हें उपर बढ़ने नहीं देंगी। इसलिए कहती हूं।”

“मुझे दुबंन मानती हो ?

‘हो दुर्बल मानती हूँ। लेकिन इतने दुर्बल नहीं कि बल तुम्हें रास का ही रह जाए !’

राजभी सामने बैठी थी। पाँच उसके पसम की पाटी से सटके हुए थे। वह कर उसने मुँह देखा था। उन धागों में सहानुभूति बबडवा घाई थी। उसकी बात में गहरी सजाई थी। मैं निरस्त बनी कुछ देर उसे देखता रहा। फिर जान गया हुआ कि तुर्की से भागे बहकर मैंने अपना मुँह उसके घुटनों में छिरा लिया और मैं सुबने के निकट हो गया। राजभी का हाथ धीमी-धीमी बपकिया दठा हुआ मेरे सिर पर भूमता रहा और मासूम हुआ कि उन घुग्गा में पड़कर सचमुच मुझे कुछ स्वस्थ अनुभव हुई है।

राजभी ने कुछ नहीं किया। बीटी वह मेरे पड़ सिर पर बस हाथ ही फेरती रही और मैं अक्षर बिग सठ हाठा गया।

अब तक मरा कुछ माग तनिक कुर्मी पर गिका था। अथ मैं पूरे फर्ष पर घुटनों के बस गिर गया। मछ बहर उमी तरह उसके अपनों के बीच गड़ा रहा और मैंने पाया मरी रोमा बाहें अनायास बढ़कर राजभी की कमर को धर रही है। राजभी गयो-नी-र्यां बीटी बंगनियां देकर मेरे बाना को सवारती रही। और मर हाथों की उगलिया धीमे धीमे उसकी कमर को सहसाने लगी। पित्त का बिपत्तन जाने कब कौमे परिणत होने लगा और मैं मुँह का बही उठनी साड़ी में गराये रर कर धीरे-धीरे बुनमुतान मना। कुछ देर बाद मुँह मैंने उठाया और राजभी को देखा। धारों में जमे प्राबता हो। उगर स राजभी का बहुरा मुझे देख रहा था। सिनाप प्रधानत अक्षत। माना क्रमि असम म हो बेबसु रबीहति हो। इस घाति बिजनी देर मैंने उम देगा पत्रा मरी। वह निर्बाक निरपन्न बैठी रही। फिर बाहु मूसा में हाथ देकर उग्रन धीमे से मुझे पर्य से उठाया और

मझे बुबुर पर घाय। उग्राने पर न बजाव होगल में उठाने की

मञ्जूषी पर राजधी से माफी मांगी और बीरेन्द्र का झिंक उठाया । कहा, "बाबूजी ! बीरेन्द्र के साथ घापने म्याम नहीं किया है । उसकी जिन्दगी ऐस कब तक बर्बाद होगी क्यों मांजी ?

राजधी बोली "तुम क्या सोचते हो उसक मिए, बेटा ?

"बीरेन्द्र का मुम्ह पत्र मिला था । वह नहीं चाहता था कि पत्र का झिंक घाप से कर्क । सीमिए, यह पत्र है ।

राजधी ने पत्र पढ़ा और पढ़कर मुम्हे दिया । मैं पढ़ ही रहा था कि कुंवर बोले "घापने देल सिवा कि बीरेन्द्र की क्या भावनाएँ हैं । मैं समझता हूँ जिन्दगी में एक बार उस पूरा मौका मिलेगा तो वह सब कड़वाहट उसमें नहीं रहेगी । घापमी में कुछ करने और बड़ने की तबियत का होना बुरा नहीं है । लेकिन बीरेन्द्र को मौका ही नहीं दिया गया । घापको क्या ज्य है अगर वह मेरे साथ काम पर आ जाय ? मुम्हे जरूरत भी है एक घपने और मौतबिर घापमी की ।"

"ज्य की क्या बात हो सकती है हमारे लिए ? लेकिन थकुर साहब के यहाँ तो घापद उस कोर्द निकामत नहीं है ।"

"घापने ज्ये पढ़ाया-निराया । एम० एम० किया है उसने सी किया है । एम सबके बाद मां जी घाप समझती है वहाँ गंती-कितामी में उसका मन मरा रह सकता है ?

कुंवर का कर राजधी की तरफ ही था और पत्र पढ़ने के बाद मैं घनमाना सा उनकी बातों को सुनता रहा था । मैंने बीच में पढ़कर कहा— येनी-कितामी कोर्द हल्का काम तो नहीं है । इसकी तो बन्कि पकरत है कि पड़े सिधे सोम उबर पाएँ । ठक पीराबार बड़ेगी । घाप तो घउमोम की बात है कि यह मुस्क घपने लिए गुराक भी जुटा नहीं जाता । तुम्हारे मब उद्योग पीछे हैं । बुनियात में गेठी है । और उसरी एम० ए० और सी की पढ़ाई का भी बीरेन्द्र बादे तो इनमें पूरा ज्य सोम हो सकता है । एम पत्र में यह तो नहीं है कि वह तुम पर निर्भर होकर रहना चाहता है या तुमम काम की आगा करता है ।"

इन्होंने बुलाया है इनके पास ठहरेगा। घोर जरूरत हो तो मेर वहाँ जाने में क्या हर्ज है। सम्भव तो वह पैर-बकरी है। क्यों हमको क्या सुझी न होगी कि बीरेदर के लिए ऐसे काम-आप का ठीक हो जाय है जिससे उसकी तबियत लगे और खुले। क्यों कूबर तुम क्या बिस्कुम बकरी मानते हो कि मैं काम को घाऊँ ?”

‘जी भानी कहलौ हैं तो मैं कोसिच कसंगा बीरेदर को महा जाने की। लेकिन मुझे मर्तीन नहीं है कि वह आसान होगा। घोर आप बाबजी पैर-बकरी होने की बात न कीजिये। उसके घारे करियर का सवास है।

‘गकिन तुम उसके लिए किस काम की सोचते हो ?”

“हमारे मुन्क मे ऊम ज्यादातर बाहर से घायी है बाबू जी। बन्धो कम वहाँ भी कम नहीं होगी मेकिन प्रोमॉसिय का इन्तजाम नहीं है। हम तियागत की वहाँ काय्यी मूजापत है। बकि हम बुमम्न बाहर भत्र सफन है। घोर बकरी नहीं है कि उसके तार के लिए हमें बाहरी मुन्कों का भरोसा रगना पड़े। प्वाँत बल पडा है उनक फिस होने घोर प्रोडक्शन शुरू होन में कुछ बस्त लग एकजा है। मदिन बीरेदर क लिए दर का सवास नहीं है। वह तो फौल घाकर इस काम में मगी बड़ी मदद कर सक्ता है।

‘सरकार मे सब ठीक टाक हो गया ?”

“हां बाटी तो गया है। घाउके घानीबाँध से बकी भी सब ठीक हो जायेगा। वह स्टेट के इण्डस्ट्री मिनिस्टर—जरा उग्हें कहने का महान होगा। घार सब उगर पपार मारते हैं। प्वाँट प्रमाने के बस्त हम सब को वहाँ करीब एक बर्ने के लिए रटना होगा। तब घान घापने मुर्मान से बकी एक िन घपर निकाम मरने ता”

“मैं तो घायद उन माहब को जानता नहीं हूँ।”

कूबर ने लघ्न भाव से हम कर बजा “घाउ की बराब रहें हैं !

—घापको तो वह जानते हैं। घाररो कोन नहीं जानता। घोर बाग

मौ कुछ प्यारा नहीं है, स्टेट का घाम तीर पर मुझविल है ही। उसकी पक़रत के निहाज तो से बीज शुरू की जा रही है। सिर्फ यह है कि रेडटेप का थोड़ा पार्ट सक्रिट किया जा सके तो बस्त की बचत हो जायेगी। बहुत इन मामलों में कीमती होता है।”

“बीरेबर की खबर धाई है कब या रहा है ?

“ठाकुर से मेरी बात हुई थी। मगर वह ठाकुर बीच में क्या होते हैं ? मैंने कहा कि बीरेबर को घोरन मही पहुँच जाना चाहिए। मैं इस होटल में हूँ घोर खबर कीजिये कि वह कब या रहा है ? ठाकुर इस पर इबर-उपर की करने लगे। मैंने जरा डाँट कर कह दिया है घोर घमरने उम्होंने साफ तो नहीं कहा मजिन समझता हूँ उन्हें जुरंत न होवी कि वे फसे रोकें। क्या आपकी तरफ से उन्हें यह इक दिया गया है कि पर कुनये के मामले में वो बीच में बलम हें घोर पीसा कहा जाये उसकी ताकील न करे ?

मैंने कहा ‘बह तुम्हारे भी बुजुर्ग हैं !’

“बुजुर्ग तो हैं घोर मैं उनकी इज्जत कर सक्ता हूँ लेकिन बर को एबता से तो हारिड नहीं हा सकते। बहुत मानवार मुझे मानूम हुआ जनबा बग। क्या उम्होंने आपसे पूछा या ?

“तुम उन्हें नहीं जानते। मुझे प्यारा बीरेबर उनका घत्रीय है। समरु लिए उनके मन में बड़ी भजता है।”

“वो तो ठीक है। लेकिन बर के मोम धातिर बर के रंभे। घोर घाग नर बीजियेगा उन्हें कि घाइम्बा के लिए गयाम रयेँ घोर केरे साब निमी बहणन से देय न घाग।

घात्री बोली ‘तुम बसत समझे हो। बीरेबर नाम उगरी का है। तुम उनके बारे में ऐसा नहीं सोचना चाहिए। बकि तुम भी उन्हें बीते ही घत्रीय हो।’

बंजर के हुंफर बग ‘बीरेबर नाम उनके ही लगते हैं। लेकिन मैं उका बोई नाम नहीं हूँ घोर जब मुझे प्यार घाठा है कि निम तरह

फोन पर उन्होंने मुझसे बात-चीत की तो जरूरी मामूम होता है कि आपसे घबंर कबं कि आपने उन्हें काफी धमकी दी है। घातिर बेहाती है और घबंर नहीं जानते तो घपनी हूब तो जाननी चाहिए। आप यह तो नहीं समझते कि मेरे कहने पर भी वो बीरेबर को रोब कर रख सकते हैं ?

‘बीरेबर की तबिरत कैसै तो नहीं रोकै नयों ?

मेरा ज्वास है घामे आप उन्हें पयादा करीब न में। बीरेबर उनके घाम है इसका उह गुमान होमा। सेकिन बीरेबर को वो ठमुमा न समझें और जब तक बीरेबर को घाम नहीं रहने देते हैं तब तक उन्हें समझने का मौका है। मैं देखना हूं इस घर में ठाकुर का काफी घसर है। मामूम हुआ मुझ कि वो पीछे पर मैं ठहराये गये थे। बीरेबर वहां है तो बाबू जी भाभीजी यह उनका ऐहमान नहीं है। बकि इसमें घनरी इज्जत बढ़नी है—कि हमारे बाबूजी जैसे घादमी का बटा उनके घाय है। इठई घायको ठाकुर से बबने की जरूरत नहीं है। और यह भी बजह है कि बीरेबर का वहां से घाना और इगड्डी में लगाना जरूरी है। घजलि इस मामले में मुझ पूरी तौर पर इतफाक रखती है और नहीं चाहती कि घामे हमारे घर से ठाकुर का रख-बखत पयादा बड़े पा रहे।

मैं कृबर को दलता और मुनता रहा। राजधी को भी देख सका कि यह घबिबर नहीं हो रहा है।

राजधी ने कहा ‘जोड़ो बेटा तुम्हें उन ऐहमानों का पता नहीं है वो ठाकुर के हम पर ?’

‘नहीं भाभी यह मैं नहीं जानूँगा। ऐहमान घसर दुनिया में हो सरता है तो घायका-जबाब उन पर हो सरता है। घान मानते हैं कि घायके नाम का जगिया उन्हें न भिना होता तो उनकी उरा भी जयह दुनिया में बन पाती ? वो गिर्क बेहाती बने रखे एम० एन० ए० न हो पाते। भाभी जी यह घाय लोगों की निपाई है जोनाई है कि घान ऐमा जानती है। मेकिन घामे मेरे रखे इस मोनेरन का जयसा ठाकुर न

सना सकेंगे।”

मैंने कहा 'कुंवर—’

कुंवर बोले 'बाबूजी आप दिन क्यों हागते हैं। आपको मामूम है कि आपके नाम में क्या तावत है? माओं के मनों के घम्वर को नाम बंद है। सिर्फ यही तो है कि आपके नाम पैसा नहीं है जो आपने बनाना नहीं चाहा। सिर्फ इतने के लिए ठाकुर आप पर हाकी मही हो सकेगा। पैसा की कोई बमी नहीं है और जब तक मैं हूँ नहीं बर्बाद करके कि ठाकुर जैसे नाबीब लोग आप पर सावा डालें। मैंने मुता का घाग खुद वहां बाकर रहने की सोच रखे थे।

“हां।

“किस लिए ?

‘देहात की विन्वदी के लिए।

‘तो मुस्क में वहां से वहां तक देहात पड़े हैं। कोई देहात छांट भीजिये और मुझे कहिये। मैं वहां कोटी बनवा देता हूँ और आप आराम बिषाम से रहिये। इन ठाकुर को अपने को इतना विमने का मौका क्यों देते हैं? बाबूजी यकीन जानिये कि अब आपके इगरी कोई जरूरत मही है। हम लोग करवटी से सायब नई मिस पर पहुँचेंगे। आप वहां हम सब बन्धों को घानीबाँह देने कब किम तारीफ को धा तर्केंगे बताने। एक दिन जो भी आपकी मुबिषा का हो। माभी आपके भी घाना बदेना।”

आयेंगे क्यों नहीं? अगर तुम्हारे बाबूजी की तबियत अब कुछ ऐसी हो रहनी है।

शहर से हमारा विम-रुटिया तीन मीन दूर होगा। गुमाता ऐसा कि क्या देहात होगा। हवा गुनी और बानी तो अघ्यात नम्बर का। बाबूजी आपसे ता देगाय जगह किम बन्दर गुम्दबार है। बकि कुछ दिन रह जायें तो तन्मुग्गी गिण घाये। अब तो वहां से मीषा पौन भी हो गया है। तकतीट किसी विरज की न होती।

मैं उल्टा रहा था कुंवर के धार्मिकविश्वास और ध्यात्मसुभ्रम पर। कहा, "तमारा ने वह कटिप तुम को पहले दिखाई थी न? बत्ता सफ़्टे हो तमारा को क्यों उसकी फिक्क है?"

"धम्मसि की जो हम भोगों के बिबाह से भी पहले की मित्र है और अपने को परिवार का धार्मीय ही मानती है। इसमें क्या कुछ घाय बेजा देखते हैं? मैं तो समझता हूँ मुनासिब किया उसने कि ध्यान दिया और घाय तक उल्टी लहर पहुंचाई। हम सब का वह रिठ चाहती है और परिवार का प्रभाव बढ़ा हुआ दैतना चाहती है। उसने मुझ से कहा—"

मैंने राजधी की और देखा और सकेत समझकर वह हमारे बीच से बसी गई। जाने पर मैंने कुंवर से पूछा "हां सब बहो क्या कहती थी?"

"जो धरने देव में हो रहे बिदास की बात कह रही थी। बिदास निर्माण और उत्पादन में नहीं हुआ है, बिबि और ब्यबग्या में भी हुआ है। वहां पर राज्य और समाज के सम्बन्ध बदलने का रू है। राज्य कमी डिपन्डेंसिया का उमरी जफ़्त रही होगी। लेकिन घर को फनकर समाजी होना जा रहा है। वे लोग पहले राज के ही सबित पर सेन-देन का सम्बन्ध बना मवन थे। घर धीरे-धीरे जो शान नहीं रही है और राज्य से उतर कर हमारे मस्त्राओं का भी सीपा बनेबरेतान हो गजना है। जो कहती थी कि रमिया अभी तक यद्यपि पश्चिमी सम्प्रिया का घग है लेकिन पश्चिमी पन का उगका साथ पूर्वी मस्कारा से अधिक है। धमल में जो पुरब है पश्चिम नहीं है। जो मानती है कि दुनिया का मबिन्ध बनने वाला है तो पश्चिम वह पुरब से बनेगा। पश्चिम तो धरने उद्योग-बिमान बदैरह जो सम्भावनाएं बानो पिंगा पुरा है। पश्चिम जन-मंन्या एपर पुरब में है और जन का बिदशान भी नहीं अधिक है। पनकदी युग धरना येम गेल बुता। मबिन्ध जनबानी मंशरनि के हाथ है और इस वृष्टि में पुरब के दगों के सम्बन्ध धने और दूढ़ होने चाहिए। धार-नी ध्यारात जनका बड़ना चाहिए। मंशरनिमें में हैम-वेन और धारात-बदान होना चाहिए। उवे राजनीति में दिनबस्ती नहीं है। कना उमरा माध्यम है

घौर पूर्वी गोमार्ग में एकटा बढ़ाने का सपना लेकर वो कमा के क्षेत्र में आई है घौर महां भारतवर्ष में रह रही है। उसने मुझसे कहा था कि राजनीति के पुरुष तो काम-धाम में रहते हैं घौर उससे ऊपर देखने की कुर्मंत घपने को नहीं देते हैं। पर तुम्हारे बाबूजी एक उनमें घमप हैं वो ऊनाई घौर गहराई से सोचते हैं। राजनीति में इस तरह के संस्कारी प्रमाओं का होना बहुत जरूरी है, नहीं तो वो काम की चीज नहीं रह जायेगी घौर भारत से वो घाछाए हैं वो पूरी नहीं हो पायेगी। घाप बाबूजी तमार को गजब न समझे। वो ऊंचे विचारों की स्त्री है। घाघ कर हम सीपों के परिवार के लिए तो उसमें पबित्र घौर प्रयंसा की भाव गाए हैं।”

मैं इस लम्बे अस्तम्य को सहता असा मया था। कहा, तुम सीप अगवार की उस घप को महत्व देते हो। घास्तिर क्या सोचते हो ?”

“अकर वो गप्य है पर बैमतलब नहीं है। इसका उत्तर घपने इतारों की सफाई पेश करके नहीं दिया जा सकता है। पर उत्तर देना जरूरी है। नहीं तो उस गबर से भारी अदर्ष हो सकता है। लीपों के मनीमाओं में भेद आसा जा सकता है। घौर पैरा विचार है उसमें देर नहीं करनी चाहिए। अबाब एगान से ही हो सकता है घौर वो तत्काम—

‘क्या मतलब तुम्हारा ?’

मैं नहीं जानता इन अचरत क पीछे अस्तस करने वालों का घाघय क्या रहा होना ? किकिन हमको अठाना है कि घान घगर पर से अमम रहत है तो उनका अमरा अविभाव नहीं है घौर अगर अर्ष उसका अमरा ही लिया जाता ही ता पर न अमम रहन की अिह की भी अकरत अही है।

“तमार से हम बारे में तुमने बात की है।”

“अहम घापने ही बात कर रहा हू। घौर अमर घाप अान सिठे हैं तो गजबअहमियां अमेगा के लिए गाम हो जाती है।”

“ओहो।—मुनियों की तद्वियत कैसी है ? मुना था मना जारी

घरतक रहा, टेम्प्रेचर भी रहा। और डम्बू साहब तो मजे में हैं ?”

‘जी हाँ सब राजी हैं खुशी हैं। चाप फरबरी में एक दिन निकानियेगा प्रबन्ध।’

‘मैं नहीं तो तुम्हारी भाभी तो पकर चाएगी। सब भी डम्बू के सपने सेती रहनी हैं। बड़ा दंगई हो गया होगा वह। पूरे बात निकल चाये कि नहीं ?—कब तक हो यहां ?’

‘बीरेचर का पक्का करने जाने की बात है। बाकी तो यों ही अमरी सा काम है। उसकी बिम्ता नहीं है।’

मैंने अपनी ओर से कहा ‘जाओगे ? क्या सब पर किसी को बुसाया हुआ है। यह तो धई ठीक नहीं किया तुमने। तमारा मिसे तो कह देना, बार बजे में उसकी राह देखूना और तुम क्या कह रहे थे वह पठा मवाने के बारे में अग्रबार से कि यह चरारत किसकी है ?’

‘जी हाँ वह तो पठा मवाना ही होना। लेकिन उन चक्कों को अबाब पक्का यही होना कि महयोम का हाथ बढ़ाकर चाप बिचाएँ और पूजा करनाओं की जाइ ही काम हैं।’

कुंवर कम बये तो मैं अपने ऊपर कुछ बिस्मय करता रह गया। बीसे लर्क से मैं मान सरता हूँ कि पीड़ी भर से बोम्पता का पाठर नहीं होता है बल्कि नई पीड़ी अधिक बोम्प है। तो भी समता है कि व्यवहार में कुछ मरशिण तो हो ही सक्ती हैं। पर जायद पीड़ी का ही यह मैरा अपना पुतापन हा।

मैंने राजभी को बहा ‘लील टापुर को फोन करके पूछो कि क्या बीरेचर या रहा है ?’

संघोष कि बंइह बिनिट की भी देरी नहीं हुई आकर राजभी बोली, ‘टापुर हैं फोन पर, बात करोसे ?’

फोन पर पहुंच मैंने कहा— ‘टापुर, क्या रहा ? बीरेचर बत दिया ?’

‘हां कुछक देर में तो पर ही पहुंच रहा होगा !’

‘कुंवर तुम्हारी जिबामत कर रहे थे। क्या हुई बात ?’

धीर पूर्वी मोसार्थ में एका बङ्गाने का सपना लेकर बो कता के क्षेत्र में धार है धीर महा भारतवर्ष में रह रही है। अपने मुम्मे कहा था कि राजनीति के मुख्य तो काम-धाम में रहते हैं धीर उससे ऊपर देखने की कुर्वत अपने की नहीं बेते हैं। पर तुम्हारे बाबूजी एक जगमें समय है जो ऊँचाई धीर बहुराई से सोचते हैं। राजनीति में इस तरह के संस्कारी प्रभावों का होना बहुत जरूरी है नहीं तो वो काम की नींव नहीं रह जायेगी धीर भारत से जो बाबाएं हैं वो पूरी नहीं हो पायेगी। धाप, बाबूजी तमाप को बतत न समझें। वो ऊँचे विचारों की स्त्री है। साध कर हम सौर्षों के परिवार के लिए तो उत्तमें पवित्र धीर प्रबंधा की भाव-बाएं हैं।

मैं इस लम्बे अक्षय्य को सहता चसा गया था। कहा "तुम लीम अक्षय्य की सस गज को महत्व देते हो। धास्तिर क्या सोचते हो ?

"उत्तर को एव्य है नर बेमतलब नहीं है। इसका उत्तर अपने इरादों को तफ्दीर देव करके नहीं दिया जा सकता है। पर उत्तर देना जरूरी है। नहीं तो उस सबर से भारी धनर्ष हो सकता है। लोगों के मनीषाओं में धेर बासा था सकता है। धीर मेरा विचार है उसमें देर नहीं करनी चाहिए। बबाब एक्शन से ही हो सकता है धीर वो उत्काम—"

क्या मतलब तुम्हारा ?

"मैं नहीं जानता इस धरात के पीछे धसल करने वालों का धाधम क्या रहा होगा ? लेकिन हमको बताना है कि धाप अमर एर से धमल रहते हैं तो उसका दूसरा धाधिधाय नहीं है, धीर अमर धर्ष उसका दूसरा ही लिया जाता हो तो पर से धमल रहने की विर की भी जरूरत नहीं है।

"तमाप से इस बारे में तुमने बात की है।"

"पहले धापसे ही बात कर रहा हूँ। धीर अमर धाप मान लेते हैं तो गलत-धुमियां हमेशा के लिए अक्षय्य हो जाती हैं।

"ओहो !—मुनियों की तदियत कौसी है ? गुना वा बसा काशी

ब रहा टेम्पेचर भी रहा। धीरे डब्लू साहब तो मजे में हैं ?'

"जी हाँ सब राजी हैं खुशी हैं। घायप करवरी में एक दिन मालिबेया प्रबन्ध।"

"मैं नहीं तो तुम्हारी भाभी तो बरूर पाएगी। सब भी डब्लू के ने सेजी रहनी हैं। बड़ा दर्द हो गया होगा बह। पूरे दांत निकस जाये नहीं?—कब तक हो यहाँ ?"

बीरेत्बर का पक्का करके जाने की बात है। बाकी तो यों ही अपनी काम है। उसकी बिम्बा नहीं है।'

मैंने अपनी धीरे से कहा 'बाभोये ? क्या मंच पर किसी को बुलाया जा है। यह तो भई ठीक नहीं किया तुमने। तमारा मिते तो कह बैना, 'र बजे मैं उसकी राह देखुंगा धीरे' तुम क्या कह रहे थे बह पठा जाने के बारे में घपबार से कि यह सचरत किसकी है ?'

"जी हाँ बह तो पठा लगाना ही होया। लेकिन उन सचरकों को (बाब पक्का यही होगा कि सङ्घोम का हाप बड़ाकर घायप दिसार्प धीरे (जा करनामों की पद हो काट दें।)"

कुंवर जाने मये तो मैं अपने ऊपर कुछ बिम्भय करता रह गया। जैसे एक से मैं मान सक्ता हूँ कि पीड़ी भर से योग्यता का घन्तर नहीं होता है, बल्कि नई पीड़ी अधिक योग्य है। तो भी लगता है कि व्यवहार में कुछ मर्यादाएँ तो हो ही सक्ती हैं। पर गायद पीड़ी का ही यह मैरा घपना पुपतापन हो।

मैंने राजभी को कहा "धीरेन ठाकुर को बोन करके पूछो कि क्या बीरेत्बर घा रहा है ?"

संयोग कि पंडह मिनिट की भी देरी नहीं हुई। भाकर राजभी बोनी, 'ठाकुर हैं बोन पर, बात करोये ?'

धेन वर पहुंच मैंने कहा— 'ठाकुर, क्या रहा ? बीरेत्बर बस दिया ?'

"हां कुसैक बेर में तो वर ही पहुंच रहा होना।"

"बंवर तुम्हारी मिरापत्र कर रहे थे। क्या हुई बात ?"

“मुझे सहाय कृपण बड़े होये तो घर के होने। बर्माई होगी तो तुम्हारे होये। मुझपर धौंस जमाते हैं तो किस बात की? कहने लगे बीरेन्द्र को सबेरे तक यहाँ पहुँचा बीजिये। खर्च की परवाह न कीजिये। क्यों साहब खर्च की परवाह क्यों न करू। बड़े प्राये खर्च देने वाले खसबारे मैंने कह दिया है बीरेन्द्र की मर्जी होगी प्रायेंगे नहीं होंगे तो नहीं भी था सकते हैं। आपकी बात उन तक पहुँचाने से ज्यादा में कुछ नहीं कर सकता। बोले फोन पर बुला के बात कराइये। मैंने कहा दूर है तीन मिनट में मुमकिन नहीं है। बोले तीन छ मिनट का सवास नहीं कर आए फोन मुझ करसैं। बिन मेरी तरफ मानियेया। बोभो सहाय या कृपण की हिमाकृत है कि नहीं!

“जोड़ो ठाकुर। नये वैसे के बरूर को कुछ तो मौका दो। बीरेन्द्र का क्या क्या रहा?

‘कुछ समझ में नहीं आया। खोजना तो मैंने मुतासिब नहीं समझ है धीर बीरेन्द्र की अपनी तदियत देखी तो सबेरे के जेन का इतनाम क दिया है। बाई-तीन तक पहुँच जाना चाहिए। सहाय तुम सायब सोचते हो कृपण बच्चा है। लेकिन उसे प्रदव सीखना चाहिए। तुम नहीं तो कहो मैं ठीक करू। यह नाम तुम शहरियों का नहीं हम देहाठियों का प्रकर छोटना।

‘मिच अब भी स्थान है ठाकुर कि बीरेन्द्र को तुम्हारे पास रहना चाहिए। तुमसे तो उसकी बनती ही है।

‘बनती तो बुर है। सिर्फ बबाब कमी-कमी लटते हैं। मैं सोचता बस्ती शाही होनी चाहिए।’

“तो तलाश करो—।”

‘बार बजे से कुछ पहले ही तमारा घा गई। बोनी “बर्माई बीजिये कि मैं समय पर घा गई। बीरेन्द्र अभी पहुँचे हैं। मेरे साथ यहाँ धान चाहते थे। उसमें घाब बप्टा लग आया। आपकी समय की ताकीद धीर मुझे भी सायब धनेमै भाना था।

"बीरेदकर का रहा होगा क्या ?

"पता नहीं।"

"तमारा बहु घतवार की कतरल को तुमने मुझे बताई थी, उरधे बारे में मैं मानता हूँ तुम जानती हो।

"जी—?

"क्या मेरा ल्यास घलत है कि तुम्हें जानना चाहिए ?"

"घाय क्या बह रहे हैं।"

"त्रिय अगवार में छापी है उरधे क्या तुम्हारा सम्बन्ध नहीं है ?

"मैं समझी नहीं घाय क्या कहना चाह रहे हैं ?"

"तुम उसका उतर आवश्यक समझती हो ?

"अपवाद अगर यह फेनने की जाती है ता उरधे दम की ताकत दूठ सकती है।

"क्या समझती हो, उतर उगना हा मकता है ?

"घाय साबित कर सकते हैं कि किमी अरुहयोग का सबाब नहीं है।
बकर साबित—

—घाय में नहीं कर्म से होगा।

मैंने बारग भठ घौर कड़ी निपाह में तमारा को देगा। बहु सपारी भी देती बोली—

"जी नहीं मकित—"

तभी पच्ची बड़ी। मैंने धोन उटाया तो मानम हुआ, नीमिया बीन रही है।

"हमो बह मैं हूँ। हम लोप घाय जा रहे हैं। तुम घाय को हम लोगों के साथ उगा बाम पर घा जाघोये। बीरेदकर मही है मेरे वाग, बह भी होता।

"बोल देना बीरेदकर को।"

"देनी हँ। तब घा रहे हो न ?"

“बुलाया बीबाजी ने था।

“तो भी—बर बातें तो घण्टा न खूटा।”

“घापने ठाकुर साहब को मेरे घाने के बारे में मना किया था?”

मेरी तो उनसे बात भी नहीं हुई। तो सुनो

सेकिन मामूम तुम्हा उधर फोन पर मीला है कह रही है, “तो तुम

था रहे हो न?”

“बीरेस्वर का तुम्हें पता कैसे जाता?”

“तमारा से मीने बातें की थीं। उसने घाने की घासा बताई थी।”

“घण्टी बात है या बाज्जा।

कहकर मीने सामने तमारा की ओर घ्यान दिया। कहा—

“तमारा माफ करना। उधर नीलामा बेबी थीं। तुम बाहर पिबी

थीं उनसे?

“नहीं फोन से उन्होंने ही बुलाया था।

“कुंवर के कमरे में तुम साब रूठी हो?”

“काफी समय साब रूठा है।”

“बीरेस्वर की खबर तुमने दी की?”

“हां, मीने कहा था।”

मीने देखा जैसे मेरे सहजे से तमारा कुछ बहसत में घापी जा रही

है। और मीने हंगकर कहा “तमारा मीने गुस्सा करने को तुम्हें बुलाया

था। पर तुम गुस्से क लिए नहीं हो। तुम घमी बहुत खबान हो नाजुक

हो प्यारी हो। एक बात बहता हूं देखना चतुर बनने की कोशिस न

करना।

“घाप यह क्या कह रहे हैं?”

“इसके धासाबा जैसे धंजति मेरी बेनी है जैसे तुम भी बेटी हो।”

“बो तो हूं ही सेकिन घाप घाब कह रहे हैं।”

“घण्टा तमारा मी तुम्हारे होटम था रूठा हूं। घामर मिहवा

रूठी।

“तो मैं जाऊँ ।’

“हाँ, नमस्ते ।”

“नमस्ते ।’

श्रीर तमाय कुछ निरपस श्रीर चम्कित सी मुड़कर मेरे यहाँ से जाती
 तो मुझे अचक-सी एक सहानुभूति का अनुभव हुआ—

नी

मानुस होता है कोई भी अपने में नहीं है। जाने क्या जाना जाना यहाँ फैला है कि उसमें होकर व्यक्ति का जमाना-हिलना करना-करना उस पर निर्भर नहीं रह जाता। वह उसका नहीं होता उसके हाथ होता है।

जीवन के इस खेल के पीछे क्या नीला काम कर रही है, पता नहीं। मगद उसमें कोई लुक नहीं दीखती। यदि पीछे कोई आशय है संगति है तो लुप्तने में नहीं घाटी। समय धायद उसका ही सम्मान कच्छा हो लेकिन इस नीला की व्यवस्था का कामपर्यंत घन्ट तो कही है नहीं। इसलिए कही आकर उसका धर्म भी समाप्त या सम्पन्न क्या हो पायगा।

मैं होल्म में सीया नीलिमा के यहाँ पहुँचा था। उसका अनुरोध यही था। वह चाहती थी कि बीरेबर के साथ बातचीत पहले कुंवर के यहाँ न हो उसकी उपस्थिति में हो। उसने मुझे एक तरह घाड़े हारों सिधा और कहा कि बीरेबर अच्छा लड़का है होशियार है। सिर्फ़ मेरी बजह से बरा हुआ है।

नीलिमा का परिचय बीरेबर से अधिक पुराना न था। दो-एक बार घोंही मिसना हुआ हो तो हुआ हो। उसको लेकर नीलिमा का अधिकारी स्वर मुझे बधिकर न हुआ। लेकिन मैं चुप रहा और नीलिमा को देखता रहा। वह घीर तरह चाहे जितनी भी कमनीय मानुस होती हो लेकिन अपने इस अधिकारवृत्त भाव में मुझे दूर लय रही थी।

ऐसा मानूम हुआ कि इस समय जो बीच में है वह सृष्टा नहीं है और मैं अपने में प्रोधातीव स्वाधीन और मुक्त हूँ। मुझे बुर देखकर पीकी हर याद नीला मे कही—

“बुनाऊ बीरेत्तर को ? टेसीपोन पर वह छावद ही पाये । नहीं बाहर माना ही न हो ।”

“जाकर माने की कोई उकरत नहीं है । मैं वहीं कुबर के पहा उछये बाठ कर मूमा । वह क्या चाहता है ?”

“घाबारी चाहता है ।

“उसकी घाबारी को रोना किसने है ?”

‘माने बारे में घाबके ही घनिरबद मे । हम में कोई एक दूसरे के लिए गुठ नहीं कर सकता । पर जो अपने साथ साथ करता है वह मनमाग हमरे को मदद कर जाता है । मुझ सगता है साथ अपने को रोक्ते रहे हैं । इमीलिए बीरेत्तर दमा-सा रह गया है ।’

नीनिमा का लपोपन का स्वर मुझ प्रिय न ह्रा रहा था । मैंने इस वर कहा “छोड़ो यह सवापी कि हर तुम्हें इन कदर घाबार क्यों रगते हैं ?”

नीनिमा मुम्करा^२ । दोनी वह अपने को घाबार रखते हैं और मैं हममें उनको सहायता करती हूँ । इगत में मेरी घाबारी अपने साथ बन घानी है । अपने न गुली मपि घाबारी का पद बना तुम हर को रोगे, मुझे नहीं दाने ? मकिन देगती हूँ धन करत घनर बीरेत्तर या पार ।

“नहीं नीना । तुम उम मगड़ में न पड़ो ।”

“ममरा किस बात का है । वो तुम्हारा है बना वह मेरा भी नहीं है ? घोर बीरेत्तर होजहार सङ्गा है ।”

“नीना, तुम्हें मानूम है मैं अपने से भागकर तुम्हारे बाठ घाता हूँ । तुम मुझे तीगकर फिर पर-निरस्ती के मायनों में करती हो सो बना अपने साथ ग्याउ करती हो ? तुम ठी कून की मानिग हो, कि रिबे

कोई जिम्मेदारी नहीं धोतनी चाहिए ।

नीला हठी । बोली 'तुम जानते हो तुम्हें धन आपसूची की बकरत नहीं है । मैं बीवी का चुकी हू । लेकिन तुम समझते हो प्रायमी फूल के मानिन्द होता है तो जिम्मेदारियों से भागकर होता है । नहीं जिम्मेदारियों से निकट कर प्रायमी वह लक्ष्मी पाता है जिससे फूल खिलता घीर महकता है । मैं देख रही हू कि तुम बिरे-से हो खिल नहीं रहे हो, घीर प्रायम यह इसी बजह से कि बीच तुम इन जिम्मेदारियों को उठाने से बचना चाहते हो जो सामने हैं घीर तुम्हारी होने के लिए है ।'

क्या मतमब ?

“मतमब क्या । बीरेस्वर को ही जो तुम उसे सर से टाक नहीं सकते । यह क्या है कि वह ठगुर के पास रहता है ? तुम्हें मामूम है कि बीरेस्वर समझता है कि वह तुम्हारे सर का बोझ है घीर इधीलिए अपने से नाराज रहता है कि वह बोझ क्यों है ? घीर अपने साथ की यह नाराजी तुम्हारे साथ भी बन जाती है घीर फिर वह नाराजगी सारी दुनिया के लिए होने लग जाती है ।

इन बातों से अनुभव हुआ कि दूरी कम हो रही है घीर नीला का अधिकार आरोपण की बजह स्पृहसीय बना जा रहा है । मैंने कहा “उसे वैसा बरचने को चाहिये । गती तो मानता है मैं कजूस हू घीर जब पर अधिकारास रखता हू । तुम जानती हो हम महा परीब बनता की सेवा के नाम पर प्राय है । यहा प्राकर हमारे लिए सब तरह का सुभीता हो जाता है । सुभीता इस बात का भी हो जाता है कि वैसा चाहें तो कितना ही बटोर डालें । प्रायर बीरेस्वर की प्रायें स्थिति की जरी सुविधा को देखती हैं । लेकिन उसे सहरे देखना चाहिए । उसे बचना चाहिए कि यह स्वान ब ती है घीर उसका नाम नहीं सिना जा सकता । बल्कि सब पूछो तो यह क्याबती है कि हम अपने पर बचने के लिए हमार से ऊपर क्या वा जाते हैं, जबकि बेचारा घासत प्रायमी जाने केस काम जाता पाता होगा । बीरेस्वर ने स्थिति का यह पहनु कभी समझना नहीं

बाहा घीर मुझे कुछ है कि कुंवर के साथ घायल तुमने भी उसी राह
उसको बढ़ावा दिया। मैं नहीं समझता कि पढ़ने-लिखने का या दूसरों
की बातों का यह मतलब है कि जिनगी को धारण पसन्द बना दिया जाय।
घीर धारण—

मीमा ने हस कर कहा '—हराम है, क्यों नहीं न? पर मुझे
हराम से डर नहीं है कि धारण से डर। तुम नाहक डर रहे हो धारण से
घीर सिर्फ इसलिए कि किसी ने उसके तुक में पास लाकर हराम पसन्द रस
दिया है।' यही मीमा शिपयिला पड़ी घीर घासों में बिठबल कासकर
बोली 'मुझ देखो! मैंने सब चरणों को छोड़ दिया है—इसलिये कि
जिनगी को धारण सखू। फूल के मानिन्द तुम मुझ बताने से, घीर
मासम है तुम इस बात किछके मानिन्द पीस रहे हो? नहीं धारण
नहीं कहती। लेकिन पीस की इफ्तयत से पीस का प्रभाव कमी बढ़कर
नहीं हो सकता। तुम धारण को धारणी बना चाहते होवे इस बात पर
कि पीस धार घीर पीस तुमने पास नहीं किया। लेकिन क्या दावापी
बोले धारण को इस बात पर कि बीरेद्वर तीस से ऊपर हो गया घीर
धरमी तब धारण को तुम्हारे नबदीक नाकाय घीर सिर का बोझ मानता
है? मैं जानो कि वो ही बच्चे हैं तुम्हें घीर संजति कुंवर को पा गई
है। देखो पर उसके स्वाय को जगरी गुठी को। क्या बीरेद्वर उसके
गई जमा तक समता है। कुंवर को पैर की सतसत न होती घीर
संजति मिन स्याही होगी तो वह भी धारण तुम्हारे लिये गर-दई बनी
होगी वह गटा हा कि मैं—तुम्हारे लिए बेकार हूँ? नहीं हूँ बेकार,
तो किम लिए मरी हूँ? इलीलिये कि पीस की बच्ची नहीं है, कुंवाके
छोटी-छोटी फिरसे मुझे दूर रह जाती है घीर मरी सगुन्ती को जरा
भी हुनर नहीं पाती घीर मैं स्वान की जन ऊषार्यों पर पढ़ेब सखती
घीर टगर मरती हूँ जो तुम्हें पसन्द है। पढ़ी न? घटे, लेकिन मैंने
तुम्हें पूजा भी नहीं कि क्या लोवे। तो जरा बीरेद्वर को देखो मैंने हूँ
साथ ही बापी हो जायेगी।"

मीनिमा को मानना होगा। उसने मौका नहीं दिया और कुंवर से फोन मिलाकर बीरेस्वर को घाने के लिए कहा।

बीरेस्वर ने पूछा 'बाबूजी घायले ?'

"नहीं तो तुम्हें किसलिए बुला रही हूँ।"

"तो बाबूजी को फोन दे बीबिये।"

मैंने फोन लिया तो दूसरी तरफ कुंवर बोल रहे थे। उन्होंने कहा "घायल इधर या सड़ें तो हम सब लोग इधर-उधर कर रहे हैं। तमाच भी है। चाय यहीं लीजिएगा।"

मुझे यह अच्छा नहीं लगा। लेकिन एकाएक उत्तर में कुछ सूझ नहीं। बोला 'मुझे कुछ देर लन सकती है।'

"जी कोई बात नहीं। जब छहलठ हो घाइये। मीनिमा वैसी भी है हमारी तरफ से माफ़ी माँग लीजिएगा। क्या घायलके साथ वह भी घायली ?—घा सकेगी ?"

मैंने कहा 'बीरेस्वर जब इधर या उधर तो अच्छा बा।'

उधर प्रतीत हुआ कि कुंवर ने बीरेस्वर से पूछ-ताछ की फिर मुझे कहा "बीरेस्वर यह रहे हैं कि घायल यहाँ तो घाने ही वाले हैं।"

मैंने कहा "अच्छा!" और फोन को बंद से बन्द कर दिया।

धन्यतर मीनिमा की देखा। मेरी घाबों में झुंझनाहट का भाव रहा होगा। मुझे ऐसा भी लग रहा था कि मेरे साथ मीनिमा का भी अपमान किया गया है। किन्तु मीनिमा की निवाह में सहानुभूति की धीर उस को कितनी धन्यता की बितना न थी। मैंने इस भाव से देखा कि नीसा बत्तापो ऐस परिवार के साथ क्या किया जा सकता है ? वे अन्ध मुत्तर होकर तो मेरे मुह से नहीं घायले से लेकिन जैसे मुझ से यही प्रगट हो रहा होता।

फोन सेने मे मुझे बड़ा होता पड़ा था। नीसा भी लड़ी ही थी। उसने मुझे देखा और मेरे कन्धे पर हाथ रखा। मानो घायलवास्तु देती हो। बोली 'घायलें जलो बिस्ता दिव बात की करते हो ?"

कन्हे से घामगी हुई वह मुझे कुर्सी तक साईं घीर वहां बिठा दिया ।

मुझमें बंदर की उस बेघरबी का बिचार मरा या घीर नीतिमा समझ रही थी कि देखो इस तरह तुम घाम के जवान सोमों की बातों पर लीमा करोये तो कैसे बनेगा ? हम तुम घामह उन्हें ठीक तरह समझ नहीं सकते हैं । घामे दुनियां उनकी है घीर हम बीच रहे हैं । इसलिए वे घामर घाम बिस्वास से मरे हैं तो इसमें क्या गुपई है ? बुझुर्गी की क्या यह कमजोरी नहीं है कि वे घामने लिए बिनाय चाहते हैं घीर छोटीं से निकै घाम्मा-घामन की घामा करते हैं ।

"नीमा तुमने धम्मा नहीं किया कि कोन किया । मेरे यहां होने घीर टहरने पर वे क्या सोचेंगे ।

नीमा बिलगिनाकर हंसी । बोली "घीर क्या सोचेंगे ? यही सोचेंगे कि उनके बाबूजी भी उनके जैसे जवान हैं घीर नीनिमा देखी—"

मैं उस हंसती हुई नीमा की तरफ देखना रह गया । किन्ती बहु उगीर्ण घीर निर्दिष्ट रहती है । देना जाय तो हमारे समाज में इज्जत घामक की रथा का घाम पुरुष मे घामिक स्त्री के लिए ही है । मेरिन जैसे बहु सब प्यबे प्रम हो घीर नीनिमा को पूता ही न हो । नीनिमा घाम्मा उम्मान्तर स्तर की मरिना है । मेरिन इतनी बिबस्त कि जैसे उगके घामने स्तर घामि का प्रम कभी उरस्विन ही नहीं होना है ।

मुझे घामने में प्रम देगकर नीनिमा मे कहा क्यों जवान बने मने में कोई दोष तो नहीं है । जों दोष हममें है कि मममें तो बाहर जवान बाग घीर भीतर मे देमा इज्जत कर न करें । छोदने क्यों नहीं हो फिर को । जवान लोगो को बडने-बरतने से जैसे को चार्हे । मैं तो सोचनी हूं बंदर की मोरबन में छोया तो बीरेबर बदन जायेगा । मानी हूं कि मरब का घाम विराम है मुझारे बंदर में । "छोटो मोच को पठार पेंरो । सामो घरना हाय बो !"

नीनिमा के मेरा हाथ उगया घीर घरनी हृदेवी पर घाम मित । मुझे हाथ की हृदेवी मे उमरो फिर बहु पीये-पीये मराने सदी । मेरा

हाथ कुछ देर वहाँ निरपेक्ष रखा रहा । फिर एकाएक मैंने नीलिमा की हवेली को दरवाजा घीर हाथ बापिस खींच लिया । कहा "नीला इसका वही उत्तर हो सकता है कि घाय तुम भी वहाँ चलो ।

'कृबर यह नहीं पसन्द करेंगे ।

इसीलिए घीर भी तुम्हें बसना चाहिए । तुम्हारे चलने से प्रचको सबक मिसगा ।

नहीं, सबक अबानों को प्रच्छा नहीं समा करता । घीर तुम कहो तो मैं फिर फोन मिलाए बेठी हू । इस बार जरा रीब से कहना कि बीरेबबर फीरन प्राए—जरा रीब के साथ ।

मैं सहमत हुआ । फोन पर मैंने सीधा हुबम दिया घीर बीरेबबर नीलिमा के कमरे में प्रा पहुचा । दरवाजे से ही नीला मैं उसे कर्बों से बाककर अपने पास सोफा पर बिठाया घीर बठले समय बीरेबबर ने मुझे जप झुककर नमस्कार दिया ।

'कहो बीरेबबर ठीक-ठाक हो ? पहले से कुछ बुबने बीब रहे हो ।'

'जी नहीं सब ठीक है ।

'नीलिमा बेबी ने बुलाया, तुम प्राये क्यों नहीं ?

'घाय—जबर प्राही रहे से ।

तो भी बेबी हमें नाहक फिर बुबारा बुलाना पड़ा ।

'जी हां । नाहक तो यह हुआ ।

उत्तर मुन कर मैं अपने भीतर बिधा । मैंने कहा, "कृबर ने तुम्हें बुनाया है । क्या सोच रहे हैं वह तुम्हारे बारे में ?

'घाय उनके लिनाफ क्यों हैं ?

'मैं लिनाफ । कैसी बात तुम करछे हो ?

'घाय ठाकुर साहब को अपने ज्वादे नबरीक मानते हैं ।

'नबरीक तो ठाकुर साहब हैं ही । पर कृबर तो सगे हैं । नहीं, नहीं, यह तुम्हारा मतत जमान है घीर कृबर को ऐसा बबता है तो भूल है । घायब मुम्मे कोई मतती हुई हो । लेकिन एक बात है, इम्बट्टीब,

में सब का खास्ता मरबाद में पड़ता है। सरकार सबको पीज टुपा करती है। इसलिए जिसको इच्छस्त्री कहा जाता है उसको जर्ज नहीं होती है। एडिबलर सबसे मुम की इच्छस्त्री है। उसमें जिन्गी घाजा रहती है और घाबमी कुरल से बहुत दूर नहीं जाता। इच्छस्त्री में बर जोड़-तोड़ के पीछे पडा रहना है और मही पछो तो उसमें वह जिन्दगी क बुनियादी घसूलों से दूर पड़ने लग जाता है। वही मेरा ख्याम का और है। पर अगर तुम—

बीरेबर मुझे देख रहा था। उसने बिहारे पर ध्याय था। वह कुछ देर बूष रहा। फिर बोला— घाय घाने को कामयाब घाबमी ममम्मे है शायद !

बहकर उसने किमी बन्द सक्ती में देखा। जैसे कैमला उसके पास है और मेरा उसमें बबान नहीं है। उस दृष्टि में मुझ डगना पडा। मैंने पस्वी में कहा ‘कामयाब ? नहीं तो !’ मैं किन्तुसुसु-बासपाब-घाबमी नहीं हूँ।

“फिर कैमला अपने हाथ में क्यों लेता है ?

बीसिमा बीटी मुन रही थी और गिफ देर रही थी। मेरी जिमाह उस पर गई। उसकी घानों में मुझे घयनीति सिगा की। जैसे गाप कुछ रहगत भी हो। किन्तु मैं घयन को रोच नहीं सखा। बोपा अपने बारे में मुम कैमला बर मरने हो। इमर को उसकी तकनीक उठाने की फिर क्या गरज रह जानी चाहिए ?

“नेतिन मुझे कभी अपने मुझ पर छोडा है ? जैसे की बर बरलत बड़ी है ता साथ में घाने जयनेत भी पेन बिया है। क्या दनी घदिरबास के बन पर घार साबने से कि मैं घाने बारे में पसना बर निबन्धुगा है तेरिन घटन हो गया। मुझ घब दम लग दापरे में नहीं रहता है।”

मुझे ता गुणी हावी कि मुन जिगी अपने मन के काम में सगो और छरबी करी।”

‘घारको गुनी होयी ?—तो घच्छी बात है कि घारकी गदी इजये

हाथ कुछ बेर बहो निहकेष्ट रखा रहा । फिर एकाएक मैंने नीतिमा की हथेली को बचावा धीरे हाथ बापिष्ठ खींच लिया । कहा, "नीतिमा इसका यही उत्तर हो सकता है कि धाय तुम भी बहा बसो ।"

"कृबर यह नहीं पठम्ब करेमे ।

इसीलिए धीरे भी तुम्हें बलना चाहिए । तुम्हारे बसने से उसको सबक मिलता ।

मही सबक बचानों को सक्ता नहीं सगा करता । धीरे तुम कहो तो मैं फिर फोन मिलाए बेठी हू । इस बार बरा रीब से कहना कि बीरेस्वर धीरेल घाए—उपर रीब के साथ ।

मैं सहमत हुआ । फोन पर मैंने सीबा हुनम दिया धीरे बीरेस्वर नीतिमा के कमरे में घा पहुँचा । दरबाजे से ही नीतिमा ने उसे कमरों से बामकर अपने पास सोफा पर बिठाया धीरे बयले समय बीरेस्वर ने मुझे उपर झुककर नमस्कार दिया ।

"कहो बीरेस्वर, ठीक-ठाक हो ? पहले से कुछ बुनने बीक रहे हो ।"

"जी नहीं सब ठीक है ।

"नीतिमा बेबी ने बुसाधा तुम घामे क्यों नहीं ?

"घाय—उपर घाही रहे वे ।

"तो भी बेबा हूँ नाहक फिर बुबाघ बुसाधा पका ।

"जी हाँ ! नाहक तो यह हुआ ।

उत्तर सुन कर मैं अपने भीतर खिजा । मैंने कहा "कृबर ने तुम्हें बुनाया है । क्या सोच रहे हैं वह तुम्हारे बारे में ?

"घाय उनके खिलाफ क्यों है ?

"मैं खिलाफ । कैंसी बात तुम करते हो ?

"घाय ठाकुर साहब को अपने प्यारे नजरीक मानते हैं ।

"नजरीक तो ठाकुर साहब हैं ही । पर कृबर तो सब हैं । नहीं, नहीं यह तुम्हारा मतलब सवाल है धीरे कृबर को ऐसा सक्ता है तो बूत है । घायर मुझसे कोई नमती हुई हो । लेकिन एक बात है, इन्वस्ट्रीज,

मैं सब का बास्ता सरकार से पड़ता है। सरकार सबको खीज हुपा करती है। इसलिये जिसको इण्डस्ट्री कहा जाता है उसकी जड़ें नहीं होती हैं। एग्रीकल्चर सबसे मूल्य की इण्डस्ट्री है। उसमें जिसकी धारा रहती है और धारमी कुदरत में बहुत दूर नहीं जाता। इण्डस्ट्री में वह जोड़-तोड़ के पीछे पड़ा रहता है और नहीं पछो तो उसमें वह जिसकी के बुनियादी धमनी से दूर पड़ने लग जाता है। वही मेरा खयाल था और है। पर धर सुन—

धीरे-धीरे मुझे देग रहा था। उसने बेहरे पर व्यंग्य था। वह कुछ दूर चुप रहा। फिर बोला—“घार धरने को कामयाब धारमी सपने हैं धारध !”

कहकर उसने किसी कदर माग्नी से देगा। जैसे धैर्यमा उसके पात है और मेरा उसमें बचाव नहीं है। उस दृष्टि से मुझे डरना पड़ा। मैंने धारमी से कहा ‘कामयाब ? नहीं तो ! मैं बिजुतुन कामयाब धारमी नहीं हूँ।’

‘फिर धैर्यमा धरने हाथ में क्यों धेते हैं ?’

धीर्यमा बेंटी गून रही थी और धिर्क देग रही थी। मेरी निगाह धम पर गई। उसकी धांगों में मुझे धरनीति दिगाई थी। धैर्यमा धुछ रहपाग भी हो। बिजुतु मैं धरने को रोक नहीं सका। बोला धरने धारे में तुम धैर्यमा बर धरने हा। दूधर को उसकी ठकधीर उठाने की धिर क्या धरने रह जानी धाधि ?

“नरिन मुझे कधी धरने धुछ पर छोड़ा है ? धैर्य भी उर उररत पड़ी है तो धार में धरने उरने भी धैर्य धिया है। क्या धनी धरिधरध के धम पर धार सोधने के धि मैं धरने धारे में धैर्यमा बर निधनुंगा है धैर्यमा बधुत हो गया। मुझे धर धम ना धारने में नहीं रहना है।”

“मुझे तो धुनी हावी धि तुन धिमी धरने धम के धाम में लगे धीर धरनी करो।”

“धारको धुनी होनी ?—तो धरनी धात है धि धारनी गरी धरने

नहीं है कि मैं आपका पालन्य रखूँ।

“बीरेस्वर !

“कृबर माई मुझे अपने साथ रखना चाहते हैं। यह महीने समझ-भूम नू तो फिर किसी काम का इन्डिये-जेन्ट जार्ज मुझे बे देने की सोचते हैं। इसमें आप को क्या एतराज है ?

किसने कहा कि मुझे एतराज है ?

‘कृबर का मही ज्वाला है कि आप पसन्द नहीं करते।

“वायद पसन्द तो नहीं करता हूँ। लेकिन यह तो अपने-अपने दम्भन की बात है। बाकी बिचमें तुम्हें एषि हो उध काम से मैं तुम्हें क्यों रोकने मासा हूँ।

नीलिमा बीच में बोली “कृबर साहब से ठीक धीरे से बात हुई है क्या कि वह बाद में तुम्हें किस काम में लपाना चाहेंगे बीरेस ?

बीरेस्वर ने नीसा की ऐसे बेसा जैसे दबल पसन्द न हो। बोला—

‘यह महीने एक सब काम समझ जाने पर मुझे मीका देना चाहते हैं कि मैं नून सूं।

यह तो ठीक है। लेकिन कुछ टर्म्स की बात हुई ?

“अपने में क्या टर्म्स की बात हुआ करती है ? आपको मान्य है वह हमारे सवे है।

मैंने कहा ‘कृबर ने मुझसे इतना जिक्र नहीं किया।

“तो तो कहते थे बात हुई थी। ज्वाला जिक्र की क्या हाता। आपका उधर प्यान भी हो।

बहुत हो गया या धीर मैंने स्मिति को हाथ में लेना चाहा। कहा—

“देखो बीरेस्वर। हमने यकितिया की हो सकती हैं। लेकिन तुम तीछ से उगर उधर के हो गये हो। एक तरह मुझसे इतिहास हो। भूम जाओ को हमसे गलत हुआ है। हम सोप निचन दिन के धीर हैं। पाने जिक्रगी तुम्हारी है। यह भी मत समझो कि हमारा बीच है तुम पर है धीर अपनी भाशाओ के खातिर हम तुम्हें बन्दिध में रखना चाह सकते हैं। पर उध

थी कि तुम्हारी छाती होती थीर तुम सब तक जिम्मेदारी लेकर पूरे नागरिक के तौर पर कहीं बने होते । चाहेद तुमने हमारा ही स्वागत रखकर हमसे आजाद होकर अपने को असंग बमाना नहीं चाहा । अगर छाती के मामले में तुम यह भी कहते रहे कि अपने पाव सब तक न धके होंगे तुम उस अज्ञान में नहीं पड़ोगे । मेरी बिन्दगी तुम जानते हो उन मामलों में बीती है बिन्दु खोजगार नहीं कह सकते हैं । यानी मैं तीसरे तुम्हें किसी खोजगार में नहीं लगा सकता था । इसकी विनाशित तुम्ह हो तो बेना नहीं है । लेकिन मेरी मर्यादाओं का सम्बन्ध रखते तो तुम हम लोगों से कटे नहीं रहते और बिन्दु की कीमती सास प्रोटेस्ट में ही नहीं बसा रहते । पर मेरी बात छोड़ो । तुम्हारी मा मे तो बड़े कष्टान से तुम्हें पासा है । तुम्हारा धीर मार्ग कोई नहीं है । अगर अपने बोधन में वह तुम्हारा सहाय पावे की सोचती भी है, ता तुम मानोये वह अस्वाभाविक नहीं है । बहिन है तुम्हारी एक । लेकिन बहिनो तो पराव पर की होती है । इतर तर की प्राप्त एक तुम से और तुम है । तुम्हारी मा के तुम साइसे रहे हो । लेकिन अगर यह प्यार तुम्हें बन्धन मामूम हो तो एमी कोई बात नहीं और तुम अपना मार्ग चुन बना सकते हो । एह कृबर का सवाल । कृबर न सब कई बार एसा भाव प्रकट किया था कि रिश्तेदारों से बिचनेन का सम्बन्ध रखना जोगिन का हुपा करता है । छाती की एह काय से ऊपर हा गया है । तुम्हारी मा न कई बार कहा कि मैं कृबर को बहू । लेकिन क्या था जो कृबर को मामूम नहीं था । और सब तो उनको धारमी की अस्तित्व धीर भी ज्यादा रही होगी । क्यों उन्होंने तभी तुम्हें अपना कोई काम नहीं मीरा । मान काम तक ध्यान नहीं दिया तो सब उनकी तुम्हारे बारे की दया बिन्ता पर मुझ कुछ सोचना पड़ जाता है—

कृबर में कुछ दया धीर देना कि बागेवर की कृबर की ममीशा विन नहीं हो रही है । मैंने कहा "मिठ मरनब दर नहीं है कि—

बीनेदर ने कहा "अप्याय न बीचिने बापुत्री । कृबर मार्ग बट्टे

नहीं है कि मैं आपका पाबन्द रहूँ।

‘बीरेस्वर !’

‘कूबर भाई मुझे अपने साथ रखना चाहते हैं। उन्हें महीने समझ-बूझ में तो फिर किसी काम का इन्विपेन्डेन्ट जार्ज मुझे दे देनी की सोचते हैं। इसमें आप को क्या एतराज है ?’

‘किसने कहा कि मुझे एतराज है ?’

‘कूबर का यही प्यार है कि आप पसन्द नहीं करते।’

‘सायद पसन्द तो नहीं करता हूँ। लेकिन यह तो अपने-अपने सम्मान की बात है। बाकी जिसमें तुम्हें रुचि हो उध काम से मैं तुम्हें बगैर रोकने कासा हूँ।’

नीलिमा बीच में बोली ‘कूबर साहब से ठीक प्यारे से बात हुई है क्या कि वह बाब में तुम्हें किस काम में लगाना चाहेंगे बीरेख ?’

बीरेस्वर ने नीला को ऐसे देखा जैसे बख्त पसन्द न हो। बोला—

‘उन्हें महीने एक सब काम समझ जाने पर मुझे मौका देना चाहते हैं कि मैं चुनूँ।’

‘यह तो ठीक है। लेकिन कुछ टर्म्स की बात हुई ?’

‘अपने में क्या टर्म्स की बात हुआ करती है ? आपको मालूम है वह हमारे समे हैं।’

‘मैंने कहा “कूबर ने मुझसे इसका भिन्न नहीं किया।’

‘तो तो कहते से बात हुई थी। क्याका बिना भी क्या हावा। आपका सबर ध्यान भी हो।’

बहुत हो गया था और मैंने स्थिति को ह्रास में लेना चाहा। करा—

‘देखो बीरेस्वर। हमने गलतियाँ की हो सकती हैं। लेकिन तुम ठीक से इण्डर समर के हो गये हो। एक तरह मुझसे काबिल हो। भूम बाघी की हथसे गलत हुआ है। हम सोच बिनाके दिन के और हैं। घामे बिकनी तुम्हारी है। यह भी मत समझे कि हमारा बोझ है तुम पर है और अपनी आशाओं के आदितर हम तुम्हें बन्दिध में रखना चाह सकते हैं। पर उध

तो कि तुम्हारी छाबी होती और तुम जब तक जिम्मेदारी लेकर पूरे
 नागरिक के तौर पर कहीं बने होते। चायद तुमने हमारा ही स्वागत रखकर
 हमसे आजाद होकर अपने को अलग बमाना नहीं चाहा। अगर छाबी
 काममें मैं तुम यह भी कहते रहे कि अपने पांव जब तक न पड़े होने
 तुम उस अज्ञान में नहीं पड़ोगे। मेरी जिन्दगी तुम जानत हो जत कामों
 जीती है जिन्हें खोजगार नहीं कह सकते हैं। यानी मैं सीधे तुम्हें
 किसी खोजगार में नहीं लगा सकता था। इसकी विकायत तुम्हें हो तो
 जाना नहीं है। लेकिन मेरी मर्यादाओं का अज्ञान रखते तो तुम हम सोमों
 से बड़े नहीं रहते और जिन्दगी के कीमती सात प्रोटस्ट में ही नहीं संबा
 सकते। पर मेरी बात छोड़ो। तुम्हारी मा ने तो बड़े कसासे से तुम्हें
 पाला है। तुम्हारा और भाई कोई नहीं है। अगर अपने बीपपन में वह
 तुम्हारा सहाय धाने की सोचती भी है ता तुम मानोय यह अस्वाभाविक
 नहीं है। बहिन है तुम्हारी एक। लेकिन बेटियां तो परदा घर की होती
 हैं। अगर पर की पास एक तुम य और तुम हो। तुम्हारी मा के तुम
 भाइय रहे हो। लेकिन अगर यह प्यार तुम्हें अल्पन मामूम हो तो ऐसी
 कोई बात नहीं और तुम अपना मार्ग खुद बना सकते हो। पूरा कुबर
 का अज्ञान। अगर मैं सब कई बार ऐसा भाव प्रकट किया था कि रिश्ते
 पारों से बिजनेस का सम्बन्ध रखना जोरिम का दुष्प्रकार है। ताबो
 को यह बय से ऊपर हो गया है। तुम्हारी मा ने कई बार कहा कि मैं
 कुबर को बहू। लेकिन क्या था जो कुबर को मामूम नहीं था। और तब
 तो उनको घातकी की जरूरत और भी ज्यादा रही जामा। क्यों जर्दोने
 तभी तुम्हें अपना कोई काम नहीं सीता। सात बरस तक ध्यान नहीं
 दिया तो अब जन्दी तुम्हारे बार की इन जिम्ता पर मुझ कुछ सोचना
 पड़ जाता है—

बटकर मैं कुछ धरा और देता कि बीरेबर को कुबर की समीक्षा
 प्रिय नहीं हो रही है। मैंने कहा "मरा मजतब दर नहीं है कि—"

बीरेबर ने कहा 'अन्याय न कीजिये बाबूजी। कुबर माई बहने

ये कि धन तक उन्हें संकोच रहा। वह अधिकार नहीं मानते थे अपना कि मेरे बारे में आपसे किसी तरह का प्रस्ताव करें। संकति भी कही थी—कि बाबूजी के मान के लिए यह प्रथित नहीं है। वह कुछ मान पावेंगे और समझेंगे कि सहायता का हाथ बढ़ाया जा रहा है। उधर तो आपका इतना मिहान, और आप अपने मान में उन्हें उस्ता ही समझ रहे हैं। मैंने बी० ए० इस बरस हुए किया था। क्या यह किसी और का काम था कि मुझे वहीसे से समझे। पर आपके मान ने उनकी दूर रखा कि जो इस बारे में कुछ कर सकते थे। यहाँ तक कि ठाकुर साहब के पास मैं गया तो इसमें आपका कोई इशारा या मशविरा न था। यह तो ठाकुर की विमता थी और माँ की ममता थी कि आपके पीठ पीछे फँसना हुआ और मैं धन में किसी काम में लजा तो रही।”

“तुमने एम० ए किया और नाँ किया। उससे प्रागे किसी को क्या करने को रह जाता था?”

“जी कुछ करने को नहीं रह जाता था। और धन भी कुछ नहीं है जो मैं आपको करने को कहता हूँ। इतना है कि आप चुन पाइये कि मैं आपका लड़का हूँ। मैं धनाम होता तो इससे बचना होता। यह तो न होता कि दूसरे बाप मानते मैं बाप मानता और वह सब मानना बेकार जाता।

नीलिमा से धायक सहा नहीं जा रहा था। वह बोली—

“बीरेबर बेटे, तुम अपने बाप को नहीं जानते। सोचो कि जिसे अपने पुत्र से यह सुनना पड़े वह कितना प्रभाया होगा।

“मैं इनका पुत्र नहीं हूँ। बस सिर का बोझ हूँ। यह दूर करना चाहते हैं और मैं इनके सिर पड़ा हूँ। प्रभाया तो मैं हूँ कि यह अपनी धानीगता में मुझे डाट-बपट भी नहीं सकते हैं और ऐसे रखते हैं जैसे मैं इनके लिए डरावना बन गया हूँ। आप मेरा कष्ट नहीं समझेंगी, धरिणी। इनका नाम है और मैं इनका बेटा समझ जाता हूँ। और बाहर
—ते हैं और मैं छोटा बन जाता हूँ।

धीर मौनकर अपने मित्र में आ जाता हूँ कि किसी से कुछ मुनना न पड़े। मममत्ते हूँ यह चाहिनी है बुद्धिली है। वो तो होयी ही। लेकिन वह सब—सब इनके अभिमान की बजह से है। मैं पूछता हूँ कि अभिमान किस बात का है? इस बात का है कि बेटे को पीसे नहीं बेटे है कि जीने अपने को भी नहीं बैठ है। फटी बप्पस पहन सकते हैं, फटा कुरता पहन सकते हैं क्या अभिमान इसी बात का है? इनके लिए यह सोमा की बात होगी। लेकिन उस तरह की सोमा के घोरब का दूसरे के हक में क्या मनीषा निकलता है यह कभी सोचा है? मां को कैसे कपटों से गहना पड़ा है मैं जानता हूँ। इनको तो उन कपटों की बाहबाही मिल जाती थी न। नामवरी मिल जाती थी। लेकिन जिसको कुछ नहीं मिलता, सिर्फ कपट ही मिलता है उनके बारे में इन्होंने कभी सोचा है? घाय हमारे परिवार से हमदर्दी रखती हैं घाटी लेकिन इनका यह डोंप है कि पर नहीं चाहिए। पद के लिए तो सारा स्वायत्तपग्या का यह रूप है। ऊपरी जो है मगरा है। इसलिए है कि घायह घनुरोब धीर हो, धीर यह चाहिए कर सके कि पद ने नहीं बस्कि इन्होंने पद पर कृपा की है।”

बीरद्वार की बातों को मैं सुमता रह गया। मुझे वह चुभती मामूम होती थीं। नायद इसलिए कि स्वयं मुझमें से उनकी सचाई की प्रतिध्वनि आ-आ जाती थी। मैंने देखा कि नीतिमा उन बातों से बहुत व्यग्र हो घाई है। उसे नायद घनुरोब न था कि बीरद्वार को खोज बिलनी गहरी है। नीतिमा स्वयं न होती तो हो सचता था कि बीरद्वार के उद्गार धीर की सीपी पार ले निकलते। उमन बीच में रोकर बहा “दम बीरद्वार! बापा हो गया है। सब घाये बूळता मुझे नहीं करना चाहिए।”

“घाय नहीं जानती है घाटी। मरी डिम्बरी इग्लान सर्बाद कर दी है। मैं क्या नहीं कर सकता था। सब भी क्या नहीं कर सकता हूँ। धीर धायिर कुछ भी करने लायक इन्होंने मुझ नहीं छोटा है। बबह यह कि सब कुछ करने लायक यह करने को मानते थे धीर मुझ या तो माइ

। करतीं दे, या आजा देते दे ।”

नीला ने कहा “बस बीरेस्वर । धीरे कहने के साथ अपना हृत्पत्र उसके मुह पर रख दिया ।

बीरेस्वर ने वह हाथ झटके से हटाया और वह घामे कुछ बोसने को हुआ कि नीला ने तभी स उसके मात पर एक चपत बड़ दिया और बोस स बोसो “बस चुप !

यह सब घनायास हो गया । नीला स्वयं चकित रह गई । चपत लाकर बीरेस्वर बो-एक क्षण नीलिमा को देखता रह गया । ऐसा गया कि उसको धाँखा म ब्याला है और जाने वह क्या कर बैठे । नीलिमा ने उसकी निगाह स अपनी धाँखें नहीं हटाईं । उन धाँखों में विस्मय या और सब तनिक ककणा भी हो आई थी । उसने भी बीरेस्वर की धाँखों में चित्तपारी देखी होगी । लेकिन उसकी अपनी धाँखों में किसी भय की तनिक भी झलक न थी । मानो उसमें घका-भासका तक न हो और वह भीतर स्वस्व और विस्वस्त हो ।

बीरेस्वर कोई एक मिनट तक चपसक नीलिमा को देखता रहा । नीलिमा की भी पलक झपी नहीं । मैं बुरस का सासी हुआ बैठे या, रकसम चुप और मुन्न कि तभी देखा बीरेस्वर अपने मुह को दोनों हाथों म डक कर रोता हुआ नीलिमा की मोर में फिर पड़ा है । सिधक रहा है, मुबक रहा है कि घाँटी तुमने ठीक किया । बाबूजी न तो कभी मुझे माघ तक नहीं । जो बेट की गुस्ताबी सहे, मारे नहीं जो घाँटी क्या बाप होता है ? घाँटी देखता हा सकता है पर क्या बाप वह हो सकता है ? नीलिमा बीरेस्वर के सिर के बालों में हाथ फेरती रही उसे चप काटी रही समझती रही कि तुम अपने बाबूजी को जानते नहीं हो बेटा । जान मोम तो गुस्ताबी नहीं होगी ।

इम बीच नीलिमा भूस ही गई थी । बीरेस्वर के घाँटे ही बाठ में तैली पड़ता गई थी और ध्यान किसी बुरसि और न जा सका था । बीरेस्वर के सिर म हाथ फरुठ हुए, नीलिमा ने मुझे बटन का इघाच

किया घीर मैंने कमरे के बाहर जाकर धाते हुए बीच को काफ़ी बगैर
 का घाईर दिया ।

कमरे के प्राया तो बाठाकरण कदमा हुआ बा । बीरेखर, स्वतंत्र
 घीर लव धमय कुर्सी में बैठा हुआ या घीर नीमिमा उससे तमारा के
 धार में पूछ रही थी ।

वेर माने पर नीमिमा के कहा "जो फोन मिलाठी हूँ । एक बाव
 फिर रोक धारमाना होया । कुंवर और तमारा दोनों को हुंम देना
 होया कि वही धाकर काफ़ी पीएँ घीर बाठ करे ।"

मैंने कहा "बीरेखर करो न करे फोन । फिर रोक की भी उकल
 न होगी ।"

नीमिमा के कहा, "यह ठीक है । जो बीरेखर, फोन करके दोनों को
 यही बुला में ।

बीरेखर के कहा "मैं भाफी नायता हूँ बाबुजी ।"

"बिग !"

' भाव ही कीजिए फोन मानी । नहीं तो बाबुजी करें । ये—

"अच्छा वें करती हूँ ।" कहकर कमरे का नम्बर मिमाया कहा,
 "बीरेखर जो न बाठ कीजियेवा घीर कहने के साथ थोता बीरेखर
 के हाथ में घमा दिया ।

बीरेखर के लिए उपाय न रहा "थोता कुंवर माई में बीरेखर
 हूँ । बाबुजी धायको घीर तमारा को यही बुला रहे हैं । हमारी घाटी
 का भी घनूताय है ।

"गरिन कई वहाँ जो सब ठीकरी है—"

"मानी जी कह रही है कि ठीकरी सब यहीं से घादये । तमारा को
 बरा दीजिये तो—

तमारा के कहा "जहो बीरेखर, बही रम कय ।

बीरेखर के कहा "तमारा कुंवर को सेकर तुम यहाँ स्थितने पिनट
 में बहूब नबठी हो । बहूँ धाय ताता है, लीफ़ा नहीं है ।"

करते थे, या धाञ्जा बैठे थे !

मीसा ने कहा 'बस बीरेस्वर ! और कहने के साथ अपना हाथ उसके मुह पर रख दिया ।

बीरेस्वर ने वह हाथ झटके से हटाया और वह धामे कुछ बोलने को हुमा कि मीसा ने तभी उस उसके पास पर एक चपत बड़ दिया और बोरे उस बोसी 'बस चुप !

वह सब घनावास हो गया । मीसा स्वयं बकित रह गई । चपत खाकर बीरेस्वर दो-एक क्षण मीसिमा को देखता रह गया । ऐसा मया कि उसकी आंखों में आभासा है और जाने वह क्या कर बैठे । मीसिमा ने उसकी निगाह से अपनी आंखें नहीं हटाई । उन आंखों में बिस्मय था और अब तनिक कम्पसा भी हो आई थी । उसन भी बीरेस्वर की आंखों में चिनपायी देखी होगी । लेकिन उसकी अपनी आंखों में किसी भव की तनिक भी झलक न थी । मानो उसमें खफा-घाघका तक न ही और वह भीतर स्वस्व और बिद्वस्त हो ।

बीरेस्वर कोई एक मिनट तक अपनी मीसिमा को देखता रहा । मीसिमा की भी पलक झपी नहीं । मैं बुरस्य का साधी हुमा बैठा था, एकदम चुप और सुन्न कि तभी देखा बीरेस्वर अपने मुह को दोनों हाथों में डक कर रोता हुआ मीसिमा की बोरे में गिर पड़ा है । सिचक रहा है, सुबक रहा है कि घांटी तुमने ठीक किया । बाबूजी ने तो कभी मुझे माय तक नहीं । जो बेट की मुस्ताबी सहे, मारे नहीं जो घांटी क्या बाप होता है ? घांटी देखता हा सफ़टा है, पर क्या बाप वह हो सफ़टा है ? मीसिमा बीरेस्वर क सिर के बालों में हाथ फेरती रही उसे बप काटी रही समझती रही कि तुम अपने बाबूजी को जानत नहीं हो बटा । जान मोय तो मुस्ताबी नहीं होगी ।

इस बीच मीसिमा घूस ही गई थी । बीरेस्वर के घांटे ही बाठ में तबी पड़ता गई थी और ध्यान किसी दूसरी ओर न जा सका था । बीरेस्वर के सिर में हाथ फेरत हुए मीसिमा ने मुझे बटन का इयात

क्रिया और मैंने कमरे से बाहर जाकर घाटे हुए बैच को काफी बर्बर
 कर घाबर लिया।

कमरे में आया तो बातावरण बदसा हुआ था। बीरेस्वर, स्वस्थ
 और स्वयं धन्य कुर्ती में बैठे हुए था और नीलिमा उससे तमारा के
 बारे में पूछ रही थी।

मेरे आने पर नीलिमा ने कहा “तो फोन मिलाती हूँ। एक बार
 फिर रोब आबमाना हुआ। कृबर और तमारा दोनों को हुकम देना
 होमा कि वहीं आकर काफी पीए और बात करें।”

मैंने कहा ‘बीरेस्वर क्यों न करें फोन। फिर रोब की भी बरूठ
 न होगी।’

नीलिमा ने कहा “यह ठीक है। सो बीरेस्वर, फोन करके दोनों को
 यहीं बुला लो।

बीरेस्वर ने कहा, “मैं माफी माँदता हूँ बाबूजी।”

बिना।

“घाव ही कीजिये फोन घाटी। नहीं तो बाबूजी करें। मैं—

“यच्छा मैं करती हू। कहकर कमरे का नम्बर मिसामा कहा,
 “बीरेस्वर जी से बात कीजियेगा और कहने के साथ होगा बीरेस्वर
 के हाथ में पमा दिया।

बीरेस्वर ने निए उपाय न रहा बोमा कृबर भाई, मैं बीरेस्वर
 हूँ। बाबूजी घावको और तमारा की यहीं बुला रहे हैं। हमारी घाटी
 का भी धनुष है।

“नेकिन आई यहाँ जो सब तैयारी है—

“घांगी जी कह रही है कि तैयारी सब यहीं से घादये। तमारा को
 परत कीजिये तो—

तमारा न कहा ‘बहो बीरेस्वर, बही रम घये।’

बीरेस्वर न बगा “तमारा बबर को सकर तुम यहाँ दितने मिनट
 में पटूच सजती हो? उन्हें साथ लाना है छाड़ना नहीं है।”

“बो तो मना कर रहे हैं।”

“फिर तुम क्या रही कि मना कर रहे हैं। देखो पांच मिनिट।”

‘पांच नहीं दस।

‘अच्छा दस बही। पर साब माना। नहीं तो बाबूजी मुझे या तुम्हें माफ मही करये।

ये मातों बड़ी बूबा बरतक बा। अतः मुझे धामा हुई कि काफी बसैरह का नये मेहमानों के लिए तुल्य घाबर कर डू घौर में बीरबर को नीमिमा के साब रहने देने के लिए घाबर के बहाने फिर कमरे से बाहर धा गया। और नीमिमा के अतः की ठासीर के बारे में सोचता रह गया।

दस

मैं नहीं जानता पीछे क्या हुआ। मुझे बाहर पांच-साठ मिनट ही सचे होंगे। पर बीरेद्वर एकदम बहला दीख रहा था। समझा था कि वह सर्वथा नीतिमा के अधीन हो गया है।

मेरे घाने पर नीतिमा ने कहा, 'आमो बेटा तुम्हीं जाकर कुंवर को स घामो। जैसे वह घाने में घनमने हो सचते हैं।'

बीरेद्वर चुपचाप बला गया और मैंने नीतिमा से पूछा "यह तुमने क्या किया नीता ?

"कुंवर को चक्र घाना चाहिए। वह उमटे तुम्हें तकसीक देगा अपने यहां पहुंचने के लिए ? और—वह उनारा क्यों उनके साथ बनी जाती है ?

मैंने उसके रोय पर घ्यान नहीं दिया कहा 'बीरेद्वर के बारे में तुम क्या सोचती हो ?

"घाने उमसे बटिमार्द नहीं होगी। मेबिन कुंवर ने उमक मन में सने वंदा कर दिव है और वह पांच-साठ मो वाम करने, आमो से ऊपर घाने को घबिवापी बना घनुभव करना चाहता है। यह सता का मोह, तुम पुरणों से छू नहीं सकता।

"तुमने ऊपर से ससे मोझा नहीं ? क्योंकि यह मन का भ्रम है। जैसे भी दो रिम की आन्दमी है। सोचनिरय तेजी से घा रहा है और घर्ष घ्यराबा में कोई घत्तापिचार का भाव रहने वाला नहीं है। घबिचार

रहेया तो राज्य में लेकिन धीरे-धीरे वह भी बाधित बनता जाता जायेगा।'

नीमा ने हंसकर कहा "अधिकार से अधिकार रख कर ही तो तुमने धीरे-धीरे उसकी नासना धीरे-धीरे में मर दी है। मुझे चाहते ही कि मैं उसे बरू ! पर का मालिक उसे बना ही करके सब इसके हाथ से ही धीरे-धीरे उसकी शारी हो जाय। ही मैं समझती हूँ यह सचटपन उसका दूर हो सकता है।

"वह ही मैं सोचता था। पर करेगा वह क्या?"

"करने को भी बहुत कुछ हो सकता है। तुम्हारे हाथ जब बिम्बे शारियों से धरे होंगे तो तुम्हारे कामों की देखभाल ही अपने धाप में एक बड़ा काम होगा। तुमने उसे उससे दूर रखा धीरे यह पसंदी थी।

"मैं समझा नहीं, नीमा तुम क्या कह रही हो।"

"जो समझकर कह रही हूँ। यहाँ धारण की तरफ धीरे चला नहीं हुआ करता, जैसे कभी-कभी तुम्हें चाहते हो। असल-विल-मुलकर होता है। इसी में से बिलगी धारण की सिद्धि हो बड़ी वास्तव है। नहीं तो महत्वाकांक्षा है। उसमें ही धारण की प्रकृति बनता है धीरे अपने धीरे कुछों के लिए समझाएँ पैदा करता है। धीरे-धीरे को तुमने स्वतन्त्र धीरे स्वयं समझ, जबकि वह तुम्हारा धीरे पर का धरा था। तुम समझते बने कि स्वतन्त्रता है रहे हो वह समझता गया कि वह पराया विना जा रहा है। सार्वजनिक कामों की जिम्मेदारी लेकर अपने बढ़ते जाते हुए मानव सम्पत्तियों की व्यवस्था के काम को तुम क्यों नहीं निष्ठा के साथ धीरे-धीरे पर छोड़ देते हो? उसका यह शोष क्यों बनने देते हो कि वह तुम्हारा पुत्र है। प्राइवेट सेक्टर तुम्हारा कोई वैयक्तिक ही क्यों हो सकता है धीरे-धीरे क्यों नहीं हो सकता?"

"लेकिन जब तो प्राइवेट सेक्टर—

"यही मैं कह रही थी कि तुम जहाँ तक बड़े हो वहाँ धारण अपने को पटाने की नहीं सोच सकते। मिनिस्टर कोई क्यों बनता है? सिर्फ

इसलिए कि वह तार्किक स्थिति घोर-दामित्य का निर्वाह कर सकता है घोर-बसकी-घपने-बर्तन का विरहाय-प्राप्त होता है । मोर्छों की छाया घपेया घपने प्रति इस तरह उभार कर फिर वहीं से हटने की सोचना एक कायरता है । लेकिन वह तुम्हारी बात हो सकती थी । जब तो बीरेबर की बात है । मुझे बीरेबर का हृत्न इसी में दिखाई देता है कि तुम घाती हुई जिम्मेदारियों से बचो नहीं । जिसकी तुम मीति-निष्ठ होना कहते हो, उस ज़िम्मेदार से पर की जिम्मेदारियों को सम्भालो घोर निबाहो । इस काम में बीरेबर न तुम्हारा सहामक ही हो सकता है बल्कि चाहे तो तुम्हारे ऊपर घपना प्रहरी भी सिद्ध हो सकता है । गहरी स्याम बुद्धि समझें है घोर अक्षय्य तुममें महत्वाकांक्षा रही होगी कि जिस कारण पत्र होकर वह तुम्हारा आलोचक बना है । उमी में लौटकर वह घपनी निज की महत्वाकांक्षा में कृबर की तरफ विधा है । ठाकर के पाम वह रहा घोर इसलिए कि तुम्हारा आदर्शवाद भीतर-भीतर उसे घपना भी मगता था । जबानों को सबसे अधिक आश्चर्य ज्ञेया आदर्श का होता है । समय पर उनमें से उनके लिए विमर्श न लिया जा सके तो जबान भीग घपने बहों को देकर फिर घपनी महत्वाकांक्षा में वह बनने हैं । देना नहीं क्या तुमने बीरेबर की भावनाओं को ? वह तुम्हारे आदर्शवाद को योग्यता मानता है । घोर भीतर से तुम्हें महत्वाकांक्षी मानता है । वह सखे हो कि यह सब मानने का घबहर तुमने ही उमे नहीं दिया ? उसकी स्याम-बुद्धि को घोर घामन भावना को हमने टैम कपती है । इसलिए घमर तुम उसकी स्याम-बुद्धि को बन छोड़े आलोचक के रूप में उसके ही हाथों में घनि घपने को रग छोड़े तो देखो कि उसकी घानी बना फिर स्वयं उसके ऊपर भी घाने मगती है हमरे की साहना के लिए ही नहीं गनी । घात्र वह घमर भर का आलोचक है । ऐसा कुछ होना चाहिए कि वह घपना आलोचक बनने मग जाये । तब उमर की घमर घोर महानुष्टा देने का उमे घबहर होगा । घानी तो हम सब शेष बन-ही-मन उम पर इया करते हैं, उमका निहार करमने हैं । घामकर

तुम कभी-कभी घायर बरतते हो कि उससे डर ही रहे हो। मैं कहेगी कि घामे बढ़कर घपर राजकीय जिम्मेदारी कुछ घाटी हो तो उसे छो घीर बीरेबबर को घपने बपर की देख-रेख सोंब रो। बुनिया की परबाह न करते। तुम सोघतिरम की बाठ करते थे। उसी मे नेपोटिरम बीसा सम्य बिवा है। परिवार के लोगों को साप रखने घीर उन्हें घपने काम-बाम में हाब बंटाने देने में नेपोटिरम नहीं है बल्कि वह सिघा-बीका है। सोघतिरम सक्का सम्य नहीं है वह इकिबिगतिरम का सिर्फ बबाब है। एक बाब बूसप बिबाह। लेकिन बाक-बिबाह सब भूठ है। घीर घसती यह है कि घपने सब सम्यकों में हमें प्रेम घीर स्नेह को काम करते रखने देना चाहिए। 'राज' ने तुम्हें उकता दिया है इसलिये केवल 'नीति' की बाठें तुम सोघने बप जाठे हो। पर उकताह भूठी है घीर केवल नीति कुछ नहीं हो सकती। मुठते हो? बीरेबबर बहुत सीका घीर होलहाय है। तुम बाहो तो घपने बहार से उसे कुबर की शरत में फेंक सकती हो। लेकिन कुबर का प्रभाव उकका भमा न करेबा। कुबर की तरफ वह बिब रहा है लेकिन अब भी उसके मन में संघब है घीर कुबर के लिए बडा तो बिलकुल नहीं है। तुम्हारे बिबड है, लेकिन तुम्हारे लिये अबमें बडा भी है, प्रम भी है।

सासा सेरबर बा। लेकिन ठिर में हाप बिये में मुठता रहा बा। बपह-बगह उसकी बाठें मुझे सू बाठी घीर भेड़ बाठी बीं घीर में नीसिमा को देखता रह बाठा बा। बया बीरेबबर के लिये उसने यही समाबाण सोबा है। जाने क्यों मेरे मन में निरचय बा कि कुबर से उकका बला न होबा लेकिन नीसिमा का मुग्घब तो मानो मेरी ही बड़ों को काट देता बा।

नीसा कहते-कहते बीसे एकाएक घपेला में बूप रह गई बी। मानो उसे स्वयं घमुबब हो घाया हो कि वह घादे जा रही है। लेकिन उसकी घपेला को देखकर भी मुझमें से कोई उत्तर नहीं घाया घीर मैं घपने में ही सीबता हुमा सा रह गया। मुझे इच कन में देखकर नीसा घनमबस

में हुई। बोली—“मैं जाने क्या-क्या कहती गई। क्यात न करना।

मैंने निगाह ऊपर करके नीमिमा को देखा। वह मेरे निबट कमी खबब। मूय्य हो चुकी है। इसभिय उसका मुक्त पर अधिकार परिपूर्ण हो सकता है। मैंने बहा 'नीमा। तुमने एकदम ठीक कहा है। सेविन—।'

तभी फोन की घटी बजी। नीमिमा न फोन उठाया तो मेरे बारे में पूछा गया और कहा गया कि फोन उन्हें ही से बीबिये। पर से राजधी ने कहा "ठाकुर छाहब ने अभी बताया है कि एक बकरी बात है फोन पर नहीं कह सकते और घाब ही घाम का वह पहुंच रहा है। मैंने बहुत पूछना चाहा तो इतना ही कहा कि कुंवर की बात है, खुद घाबर बतायेंगे।

मैंने कहा 'राजी तुम्हें क्या लगता है? क्या हो सकता है?'

"ठाकुर की घाबाब बबरई-सी थी। कुछ गम्भीर बात मामूम होती है। कुंवर तुम्हें मिसे ?

"बीरेदबर मिला था। कुंवर अभी घाते होंगे। नीमा ने सबको यहीं बुला लिया है। तमार भी कमरे में उनक साथ होने से भा रही है।

"नीमा की देना फोन।

मैंने फोन नीमा को दे दिया। उनकी बातबीत से ऐसा मामूम हुआ कि बीरेदबर को लेकर वे दोनों पहले से थी जैसे कुछ मतबग कर चुकी है। मेरे मुनन में जो घावा बघड़े-भीधिया ने राजधी को घाबगतब दिया कि बीरेदबर क मित् बिन्दा की बात नहीं है।

नीमा ने फोन फिर मुझे थमा दिया। राजधी बट रही थी "हो एक बात मैं बहना भून गईं था। तुम्हारे जाने क चौड़ी देर बाद जानु प्रतार ने घाब बिपा था। बट बकरी तौर पर तुमसे मिलना चाहने य। मैंने टाग दिया कि तुम बर पर हो नहीं। पुछत रहे वहाँ है बग का नम्बर दे दीजिये। मैंने मुनाबिब नहीं बमया हाग्ल का नम्बर रना। बकरी सपको तो सीधे तुम बही न बात कर लेना।

मीने फोन रख दिया और अपने बाबूद जैसे एक महरे सोच में पड़ गया ।

नीलिमा मुझे बेचती रही थी । उसने मुझसे कुछ नहीं पूछा । मैं समवेदन ही उसका मुझे प्राप्त होता गया और मानस हुआ कि वह है जो मुझसे यह या वह कराना नहीं चाहेगी । जो कहेगा उसे ही सही सही समझ सकेगी । मैं मन-ही-मन नीलिमा का और उसका इस मीन का इतना हुआ कि जो अभी मुझ पर होकर जाने क्या-क्या सम्बोधन मुझे देती चली गई थी ।

इतने में काशी का सामान धा मया और बोड़ी केर बाबू बीरेस्वर भी तमाच और कुंवर को साथ लिये आ पहुँचा । बीरेस्वर के पीछे तमाच बेचक ही आई और कुंवर सबसे पीछे और धीमे-धीमे आये । उन्होंने कहा "मैंने एक टुक कात बुक किया हुआ है । आपकी आज्ञा थी और बीरेस्वर ने कहा तो हाजिर हो गया हूँ । लेकिन समा कीजियेगा अधिक नहीं खर सकेगा ।"

नीला ने कहा, "अभी रिसेप्शन से कह दो टुक मिसने पर इसी कमरे में दे देंगे ।

"थी नहीं । इस बार तो माफ ही करना होगा । जैसे जब कहिये आ जाऊँगा । बाबूजी, एक मिनिट की तकलीफ दे सकता हूँ ?

काशी बयैरहूँ तैयार हो निकली थी और तमाच नीलिमा की इसमें नजर कर रही थी । मैंने कहा "पहले काशी तो सो ।

"थी एक मिनिट ।

कुंवर मुझे बराबर के कमरे में से गये और बोले "आपके क्या कोई दुरमन लीप है ?"

"मेरे दुरमन ।

"डरूँ हूँ । घरबार में यह खबर जरूर उगकी ही करतूत थी । अब वे मुझे परेशान कर रहे हैं ।"

"क्यों क्या बात है ?"

“बड़े बिजनेस में घसलुष्ण लोग हुआ ही करते हैं। लेकिन जरूर पीछे उनको कुछ लोगों की याद है। मुना है कोई इन्कामरी शुरू होने वाली है। मैं घाय लोगों को तकनीक देना नहीं चाहता था। लेकिन घबल्लि को बिन्ता हो गई है और वो खुद घायसे इस पारे में मिलने वाली थी। मैंने रोऊ दिया। अब टुक पर जैसा घाय कहेंगे, कहूंगा।

“डिस्टस मामूम करो। लेकिन मैं क्या कर सकता ?

“ऐसी कोई बात नहीं है बिन्ता की। अब इधर-उपर कुछ कहना होगा तो वो घाय सम्मान ही लेंगे। मुझे लगता है घबल्लि दिना घाय पानेवी नहीं। क्या घाय जगसे बात करेंगे ?

“तुम हो ही उसे घाने की क्या जरूरत है ? लेकिन मुझे अब क्यादा घाया नहीं रखनी चाहिए। घायो बसें। कौड़ी ठगड़ी हो रही होगी।”

लेकिन कबुर बसे नहीं। पानी समाधान के साथ बोले—

“बीरेटर के बारे में घाय फिक्र करना छोड़ दें। मैंने सरसरी बात कर ली है। पहले मोबता या चार-छह महीने वह मेरे साथ ही रह लेंगे। लेकिन अब भी घाय पर जा सकते हैं। कुर्सी मुझे काम सिखा देती है। एकएक जनस मैनेजर तो नहीं लेकिन उनके नीचे रखते देता हूँ। पेड़ की बात होनी रहेगी। अभी फरनिटुर मराल क घसावा घाट सी के करीब तो विम ही जायगा।

✓ “तुम्हारे रहने मुझे बीरेटर की क्या बिन्ता है। घायो—

कबुर जाते पाहन हों मैं उम बात-बीत में घबल्लि रहने की तैयार नहीं था। और कबसे मैं घायर मैंने देगा बीरेटर प्रमेना है तमार एक सोपा पर होकर भीजिमा मे बाज विज जा रही है।

कबुर मैं घाये बड़कर मेरे लिए भी का तैयार विज। लेकिन मैं बैठा नहीं का मेकर गिरबी के घाय घसा गया और बाहर देखने लगा। बहां दूर एक घवमी सरीर में कुछ बरती-बी दिगती थी जिसमें से महानों और वेदों को घनय नहीं किया जा सकता था। निय बीच में

अध्यात्म या धीर ऊपर आसमान या वहाँ तिगाह टिकने को कोई विष्णु न मिला। मैं उस धून्य में देखता रहा धीर तथा कि कहीं आचार नहीं है। अनायास हाथ उठाकर काँधी की बूट से सेता धीर फिर उठी सूने में देखने लम आता। मुझे मान था कि पीछे कमरा व्यस्त है धीर वहाँ कुछ-न-कुछ हो रहा है। लेकिन किसी ने मुझसे कुछ नहीं कहा। यहाँ तक कि तमाप ने धी मेरी उस एकान्तता को भंग नहीं किया।

मैं जैसे जाया तब जब कृबर ने कहा "अच्छा बाबूजी मुझे इनामत दीजिये।"

मैंने कहा "तो अच्छा—बामोदे?"

"जी।—तो अक्सर को क्या कहना होगा? वह बड़ी चिन्तित मामूम होती है।"

"कह देना वीसा ठीक समझे।"

"माई तो वह धाम तक था जायेगी। अच्छा प्रणाम।"

कृबर जैसे मये धीर मैंने फिर चिड़की से बाहर देखा। वहाँ रिक्त था धीर कोई निर्बोध न था। मैं अन्त में पीछे मुड़ा धीर तमाप ने प्लेठ में कुछ सामान रखकर मेरी तरफ बढ़ाया। कहा "भीजिये धीर हम लोगों का अस्तित्व एकदम भूल न जाइये। किस चीज में पड़े हैं आप? मैंने अभी आपसे जिद नहीं की। लेकिन बताइये किस चीज में मैं पिचवर्ष का समय निकालियेगा। एकजीबीधन साथ रीज बनेगी। इतबार / से इतबार तक।"

"माई तुम लोगों की एक्स्ट्रैक्ट वेटिंग तो हमसे ऊपर ही रह जाती है। देखो कमी आइया। तुम्हें मामूम है, अक्सर या रही है?"

"जी हाँ। एकिल धाम को पहुँच रही है। कृबर साहब ने बताया तो होगा।"

धीमे से

कहना हो वा। बर्न

“तो मामूम है कैसे घा रही है ? कंबर कुछ खास बता नहीं सके ।

“कंबर साहब का ही कुछ काम होगा । मुझे नहीं मामूम । क्यों, पर फोन नहीं आया ?

“आया होगा तो मेरे पीछे । मैंने कहा घोर हाप में प्लेट लेकर बीरेस्वर के पास घा गया । नीता उसके बराबर बैठी हुई थी । मेरे बाते ही नीता ने कहा, “घाप बूपा कहते हैं । बीरेस्वर तो घाप सोनों के घाप रहने में खुश है । लकिन टानी नहीं उसे काम चाहिये ।

क्यों बीरेस्वर घमी कंबर साहब से पक्का तो नहीं किया ? बात सब है तुम्हायी घांटी नीतिमा की कि तुम रहो तो मुझे बड़ा सहारा हो जायमा ।

“मैंने इ कार तो नहीं किया । घोर कमी मा की तकलीफ भी देखता हूँ । पर घापकी घच्छी-घच्छी बातों के बिस्तन से मेरे हाप तो नहीं भर जान हैं । कुछ घाप हाप म काम सीजिये घोर सहायता मैं मैं प्यत दिगार्द न बू ता कहियेमा । मुझे कंबर के पास क्या सुधी है । बहिन का बड़ा भार होने ने बन्कि बह मेरे लिए घर्म की बाठ है । पर घापने मुमने कमी काम की बात की ही नहीं ।

तो पक्का रहा बीरेस्वर । नीतिमा ने कहा “यह भी काम सम्भालेंगे घोर तुम पूरी मदद करोय । बिना महारे यह गुद घपूरे से रहने है घोर तब मन न सय घोर मुनिठ निबुलि की बाठ मोर्से तो सोर्षेय ही । पर बीरेस्वर, घन हातत में भी तो तुम्हें पर स सटना नहीं चाहिये पा ।

मैंन बुटा ‘बीरेस्वर, संजति की क्या खबर है ?

“मुझे नहीं मामूम ।

बह घाब घा रही है, यह तुम्हें नहीं मामूम ?

मच बना बह घा रही है ?

लकिन तबाघ को मामूम है ।

व्यवधान का धीर ऊपर भासमान का वहाँ निगाह टिकने को कोई विन्तु न भिन्ना । मैं उस शून्य में बैठता रहा धीर सगा कि कहीं आचार नहीं है । अनायास हाथ बढाकर कौंसी की घूंट से सेता धीर फिर उसी सूने में बैठने लय जाता । मुझे धान का कि पीछे कमरा व्यस्त है धीर वहाँ कुछ-न-कुछ हो रहा है । लेकिन किसी ने मुझसे कुछ नहीं कहा । मर्दानक कि उमाच ने भी मेरी उस एकान्तता को भंग नहीं किया ।

मैं जैसे बामा तब जब कुंवर ने कहा “अच्छा बाबूजी मुझे इजाजत दीजिये ।”

मैंने कहा “तो अच्छा—बाधोने ?

“जी ।—तो अंजलि को क्या कहना होपा ? वह बड़ी चिन्तित मालूम होती है ।”

“कह देना जैसा ठीक समझे ।”

“धार्ष्ट तो वह शाम तक धा जायेगी । अच्छा प्रणाम ।

कुंवर जैसे जैसे धीर मैंने फिर खिड़की से बाहर देखा । वहाँ रिक्त का धीर कोई निर्दोष न था । मैं अन्त में पीछे मुड़ा धीर उमाच ने ज्येष्ठ में कुछ सामान रखकर मेरी तरफ बढ़ाया । कहा ‘लौजिये धीर हम लोगों का अस्तित्व एकदम शून्य न जाइये । किस सोच में पड़े है आप ? मैंने धमी आपसे जिर नहीं की । लेकिन बताइये किस रोज मेरी दिवसवर्ज का समय निकालियेना । एकजीबीसग साठ रोज बसेगी । इतनाच से इतनाच तक ।

“मई तुम लोगों की एस्ट्रुक्ट पेटिम तो हमसे ऊपर ही रह जाती है । देखो कभी आठगा । तुम्हें मालूम है, अंजलि धा रही है ?”

“जी हाँ । एंजिम धाम को पहुच रही है । कुंवर साहब ने बताया तो होगा ।”

मैंने धीमे से कहा “हाँ धमी बताया तो था । बच्चे भी धा रहे हैं ?”

“जी नहीं । मैं समझती हूँ धकेली ही धायगी ।”

"तो मामूम है कैसे या रही है ? कुंवर कुछ बात बता नहीं सके।

"कुंवर माहब का ही कुछ काम होगा। मुझे नहीं मामूम। क्यों, वर कोन नहीं घाया ?"

"घाया होगा, तो मेरे पीछे। मैंने कहा और हाथ में प्लेट लेकर बीरेस्वर के पास या गया। नीला उसके बगलबर बैठी हुई थी। मेरे बाते ही नीला न कहा 'घाय बूबा कहते हैं। बीरेस्वर तो घाय लोगों के साथ रहने में लुग है। लेकिन ठानी नहीं उसे काम चाहिये।

"क्यों बीरेस्वर, अभी कुंवर साहब से पक्का तो नहीं किया ? बात सब है तुम्हारी घांती नीलिमा की कि तुम रहो तो मुझे बड़ा सहाय हो जायगा।

"मैंने व कार तो नहीं किया। और कभी मां की तकसीफ भी देवता हूँ। पर घायकी घबड़ी-घबड़ी बातों के बिस्तन से मेरे हाथ तो नहीं भर जाते हैं। कुछ घाय हाथ में काम सीत्रिये और सहायता में मैं पणत दिखाई न वुं तो कहियेया। मुझे कुंवर क पास क्या सुधी है। बहिन का बड़ा भाई होने से बम्कि वह मेरे निष् घर्म की बात है। पर घायने मुमम कर्मी काम की बात की ही नहीं।

"तो पक्का रहा बीरेस्वर। नीलिमा ने कहा "यह भी काम सम्भालिये और तुम पूरी मरु करोये। बिना महारे यह गुद-घपूरे से रहते हैं और सब मन न लये और मुक्ति निवृत्ति की बात सोचें तो सोचें ही। पर बीरेस्वर, उम हागत में भी तो तुम्हें पर से रुटना नहीं चाहिये" या।

मैंने पूछा "बीरेस्वर, संजति की क्या खबर है ?

"मुझे नहीं मामूम।

"वह घाय या रही है, वह तुम्हें नहीं मामूम ?

कब क्या वह या रही है ?

मरिन तबारा को मामूम है।

यह कैसी बात है। आप कह रहे हैं कि संजति था रही है और तमारा नो मामूम है। पर मुझ कुछ पता नहीं है। कहने के साथ बीरेस्वर को नोक हो आया और उसने तमारा को जो जाकर मेरी जगह बाहर देखने लयी थी और वहीं खड़ी रह गई थी और से नाम लेकर पुकारा। पूछा "बाबूजी कहते हैं, अजसी घाम को आ रही है और तुम्हें मानूम था? मुझ क्यों नहीं बताया गया?"

कंवर साहब ने नहीं बताया?

नहीं बताया तो तुम कह सकती थी। यह ठीक नहीं है तमारा और कंवर से कह देना मैं बिलीना नहीं बनना चाहता।

तमारा मे कुरीं पास को लीली। ऐसा लगा कि बायें-बायें बीरेस्वर के हम लोय न हीये तो वह बीरेस्वर का हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर अच्छी तरह समझ सकती थी। समझ देती कि इसमें उन दोनों में से किसी का दोष नहीं है। अभी सामने बैठकर उसने कहा "बियर बीरेस्वर, मुझे क्या पता तुम्हें मानूम है और कंवर साहब को सया होगा मैंने बता दिया है। अलोने न एयर पीट अजसि को लेने हम लोनों के साथ?"

"बाबूजी आप बायेंने?"

"तुम्हारी मां को साथ हीजा फोन आया हो। तब अजर बायेंने।"

तो मैं तमारा बाबूजी के साथ आ जाऊंमा।

बाबूजी को कष्ट करने की क्या जरूरत है। और वह ठहर तो रही नहीं है उनके साथ। बाबूजी को बुरा लगेमा अजर सेने मये और संजति जर न ठहर सकी। अच्छा बाबूजी हम असे। नमस्कार भीमिमा थी। आपको प्यास रहेगा न इस काम का। भूलिपुगा नहीं। आघो बीरेस्वर असें।

"तुम बाघी तमारा मैं अर ठहर्स्या। न आया तो फिर न करना। समझ सेना कि जर असा गया हूं।

"जर बाघोगे? संजति तो तुम्हारे साठिर यहाँ ठहर रही है।

घापो बसों, एंबिस को लेकर यहाँ आये घोर उसके बाद बाहो तो
पलसे पृथकर बर बसे घाता । क्यों ठीक है न बाबूजी ?

हूँ बेटा हो घाता एमर पीटें घोर बहिन को लते घाता । मेघ
घभी निदधय महीं है । छाड़े सात बज आ जाठा है प्लेन । कह देना
छाने पर तुम दोनों का इन्तजार रहेगा । कुंवर को काम हो तो अकेले
छसे ही लेंते घाता ।

“तो बसों बीरेदर । अच्छा बाबूजी । बीरिघो, मीलिमा देवी बार्ड
बार्ड ।”

बीरेदर ने कुछ नहीं कहा घोर हम दोनों को निर झुंटाकर बह
तमारा के माप बाहर बसा गया ।

मिने गहरी सांत सी । जैसे बामा वायव सिर से कुछ हटा । मीलिमा
पास बार्ड बिना बोले डपते मेरे हाप पर हाप रगा घोर घीरे-भीरे उसे
छहमापी रही । दोनों के पास एक-दूसरे से पूछने को बहुत कुछ था लेकिन
जैसे कुछ पूछने की आवश्यकता न थी । तमारा में क्या डमे बाद रखने
को कहा था ? कहा होगा कुछ । मुझे कबर में एकाम्त में क्या कहा था ?
बो भी रहा होगा कुछ । बाहर होगा हुआ सब कुछ अन्ध एक बबाब
या उभार छोड़ जाता है । बग बही फल रहता है । येप तो घाता घोर
बीत पाता है । बहु बाहरी पटनाओं से प्राप्त हुई प्राथमिक निगति
छहानुसूत्रि के तारों ग घपने घाल ही महरी सम्बन्धना में उपराम हो
धानी है वायव पूछने बताने की आवश्यकता नहीं रहती ।

ऐसे हक देर तक बैठ रहे । मीलिमा की हथमी मेर हाप को हीने
हीने छहमापी रही घोर मैं सोचता रहा कि मीलिमा कोई नहीं है मैं
उसका कोई नहीं हूँ । मजिन यह हाप का क्या जाने एक-दूसरे को रिठनी
सामबना रिठना आरवागल कर्तुषा रहा है ! बाहर का होगा जाता हुआ
छप्यात्मक या पन्नामक सब कुछ अन्ध में द्वैते घाल ही एक जाता
है मार का में छोड़ जाता है कुछ बहु जा सम्बन्धना को कुमाता घोर
रबय डबमे बुरता रहा है ।

मैंने घात में अपनी घोर से कहा "नीला कुंवर बन्दर में धा सकता है। कह रहा था इन्कवाररी जारी होने वाली है।

"होन दो। तुम क्यों निश्चित होते हो ?

अजसि मुनकर बबरा गई मालम होती हैं। लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ ?"

तुम कुछ नहीं कर सकत हो। जानते हुए भी फिर क्लिप्त क्यों होते हो। लेकिन राज अभी कह रही थी कि निम्ही मानुप्रताप का फौज थाया था। वह क्या बात थी ?

"वहीं पुराना सिससिमा होगा और क्या ?

'समझते हो तुम्हें बी० पी० से मिलना होगा ?

"हो सकता है उम्हेंनि मार किया हो।

"तुम मुझे बचन दे सकते हो।

"वह बचन ?—सही।"

"सहाय मेरा स्वार्थ नहीं है। तुम्हारा स्वार्थ नहीं है। क्या तुम एक बार निरान्त निस्वार्थ होकर नहीं सोच सकते ? सोचोगे तो—।

नीला इस बारे में मुझसे न कहो। बितने धक्क बाहर से घाते हैं सब मुझसे प्रतिरोध पैदा करते हैं। इससे नहीं चाहता कि एक भी धक्क कर्त्तव्य-धर्म के बारे में बाहर से मुझ तक आए। वही मुझे सहज नहीं रहने देता और प्रतिरोध बनाता है। देखो नीला कभी तुमने मुझे कुछ नहीं कहा है। जैसा हूँ स्वीकार किया है। यही बस है जो तुमसे मुझे मिला है। दूसरे तुम्हारे चाह सकते हैं मुझमें सद्योवन चाह सकते हैं, मुझे अपना देवता चाह सकते हैं। पर प्रेम चाहता नहीं है बस मान लेता है। मुझे खुद नहीं मामूम। मेरे बारे में जो होता उस तुम क्या बीसे ही नहीं स्वीकार कर सकती। नीसिमा तुम हो कि वहाँ मैं अपने पर कोई प्रावरस नहीं रख सकता न प्रावरण ले सकता हूँ। प्रावरण का न सिद्धान्त का, न धर्म का। इसलिए मेरी निपट निबता में से आने दो जो आये। अपना बुरा स्वार्थ-निस्वार्थ जो भी हो वही ठीक होगा। वही मुझे और तुम्हें

मंजूर होना चाहिए। क्यू त्व जिसमें न मेरा हो, न तुम्हारा ही, बस एक ऐसी अनिवार्यता हो जिसमें मैं-तुम कुछ रहें ही नहीं।

गीता तुमती रही। उसने फिर मेरे हाथ को अपनी हुयेली में लिया और बख्कर बीमे से भूम लिया। कहा "मैं तुम्हारा प्रसन्न-कण्ठ बनना चाहती थी। प्रथम-समझती हूँ वह झूठ था। प्रेम का भी यह बंध नहीं है। उसके-पश्चात्त में बस यह है जो एक है सब है, और इसीलिए परम है और माय्य है।"

घाये मुझे कुछ नहीं कहला है। मुक्तिबोध की कहानी यहाँ ही खत्म हो जाती तो अच्छा था। लेकिन प्रथम-का-अंजाम-खत्म होने के लिए नहीं होता है। परंपरा विस्तृत होती-जसती ही जाती है कि सब अंत में मुक्ति में पर्यवसान पाये। अर्थात् मुक्ति और सृष्टि परस्पर समन्वित पद है। अर्थात् सृष्टि में से मुक्ति है। चाहे तो देखें कि सृष्टि सदा बन्धनों की ही सृष्टि हुआ करती है।

दोनों एक प्लेन से ही घाये होंगे ठाकुर और अंजलि। ठाकुर सीपे मेरे यहाँ घाये और बोले "सहाय तुम्हें कुंवर के साथ सम्मिलित करना है। वह अंत में है। तुम्हारा नाम मिट्टी में मिल जायेगा अथवा अथ भी बूट का अंश रक्षोये।"

मेरे मन पर अंजलि का कुछ असर नहीं हुआ। मैंने कहा "कुंवर मेरा अंश है। अंजलि मेरी बेटी है। सम्बन्ध तोड़ कैसे दिये जा सकते हैं।"

"लेकिन तुम पर के नहीं हो हैच के हो सहाय। और कुंवर की करतूतें सारी जानूँ होती हैं।"

"होगी और ठाकुर में तुम्हारा आचार मानता है। लेकिन सबों की अस्मिता अंत और अंत में ही तो होती है।"

"अन्याय ही शुरू हो गई है सहाय और कुंवर गिरानार तक हो सकते हैं। देखा ऐसा न हो कि तुम्हारे अंत गिरानारी हो।"

"दोनी तो होने की ठाकुर।"

“सहाय, तुम्हें यह क्या हो क्या है ? मामी जी इन्हें समझाओ न।”

“ठाकुर, यह ठीक कहते हैं। बेटी और जमाई को छोड़ा नहीं जा सकता है।”

‘छोड़ने की नहीं कह रहा हूँ। मामी जी सिर्फ यह पाँच-सात दिन बसा जाइये।’

‘धन्धी बात है।’ मैंने कहा ‘तुम सब धायम करो।’

इससे पहले भानुप्रताप से भी बात करने का धक्का मचा सका। प्येन मिलाने पर भानुप्रताप ने कहा “धिन भर बड़ी कोपिछ करता रहा हूँ। तुम्हारे होटल तक मटका। मै-बेकर सब मयस्तर हुए हो। बी० पी० पाव कर रहे थे प्रमॉन्ट। किसी बस्त भी नहीं बना जा सकता है। यही गाड़ी लेकर घाऊँ ?”

मैंने कहा “गुना है, मेरे जमाई के खिलाफ इन्कवायरी शुरू होने वाली है। गिरफ्तारी तक का खतरा है। क्या मुतासिब यह न होया कि बातचीत इस दूधन के साऊ होने तक टाल रखी जाये ?”

“धरे भई, तो तुम्हीं यह सब सगठे कह-सुन न सेना।”

‘धन्धी बात है। फौरन धा जाओ। धयी जमा जमूंगा।’

भानुप्रताप बाहर ही सूट रहे धीर बी० पी० ने बही सवाल सामने रखा। मैंने अपने पहले वाला झुकाव बता दिया। तिष्ठ पर अपने कूबर साहब के बठरे की बात भी बता दी। उसके बाद धनुमयपूर्वक माफी माँगी।

बी० पी० हंसकर रहे गये। बताया कि उन्हें पहले ही भानुम पा। इसीलिए कास तीर से मुझे इस बस्त बुलाया था। यह परीक्षा ही बी और सब कहीं पुंबाइस नहीं है, मुझे मानना पड़ेगा।

मैंने बहुतेरा कहा लेकिन बी० पी० ने बताया कि धयर मैं यह नहीं चाहता हूँ कि बी० पी० कुछ इस्तीफा दें तो मुझे सब स्वीकार ही कर सेना है। उन्होंने यह भी कहा कि मुझे जानना चाहिए कि ठीक

बाप के दिन वह प्रसिद्धा का-बहो, बल्कि दांटों का घासन है। धीर स्वयं नहीं उरस्य की ही बुनीदी है, कि जिसकी स्वीकारता के उत्तर से मैं बच नहीं सकता हूँ।

छात्रे भाठ बने तक मैं धर पर सीट कर घा गया। वहाँ धंजलि नीमुर थी। मेरे पहुंचते ही वह मेरे मले से लग कर रोती हुई पुकार लगी 'धो मेरे बाबूजी !'

सेकिन मैं उसे फिर या पीठ पर बपपया भी नहीं सका। मेरा येहूच मम्मिर था। धीर मैं मानता था कि मैं धंजलि को छट्यों तक मैं कोई आस्वासन नहीं दे सकता हूँ।

राजश्री बिस्मय से मुम्ह देखती रही। बोली "ऐसे भी कठोर क्यों हुए जा रहे हो। धाभिर तो बेटी है। रो रही है। प्यार की एक बपकी नहीं दे सकते अगर भारत का एक छम्ह तुम्हारे पास नहीं है।"

पर सचमुच मेरे पास न प्यार था, न भारत का एक छम्ह था। मैंने मले में पड़ी धंजलि की बाहों को अपने से घलग किया धीर बहा "धंजलि, तुम मेरी बेटा हो। सेकिन कंवर को बगठ पर गमत चले पर जाने से रोऊ नहीं सकती हो। बल्कि घायब बड़ाबा देती रही हो। पैसा पाराम जो देता है, क्यों ? धीर धब बाप के पास पाती हा। सक्क सो बार मर गया। वह कुछ नहीं कर सकता है।

धंजलि पीगी "बाबूजी मेरा दोष नहीं है। दोष उनका भी नहीं है। कुरमन धापने हैं जो हमें प्यसना चाहते हैं, धीर इस तरह बदनानी धारपी चाहते हैं।

"बको मउ धंजलि।" मैंने जोप की बर्कपता में बहा "कंवर मे जो पट्टी बड़ाई, पड़ गई। ताम् नहीं पाती मुम्हें ? मुनो मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ। धीर भुगतना होना पम् उयवा जो मुम सोमों मे किया है।"

"बाबूजी बात मंगीन हो गई है। बिरपजापी तक हो सकती है।"

"मैं कुछ नहीं जानता। धीर मैंने ताबीर से बहा "पती इबर

घायो ।”

पंजलि वहाँ धकेली जाड़ी रह गई । जैसे जान निकल गई हो । घौर में म्याय-सा मानता हुआ राज के साथ उस सपत्निकि से बाहर हो गया ।

कमरे में घाने पर राजभी बोली यह सब क्या हो गया है तुम्हें ?
ऐसे तो तुम कभी न बे ।

“मैं मिमिस्टर हो गया हू ।

अचरब में राज बोली “सच ?

उसका मुँह खुला रह गया और उसने मुझे देखा ।

मेरे माँके पर ठेकर से और उसका चेहरा अविश्वास के साथ खरी-
खरी- बिस्वास में बिस्तदा था रहा था ।

फिर वह चुपचाप अपनी बेटी के पास भाग गई ।

घौर में कमरे में धकेला रह गया कि अपने ठेकरों को धाप ही सम्भारूं और जो मामू हो उसे धाप ही लेऊँ ।

